समर्पण

प्रेम श्रद्धा विनय

श्वर-भक्ति के सुरीले भजन

ललित साहनी

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महान पुरोधा महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद की कसौटी पर सनातन धर्म की रूढ़िवादिता की कटु आलोचना की। महर्षि का दृष्टिकोण मानव निर्मित साम्प्रदायक ग्रन्थों पर आधारित न हो कर, विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेदों पर आधारित था। हिन्दू नवोत्थान के सन्दर्भ में राममोहन राय आदि ने आन्दोलन प्रारम्भ तो किया परन्तु धर्म भ्रष्ट हुए हिन्दू को अपने धर्म में वापस लाने के लिए महर्षि ने भरसक प्रयास प्रारम्भ कर दिये। धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फैंकने के लिये, वेदों के प्रकांड, धुरन्धर विद्वान महर्षि दयानन्द ने सन 1875 में मुम्बई में पहली आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने हिन्दू जागरण के अग्रणी होते हुए आत्महीन जर्जर हिन्दुत्व भावना को राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिये जगाया। महर्षि द्वारा रचित **'सत्यार्थ प्रकाश'** तथा **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** में वैदिक राष्ट्रवाद, स्वदेश प्रेम, स्वधर्म, शुद्धि आन्दोलन, हिन्दी तथा संस्कृत के प्रचार प्रसार जैसे राजनीतिक विचारों की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। इनके समाज सुधार आन्दोलन का प्रभाव वीर सावरकर के हिन्दुत्व विचार धारा पर भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इस प्रकार उन्होंने समाज सुधार सम्बन्धी आन्दोलन द्वारा आधुनिक भारत का शिलान्यास किया।

रवीन्द्र कुमार मेहता, *अध्यक्ष*

सरस्वती साहित्य संस्थान

295-जाग्रती इन्क्लेव, दिल्ली-92

फोन 42427729

* समर्पण *
(प्रभु भक्ति के अनूठे गीत)

लेखक
ललित साहनी

प्रकाशक
ललित साहनी
फ्लैट नं. 402, पाम व्यू, सरोजिनी रोड,
सान्ताक्रूज (प.) मुम्बई

समर्पण (प्रभु भक्ति के अनूठे गीत)

लेखक : ललित साहनी

मूल्य : 60 रुपये

प्रकाशक : ललित साहनी
फ्लैट नं. 402, पाम व्यू, सरोजिनी रोड,
सान्ताक्रूज, (प.) मुम्बई-400054
दूरभाष : 6043548

संस्करण : प्रथम सन् 2010 ई.
सृष्टि संवत : 1,96,08,53,110
विक्रमी संवत : 2066
दयानन्दाब्द : 186

मुद्रक : मेहता रवीन्द्र आर्य अध्यक्ष सरस्वती साहित्य संस्थान, दिल्ली द्वारा,
क्विक ऑफसेट, दिल्ली से मुद्रित

* गाये जा गीत प्रभु के *

लेखक
ललित साहनी

प्रकाशक
ललित साहनी
फ्लैट नं. 402, पाम व्यू, सरोजिनी रोड,
सान्ताक्रूज (प.) मुम्बई

गाये जा गीत प्रभु के

लेखक : ललित साहनी

मूल्य : 60 रुपये

प्रकाशक : ललित साहनी
फ्लैट नं. 402, पाम व्यू, सरोजिनी रोड,
सान्ताक्रूज, (प.) मुम्बई-400054
दूरभाष : 6043548

संस्करण : प्रथम सन् 2010 ई.
सृष्टि संवत : 1,96,08,53,110
विक्रमी संवत : 2066
दयानन्दाब्द : 186

मुद्रक : मेहता रवीन्द्र आर्य अध्यक्ष सरस्वती साहित्य संस्थान, दिल्ली द्वारा, क्विक ऑफसेट, दिल्ली से मुद्रित

परिचय

श्री ललित साहनीजी का जन्म 16 मई 1942 को पंचवटी नासिक (महाराष्ट्र) श्री दिवानचन्द साहनी के आर्य परिवार में हुआ।

बचपन से ही वेद मन्त्रों की ध्वनि उनके कानों में पड़ती रही, जिससे इनके मूल संस्कार वैदिक बनते रहे। जैसे-जैसे उम्र बढ़ी उनकी रुचि संगीत की ओर बढ़ी। जहाँ कहीं बड़े-बड़े गुणी जन गायकों की महफिल या स्टेज कार्यक्रम होते, वे बड़े चाव और उत्साह से घन्टों बैठकर सुनते। कवि सम्मेलनों में भी उनका सदा चाव रहा। इन्होंने हर अवसर का भरपूर लाभ उठाया। उनके मित्र वर्ग भी संगीत में ही रुचि रखनेवाले थे, जिससे सुर, ताल, लयकारी, विभिन्न रागों का ज्ञान होता चला गया, शायद ईश्वर चाहते थे कि आगे चलकर यदि ज्ञान उनके गीतों और भजनों के काम आए।

और फिर वो समय आया जब सन् 1985 से कुछ ईश्वर भक्ति के गीत लिखने का मन बना और 20/25 भजन लिख दिए। 1 जनवरी, 1968 में मेरे साथ इनका विवाह हुआ। मुझे विवाह से पहले ही इन्होंने संगीत सीखने का उत्साह दिया और मैं सितार सीखने लगी, परन्तु गृहस्थाश्रम में व्यस्त हो जाने पर यह प्रायः छूट गया, किन्तु संगीत की ललक बाकी रह गई। मैंने अचानक देखा कि 1996 में ईश कृपा निर्झर बनकर बरसने लगी और जो मन में भाव आते, उनके हृदय पटल पर अंकित हो जाते, तबतक वे सौ भजन लिख चुके थे तत्पश्चात् उनका रुझान वेदमन्त्रों की तरफ बढ़ा। आर्य समाज से व्याख्यान सुनकर आते जो मन्त्रों पर आधारित होते घर आकर उन्हीं मन्त्रों पर भजन लिखते जाते। उनका रुझान संगीतकारों की ओर जो शास्त्रीय संगीत का उपयोग करते, उस ओर बढ़ता रहा। संगीतकार की ओर जो शास्त्रीय संगीत का उपयोग करते, उस ओर बढ़ता रहा। संगीतकार मदनमोहन,

अनिल विश्वास, एस.डी.बर्मन आदि अनेक संगीतकारों की धुनों पर इन्होंने अनेक ईश्वरभक्ति के भजन लिखे, किन्तु वैदिक मन्त्रों के लिए विशेषकर मराठी एवं दक्षिण भारतीय धुनों को ही चुना क्योंकि इसमें भक्ति संगीत का विशेष आनन्द था। अब उनकी यह मनोवृत्ति चल पड़ी है इसका अन्त कहाँ है ये ईश्वर ही जानता है किन्तु मैं इतना अवश्य जानती हूँ कि इनका अंतः करण इसी में विशेष आनन्द पाता है।

यही संस्कार सुपुत्री अदिति साहनी में भी इन्हीं के माध्यम से उसके अनेक पुरुषार्थ से प्रस्फुटित हुए। अब वो देश-विदेशों में, भजनों के विशेष कार्यक्रम करती रहती हैं। इसके तीन कैसेट **ओ३म् रस, भक्तिरस, अमृतरस** के नाम से सान्ताक्रुज आर्य समाज में उपलब्ध हैं। इनकी **'गाए जा गीत प्रभु के', 'अमृतवाणी', 'तू जग का आसरा'** एवं **'पल-पल जीवन जाए'** भजन पुस्तकें इनके रात दिन के अथक पुरुषार्थ का फल हैं। ईश्वर इन्हें आगे भी पूर्ण सफलता प्रदान करें, इसी आशा के साथ!

15 दिसम्बर, 2009 ई.

—सविता साहनी
(धर्मपत्नी)

[1]

तर्ज़ : *आएगा, आएगा आएगा आएगा आनेवाला*

मेरे हृदय में प्रभुजी तुमको समीप पाऊँ
माँगूँ क्या मैं तुमसे? तुमको तुम्हीं से पाऊँ
ऐसे में तेरी चाहत इस तरह आ रही है
चातक हो जैसे प्यासा निज प्यास मैं बुझाऊँ
सौ बार जन्म मिले तो, तेरे ही गीत गाऊँ॥

भजन

गाएजा गाएजा गाएजा ॥
गाएजा गीत प्रभु के, गाएजा, गाएजा गाएजा...
स्वर्णिम, प्रभात आया मन काहे सो रहा है
जीवन के इन क्षणों को बेकार खो रहा है
भटकेगा कोई कब तक बेआस बेसहारे
संदेश दे रहे हैं, रवि चन्द्र और सितारे गाएजा गाएजा...
खोया है तूने बचपन क्यों खो रह जवानी
सिमरन तू कर प्रभु का, दी जिसने जिन्दगानी
बहने दे अपनी नैया, प्रभु नाम के सहारे
संदेश दे रहे है योगी ऋषि हमारे गाएजा गाएजा....

(चातक) स्वाति नक्षत्र के जल की एक बूँद का प्यासा पक्षी

[2]

तर्ज़ : *प्रभु तेरो नाम जो ध्यावे फल पाए*

इक ओइम् नाम जो ध्याये तर जाए,
पहुँचाए मोक्ष धाम ॥ इक ओइम्...
द्यौः पृथ्वी आकाश के स्वामी
पूर्ण पुरुष तुम हो परिज्ञानी
परिपूत कहलाए (2)
गुण गाएँ गुण गाएँ ज्ञानी विद्वान् ॥ इक ओइम्...
शाशक तू प्रभु है प्रज्ञानी
सब जीवों का अन्तर्यामी
फल कर्मों का दिलाए (2)

दिखाए, दिखाए (2) कर्मों का परिणाम ॥ इक ओ३म्...
अग्रगामी तू हम अनुगामी
आत्मज्ञान दाता ब्रह्मज्ञानी
वेद का ज्ञान कराए (2)
बन जाए बन जाए (2) मानव निष्काम ॥ इक ओ३म्...
तूने इतने भक्त हैं तारे
जितने ना होंगे नभ में तारे
भक्तरतन धन पाएँ
धन पाएँ धन पाएँ (2) बन जाएँ धनवान ॥ इक ओ३म्...
हृदयासन बैठो प्रभु प्यारे
शरण तुम्हारी हम भी तुम्हारे
प्रीत के दीप जलाए (2)
बन जाएँ बन जाएँ अग्नि समान ॥ इक ओ३म्...

(परिज्ञानी) सूक्ष्म ज्ञानी (परिपूत) परम विशुद्ध (प्रज्ञान) बुद्धिमान

[3]

तर्ज़ : *ना हँसो हम पे जमाने के हैं*

मन के मन्दिर में प्रभु दरस दिखाओ तो सही
मेरे अंतः करण की प्यास बुझाओं तो सही ॥ मन के...
जग में उलझा ही रहा पा न सका तेरी शरण
ज्ञान किरणों से अमर ज्योति जलाओ तो सही ॥ मन के...
हवा के दोष पे कर्मों के दीप जलते रहे
मेरे पापों की हवा मन से हटाओ तो सही ॥ मन के...
है फँसा चंचल मन मेरा गर्दिशों में प्रभु
इसे स्थिर करने की तरकीब बताओ तो सही ॥ मन के...
क्या करूँ सूझे ना कुछ तेरे सिवा मेरे प्रभु!
दीन वत्सल हो दया दृष्टि घुमाओ तो सही ॥ मन के...
चक्र में घूम चुका अब मैं पुकारूँ तुझको
मेरी आत्मा में अमर प्रेम बहाओ तो सही ॥ मन के...
हे मेरे जातवेद दिव्य उपचरित प्रभुजी
मेरे जीवन का ध्येय पूर्ण कराओ तो सही ॥ मन के...

(जातवेद) सर्वज्ञ (उपचरित) उपासना लायक, लक्षण से जाना हुआ।

[4]

तर्ज़ : *तेरे बिन सूने नैन हमारे*

प्रभु बिन सूने हृदय हमारे
जन्म सफल क्यूँ हुए ना हमारे ॥
श्वास जो पाए जगत में आ के
रह गए विषयों में पगला के
खेल जीवन के सब गए हारे ॥ प्रभु बिन...
दोष हवा का मन हुआ साथी
तेल रहा ना बुझ गई बाती
दीप गुणों का व्यर्थ बुझा रे ॥ प्रभु बिन...
पाप क्यूँ, भाए, पुण्य ना भाए
चोट लगे मन करे हाय हाय!
मति भरमाई क्यो मनवा रे ॥ प्रभु बिन...
जल में ही रह के रह गए प्यासे
ज्ञान बिना क्या कर्म कमाते
नैया जीवन की खड़ी मँझधारे ॥ प्रभु बिन...
याद प्रभु की क्यों नहीं आती
दर्शन को क्यों नहीं तरसाती
प्रीत क़ा पंछी उड़ ना सका रे ॥ प्रभु बिन...
बन्धु पिता वो, वो ही साथी
भेद करे ना पूछे ना जाति
शरण जो आए उन भक्तों को तारे ॥ प्रभु बिन...
धर्म कर्म की राह सुझा दे
वेदमार्ग पर हम को चला दे
सृष्टि के ऋत सत्य तेरे सहारे ॥ प्रभु बिन...

(मति) बुद्धि (ऋत) सृष्टि के नियम

[5]

तर्ज़ : *न पूछो ये मुझसे मैं क्या देखता हूँ*

तेरा जलवा हर शै मैं सदा देखता हूँ
जिधर देखता हूँ तुझे देखता हूँ ॥
न मन्दिर न मस्जिद न गुरुद्वारा गिरजा
तुझे मन के अन्दर बसा देखता हूँ। जिधर देखता हूँ...
तू ही देवता मेरा तू ही मेरा स्वामी
मैं तुझमे पिता तुझमें सखा देखता हूँ। जिधर देखता हूँ...
मेरे दिल में हरदम बसे याद तेरी
न अपने से तुझको जुदा देखता हूँ। जिधर देखता हूँ...

[6]

तर्ज़ : *दिल ढूँढ़ता है फिर वही*

निर्जिव है ये जीवन प्रभु प्रेम बिना
पीते रहे ओ३म् रस, प्याला भरे हुए ॥ निर्जिव है...
जो लगे जग के मेले, गया मन वहाँ ठहर
साँसे तो छूटी तृष्णा छोड़ी नहीं मगर
हर बार जन्म मृत्यु के काँटे गड़े हुए ॥ निर्जिव है...
ये जीवन नाव डोले मँझधार में सफर
जो दुरित हैं राह रोकें लागे कठिन डगर
गर तू है माँझी, समझो हम हैं तरे हुए ॥ निर्जिव है...
चाहकर ना कोई अपना, ना कोई है हमसफर
इक तू ही तू सहारा, जिसपर सभी नज़र
श्रद्धा व प्रेम तुझको, अर्पण किए हुए ॥ निर्जिव है...
मन चित्त में तू समाए आत्मा हो तेरा घर
तेरा वेद ज्ञान लेकर हो जाएँ हम अमर
अन्धकार में जो जीते मानो मरे हुए ॥ निर्जिव है...

(दुरित) पातक; पाप, पापी (डगर) रास्ता, पथ (हमसफर) साथ चलनेवाला

[7]

तर्ज़ : *जो थके-थके से थे हौसले (मेंहन्दी हसन)*

मैं शरण तेरी प्रभु आ पड़ा, मुझे अपना ज्ञान प्रकाश दे
जितने हों क्षण तेरी शरण, उतने ही मुझे प्रभु श्वास दे ॥ मैं शरण...
कई जन्मों से खोया अमन, ना कभी खिला हृदय चमन
मैं बहुत सता हूँ ऐ भगवान् मुझे फिर ना जग की तू आस दे ॥ मैं शरण...
संसार में भटके कदम, जब होश आया समय था कम
प्रभु बाँह थामो इसी जन्म, मुझे तेरा प्रेम प्रसाद दे ॥ मैं शरण...
तू जो पास, दूर हैं जग बन्धन, रहा दूर तुझसे तो है पतन
कहीं पापों में भटके ना मन, संयम का इसे अभ्यास दे ॥ मैं शरण...
अल्पज्ञ मैं सर्वज्ञ तुम, मेरे मन की पहुँच हुई अगम
और आहुति भक्ति की कम, कुछ भी तो प्रेम का लाभ दे ॥ मैं शरण...
तेरी शक्ति के आगे नमन, मैं क्या हूँ तुच्छ मेरा अहम
तेरी चरण धूल का छोटा कण, तेरे चरणों में आवास दे ॥ मैं शरण...
तेरे अदितीरूप का हो चिन्तन, मेरी नम्रता हो तेरे चरण
हे सविता देव, प्रकाशमन, तू 'ललित' को तव विश्वास दे ॥ मैं शरण...

(सवितादेव) जगदुत्पादक, परमेश्वर (आदिती रूप) अखण्ड स्वरूप अग्नि (सर्वज्ञ) क्रान्तदर्शी

[8]

तर्ज़ : *मेरे सपने में आना रे*

ओ३म् जपने में आनन्द रे मनवा
ओ३म् जपने में आनन्द रे
सच्चिदानन्द के इस आनन्द में
बहते ही जाना रे ....ओ३म् जपने
किए जा तू सत्संग कहते सियाने
धीरे-धीरे जागे प्रभु प्रेम जिया में
प्रभु-प्रेम में समाना रे ....ओ३म् जपने
स्वार्थ छोड़ दानशील कर्म किए जा
यज्ञरूप शुद्ध आत्मा से जिए जा
वेद पथ पे ही जाना रे ....ओ३म् जपने
देव जो बने है सदा चलते नियम से

तू भी चल मेरे मन धैर्य संयम से
शुभ संकेत पाना रे....ओ३म् जपने
अग्निरूप ईश्वर का ध्यान तू किए जा
प्रभु का प्रकाश प्रभु से ही लिए जा
संग प्रभु का सुहाना रे....ओ३म् जपने
प्रभु भक्ति के लिए कर ना बहाने
मत गँवा हाथ आए पल ये सुहाने
पीछे नहीं पछताना रे....ओ३म् जपने

[9]

तर्ज़ : *आजा रे परदेसी*

आ प्यारे प्रभु, आ मेरे मन के द्वार
तू कर दे भवसागर से पार..........आ प्यारे अविनाशी ॥
कितने लगे जन्मों के फेरे मिट ना सके ये मन के अन्धेरे
दुःख पीड़ा आ आ कर घेरे...ओ...आ प्यारे....
काम क्रोध मद मोह लुटेरे, मुझको रूलाए खुदये हँसे रे
ये मेरे जीवन को बिखेरे....ओ....आ प्यारे....
चारों ओर हैं पाप घनेरे, ना दर्शन करने दें तेरे
तुम्हीं बचाओ हे प्रभु मेरे...ओ....आ प्यारे...
दीन हूँ दीनानाथ हो मेरे, दान में दे दे दर्शन तेरे
क्यूँ भूले मुझको प्रभु मेरे...ओ....आ प्यारे...
श्रद्धा प्रेम हो मन में मेरे ओर वाणी में गीत हों तेरे
मैं सिमरुँ तुझे साँझ सवेरे...ओ ....आ प्यारे....
ज्योतिस्वरूप हो प्रभु तुम मेरे, ज्ञान जगा अन्तर्मन मेरे
रहे आत्मा अर्पण तेरे....ओ ...आ प्यारे...
ये मन अब तुझको ही हेरे, दर्शन कब होंगे प्रभु तेरे?
दिन आएँगे मिलन के सुनहरे....ओ ...ओ प्यारे...

(घनेरे) बहुत

[10]

गीत (श्राद्ध और तर्पण)

श्रद्धा से जो कर्म करते हैं श्राद्ध उसी को कहते हैं
वेदविहित पितरों की तृप्ति को तर्पण ही कहते हैं ॥
वृक्ष पहाड़ और नदी समुन्दर की सेवा ना तर्पण है।
किन्तु सुश्रुषा सेवा जो जीवित पितरों की तर्पण है।
वेद विरुद्ध जो चलें पाखण्डी पथ से भ्रमित वो करते हैं ॥ श्रद्धा से जो...
जीवित मात-पिता की सेवा ही सच्चा तर्पण और श्राद्ध
इसी में निहित है सत्यव्रती फल जो है ईश्वर से ही प्राप्त
बिन श्रद्धा के किए धर्म कर्म सदा ही निष्फल रहते हैं ॥ श्रद्धा से जो...
मृत्यु बाद तो मात-पिता को देह-विहीन ही पाया है
फिर भोजन आच्छादन कैसा जब उनकी ना काया है
अक्ल के अन्धे बनो कभी ना, ज्ञानी जन ये कहते हैं ॥ श्रद्धा से जो...
तिरस्कार ना करो कभी भी मात पिता ऋषि आचार्यों का
प्राप्त करो आशीश-प्रेरणा लाभ हो उनके सहकार्यों का
हृदय सदा निष्काम हैं जिनके वो निःस्वार्थ ही रहते है ॥ श्रद्धा से जो...
दूर रहो बगुला भक्तों से फैलाते जो अन्धविश्वास
करो भी ना सत्कार तुम उनका उलटा कर दो पर्दाफाश
ऋषियों की प्राचीन पद्धति ज्ञानी माना करते है ॥ श्रद्धा से जो....

[11]

तर्ज़ : तरुन गेले दिन मधले सखी

बचा ले अपनी जीवन नैया
यात्री आत्मा भोले रे ॥
पाप के छेद हैं नाव में तेरी
जग सागर में डाले रे ॥ बचा ले...
कर दी नाव पुरानी मूरख
सद्‌गुण से ना साधी रे
खा गए लकड़ी दुर्गुण दीमक
अब मनवा क्यूँ डोले रे? ॥ बचा ले...
कुटिल मार्ग मृत्यु का द्योतक

याज्ञिक जीवन अमृत रे
पाले देव मार्ग शिव-सुख का
रखना अमृत घोले रे ॥ बचा ले ॥
रहे अविद्या दुःख ही दुःख है
विद्या में सुख आनन्द रे
विषय विकार छोड़ मद मोह को
परमेश्वर का होले रे ॥ बचा ले ॥

(द्योतक) दिखलाने वाला (याज्ञिक) निष्कामी

[12]

तर्ज : *धुंद होऊनी सरवरी*

बूँद दे अमृत भरी
प्यासी चातक जैसे अखियाँ
प्रीत बावरी उमड़ आए
तेरे दर्शन को मेरी......

सत्य रूप है ओ३म् प्यारा,
प्राणी मात्र का इक सहारा
जब भी हृदय से पुकारा
बाँह थामी और उबारा
मन हृदय चित्त ओ३म् ध्याये,
साँस जब तक आखिरी ॥ बूँद दे...

तीन स्वर में त्रिलोक गूँजे,
अन्तरिक्ष द्यौः और पृथ्वी
ओ३म् ज्योति में विश्व व्यापे,
दिव्य स्वर गुण अतुलनीय
ज्ञान के अमृत कलश से,
दे सुधा माँ सरस्वती ॥ बूँद दे...

मन के नयनों में समाई प्रीत तेरी मोहनी
बुझ न पाए प्यास भगवान् चाह तुझको खोजती
आत्मा कर दे प्रकाशित ज्ञान धन दे, हे धनी! ॥ बूँद दे...

[13]

तर्ज़ : *लग जा गले के फिर ये हसीं*

अनमोल है जीवन तो फिर इसको गवाँ नहीं
जब तक हैं प्राण तन में प्रभु को भुला नहीं ॥
मन में क्यूँ मोह माया है और क्यों है राग द्वेष
गर आत्मा मलीन है तो क्या जीवन में शेष?
संयम में रह तू विषयों में मन को लगा नहीं ॥ जब तक है...
कर्मों की बाज़ी जीत के पाया मानुष जनम
जीवन बना तू ऐसे के छूटे जनम मरण
आनन्द मुक्ति का मिले, प्रभु के सिवा नहीं ॥ जब तक है...
जीवन प्रकाश शक्ति का ईश्वर है आत्मरूप
दुष्टों का रुद्ररूप है शिष्टों का सुखस्वरूप
प्रभुहीन जो हृदय हैं उनमें दिव्यता नहीं ॥ जब तक है...
पावन है गंगा ज्ञान की ओर स्रोत तुम प्रभु
लहरें उठा हृदय में हे! ज्ञान के सिन्धु
वो मन क्या जिसमें ज्ञान का दीपक जला नहीं ॥ जब तक है...
जिनके हृदय पवित्र हैं उनके हृदय में तुम
और दूर उस हृदय से जिसमें भरे दुर्गुण
पाना है पूज्य प्रभु को तो पापों में जा नहीं ॥ जब तक है...

(रुद्ररूप) दंड स्वरूप (दिव्यता) बड़प्पन

[14]

तर्ज़ : *कुछ कुछ होता है*

ध्यान में आए हृदय में समाए
आत्मा में कई निज रूप दिखाए
हर्षित हो मन प्रभु गुण गाता है
प्रभु चरणों में आनन्द आता है ॥ प्रभु चरणों में....
जलवायु पृथ्वी आकाश है
और अग्नि में तेरा प्रकाश है
हे पिता! संसार की देख महिमा को, आनन्द पाया
वर्षा सुखों की तू बरसाता है ॥ प्रभु चरणों में....

कणकण में तेरा ही वास है
दूर सुदूर भी और पास है
प्रेरणा शुभ कर्म की
तेरी शरण में पाने लगा
जनम जनम प्रभु तुझसे ही नाता है ॥ प्रभु चरणों में...
तू मेरे जीवन का विश्वास है
मुझको तेरे दर्श की प्यास है
प्यार पिता का है
माता सी ममता देता है तू,
मित्र सखा गुरु, तू ही भ्राता है ॥ प्रभु चरणों में....
दीन हूँ, मैं तू दीनानाथ है
सत्य का मार्ग है तू साथ है
करो ज्योतिर्मय प्रकाशित मेरा
मन का ये दीपक
महाज्ञानी तू ही, ज्ञान का दाता है ॥ प्रभु चरणों में....

[15]

तर्ज़ : *दिल जो न कह सका वही राज़े दिल*

भक्ति में मन लगा, मिलेगा आनन्द तुझको
शरण प्रभु की सुखदाई है
वही सच्चा पिता सबका बन्धु सखा
जिसने सृष्टि सकल रचाई है ॥ भक्ति में...
चहुँ ओर ईश्वर की अनन्त है महिमा
संसार को प्रभु छाया तले रहना (2)
दया प्रेम करुणा की पिता परमेश्वर ने
वर्षा सुखद बरसाई है ॥ भक्ति में...
जो कुछ भी माँगो प्रभु से वो देता
बदले में ना कुछ कभी हमसे लेता (2)
हज़ारों निगाहें दया की हज़ारों ही हाथों से
दौलतें दाता ने लुटाई हैं ॥ भक्ति में...
प्रभु के गुणों का चिन्तन जो करता
पालन जो करता जीवन सँवरता (2)

सकल क्लेष दुःख व चिन्ता शरणागत की हरता
भक्तों का ईश्वर सहाई है ॥ भक्ति में...
सत्य ज्ञान की प्रभु से विद्या है आई
वेदों के द्वारा ऋषियों ने पहुँचाई (2)
सत्कर्म के लिए ज्ञान विज्ञान की विद्या
परम साधकों ने पाई है ॥ भक्ति में...
ध्यान लगा प्रभु का कर प्रभु का सिमरन
ईश्वर का सर्वस्व, कर उसे समर्पण (2)
इक तरफ संसार चयन है इक तरफ प्रभु शरण है
मिलेगी दिशा वो जो चाही है ॥ भक्ति में...
प्रभु की कृपा बिन मिले ना ये. मुक्ति
चाहिए जो परमानन्द कर प्रभु की भक्ति (2)
प्रभु के प्रकाश और अन्तर्वास में ही
आत्मा ने मुक्ति पाई है ॥ भक्ति में...

[16]

तर्ज़ : *उनको ये शिकायत है के*

क्यूँ ढूँढ़ रहा जग में हृदय में प्रभु रहते
आनन्द स्रोत ईश के यहाँ बहते ही रहते ॥
दुष्कर्म के जंगल में मिले काँटे ही काँटे
सत्कर्म के बागों में खिले फूल ही रहते ॥ क्यूँ...
ईश्वर ने रचा जगत जीवमात्र के लिए
ये भेद जानते तो पर उपकार में रहते ॥ क्यूँ...
पा लेते प्रभु तुझसे तेरे प्रेम के मोती
इन मोतियों को जग में सदा बाँटते रहते ॥ क्यूँ...
करने को बहुत कुछ था अगर करने पे आते
हम धर्म अर्थ काम मोक्ष के लिए रहते ॥ क्यूँ...

[17]

तर्ज : *दिल ढूँढता है सहारे सहारे*

क्यूँ भूलता तेरी मंजिल कहाँ रे?
जीवन को ढोए तू पहुँचा कहाँ रे ॥
क्यूँ रहके जगत में करे ना भलाई?
कभी पुण्य कर्मों की, की ना कमाई
विषय और विकारों में मति भरमाई
तू खुद से गया है बता क्यूँ छला रे? ॥ जीवन को...
है मक्सद अगर अपना पेट ही भरना
बता तुझको मानुष जन्म क्या है करना
क्या तुझको ना पशुओं से बेहतर है बनना
क्यूँ हीरा जन्म कौड़ियों का हुआ रे? ॥ जीवन को...
ये चोला जो पाया परीक्षा है तेरी
कर्म ही करेंगे समीक्षा ये तेरी
तो अब सोच ले तू क्या इच्छा है तेरी
है अब भी समय शेष जीवन बचा रे ॥ जीवन को...
अगर तू ना जाने के मंजिल कहाँ है
जहाँ वेद कहते समझ ले वहाँ है
इन वेदों की शिक्षा से जीवन बना है
इसी से ही जीवन लगेगा किनारे ॥ जीवन को...

[20]

तर्ज़ : *आँसू भरी हैं ये जीवन की राहें*

माँगूँ तुम्हीं से कि तुझको ही पाऊँ
तेरी भक्ति में अपने मन को लगाऊँ ॥
ये जग के प्रलोभन क्यूँ हरदम सताएँ
काँटों के घेरे में ले जा फँसाएँ
दो शक्ति प्रभु जग के बन्धन हटाऊँ ॥
यहाँ कौन मेरा कहूँ जिसको अपना
जुदा होगे इक इक लगेगा ये सपना
रहे संग उसे क्यूँ ना अपना बनाऊँ ॥

धन-धान्य से है भरा जग सरोवर
मगर चाहूँ आनन्द जो तेरी धरोहर
मेरे सच्चिदानन्द शरण तेरी आऊँ ॥
प्रभु चाहे ना दे तू दुनियाँ की दौलत
मगरूदे वो दौलत हूँ जिसकी बदौलत
तुझे छोड़ ना मैं किसी दर पे जाऊँ ॥
प्रभु आओ जीवन को मेरे सजाओ
मुझे अपनी भक्ति का मार्ग सुझाओ
अमर वेद अमृत तुम्हीं से ही पाऊँ ॥

[21]

तर्ज़ : *कैसे दिन बीते कैसी बीती रतियाँ*

ओ३म् रस पीके मस्त हुआ मनवा
जागा प्रेम मेरा ॥
मन मतवारा ओ३म् ओ३म् गाए
चरणों में बैठ प्रभु के आनन्द पाए
अन्तर्मन् करे प्रभु से मीठी मीठी बतियाँ ॥ जागा प्रेम मेरा...
सत् कर्मों के बाग लगाए
ज्ञान के सुरभित पुष्प सजाए
खिलती प्रेम की नन्हीं नहीं कलियाँ ॥ जागा प्रेम मेरा....
अमृत छलका दे, दे चरणामृत मोहे
मिल जाए ब्रह्मरत्न और कुछ न सोहे
दर्शन को तरसे मन की ये अँखियाँ ॥ जागा प्रेम मेरा....

(सुरभित) सुगन्धित

[22]

तर्ज़ : कर चले हम फिदा जानेमन साथियो

कर श्रवण वेद का वेद के पाठियो
अब तुम्हारे हवाले धरम साथियो ॥
जो समय है मिला व्यर्थ खोना नहीं
अन्त आया तो कुछ तुझसे होना नहीं
इसलिए ज्ञान के बीज तुम बाँटियो ॥ अब तुम्हारे...

आज संसार में सुख व चैन नहीं
आज मानव को मानव से प्रेम नहीं
खुद जगो, फिर कहो सबसे तुम जागियो ॥ अब तुम्हारे ॥
आत्मा मन व बुद्धि की कलियाँ खिलीं
ऐसी कलियाँ तो पशुओं में खिलती नहीं
अपना वेदानुसार जीवन आँकियो ॥ अब तुम्हारे ॥
रात अज्ञान की कितनी संगीन थी
लाए सुबह ऋषि कैसी रंगीन थी
लालिमा जो सुबह की उसे बाँटियो ॥ अब तुम्हारे ॥
महर्षि दयानन्द ने वेद पढ़े
वेद का ज्ञान लेके उस पे चले
वेद के पथ चलो सन्त के नातियो ॥ अब तुम्हारे ॥
मन के रोगों की औषध तो वेदों में है
और सुख शान्ति आनन्द तो वेदों में है
वेद सूर्य है उसकी बनो बातियो ॥ अब तुम्हारे ॥
वेद में ईश की वैसी सूरत नहीं
जैसा तुम सोचते हो वो मूरत नहीं
झाँकी प्रभु की हृदय में, हृदय झाँकियो ॥ अब तुम्हारे ॥
वेद में सत्य विद्या है ब्रह्मज्ञान की
है विधि इसमें आत्मा के समिधान की
मिल के वेदों के राग गाओ रागियो ॥ अब तुम्हारे ॥
कैसी सुन्दर है वेदों की वाणी 'ललित'
सृष्टि के आदि से है ये ईश्वर-प्रमित
वेद पे सच्ची निष्ठा श्रद्धा राखियो ॥ अब तुम्हारे ॥

प्रमाणित, प्रदर्शित, ज्ञात (श्रद्धा) पूज्य भाव आदर, स्पृहा (समिधान) प्रदीप्त (प्रमित) निश्चित

[23]

तर्ज : *सलोना सा सजन है*

ये पापों का जीवन है और मैं हूँ
अथाह सागर भँवर है और मैं हूँ ॥
तेरे पुरुषार्थ से सृष्टि में जीवन, यहाँ आलस्य मेरा और मैं हूँ,
ये पापों का...
तू आनन्द में प्रभु रहता सदा ही, यहाँ बेचैनियाँ हैं और मैं हूँ,
ये पापों का...
तुम्हारे कर्म हैं निष्काम प्रभुजी, यहाँ स्वार्थ खड़ा है और मैं हूँ
ये पापों का...
तेरे भण्डार ना खाली कभी भी, यहाँ कंगाल हालत और मैं हूँ
ये पापों का...
दया है प्रेम उपकार तुझमें, यहाँ पापों का जीवन और मैं हूँ
ये पापों का...
तू है निर्लेप, और निर्दोष दामन, यहाँ भय शर्म शंका और मैं हूँ
ये पापों का...
महासागर तू वेदों का है दाता, यहाँ अज्ञानता है और मैं हूँ
ये पापों का...
तुम्हारे रूप में ब्रह्माण्ड सारा, यहाँ छोटा सा बिन्दु और मैं हूँ
ये पापों का...
कृपाओं से भरा ये त्रिलोक तेरा, यहाँ बस प्रार्थना है और मैं हूँ,
ये पापों का...
विनय करता 'ललित' ले चल वहाँ पर, जहाँ तेरी शरण है ओर मैं हूँ
ये पापों का...

[24]

तर्ज : *जोगिया जोगिया कहाँ जाने लगा है*

मनवा मनवा गया हीरा जन्म क्यूँ छोड़ के
क्या मिला तुझको कौड़ियाँ जोड़ के ॥
समझ ना आई तुझे इस संसार की
कदर ना जानी परमात्मा के प्यार की
हुआ पाप में बदनाम....मनवा

तुझे क्यूँ सताया काम क्रोध लोभ मोह ने
अन्त जो आया तो तपाया कष्ट रोग ने
चैन मिला ना आराम....मनवा
जिया के लिए तू जीया रंगरलियों में
जाने अनजाने तू उलझा कई पहेलियों में
जान के बना तू अन्जान...मनवा
प्रेरणा मिली ना तुझे कभी सत्संग की
व्यर्थ बनाई आदत तूने बुरे संग की
वक्त पे आया ना कोई काम....मनवा
जीवन की नाव दी कर्म पतवार दी
आनन्द हेतु प्रभुने ज़िन्दगी उधार दी
माया मिली ना ही राम....मनवा
राख में गया तू साथ में गई जिन्दगानी
जग ने ना पाई तेरी अमर कहानी
कट गया खाते से नाम....मनवा

[25]

तर्ज : जा रे बदरा बैरी जा

जारे शरण प्रभु की जा, रे मनवा
आनन्द रस सुख पा रे पा रे — जारे शरण...
सच्चिदानन्द की अद्भुत महिमा
कण कण का आधार — जारे शरण...
देख हृदय में प्रभु की प्रतिमा
मन दर्पण चमका — जारे शरण...
पी के सरस वेदों का अमृत
मुक्तिधाम को पारे पारे — जारे शरण...
तेरे मिलन के सपन सजाए
करो प्रभुजी साकार — जारे शरण...
तारो प्रभुजी जीवन नैया
डोल रही मँझधार — जारे शरण...
दरस ना पाया बीती उमरिया
आओ मन के द्वारे-द्वारे — जारे शरण...

[26]

तर्ज : *गोड तुझ्या त्या स्वप्ना मधुनी*

जन्म दिया और काया बदली
सुख की प्रभु ने छाया कर दी....जन्म दिया
जिसे बनाया सुख का साथी
दुःख आया तो टूटा नाता
मेरे साथ रहा प्रभु साथी
कृपा हुई तत्काल...दयानिधे....जन्म दिया
बिन माँगे भण्डार दिया है
क्यूँ कर तेरा प्रेम न माँगा
इन होठों को ओ३म् का स्वर दे
स्वरमर कर चित्त प्राण..दयानिधे....जन्म दिया
छोड़ दूँ कैसे आँचल तेरा
तेरे सिवा प्रभु कौन है मेरा
तेरी दया की कोई ना सीमा
ना ही कोई मिसाल....दयानिधे....जन्म दिया

[27]

तर्ज : *आवडे हे रूप गोदी चे सगुण*

जागरे मेरे मन गाले हरि के गुण
क्या पता ये जीवन रहे ना रहे....जाग रे....
दाता वृष्टि सुखों की बरसाए
ध्याये वही पाए सच्चिदानन्द....जाग रे....
जीवन नैया प्रभु तू तारे
माँझी तू मेरा मैं तेरे सहारे...जाग रे...
ज्योति सत्य की प्रभु तुमसे ही पाई
जलती रहे सदा तेरे सहारे....जाग रे....
आत्मा बने ज्ञानी प्रीत जो प्रभु से जोड़ी
प्रीत लगा के बैठा रहूँ तेरे द्वारे....जाग रे....
व्याकुल मन तेरी आस लगाए
ध्यान में रहूँ तेरे साँझ सकारे....जाग रे....
वेदामृत की चाह जगाई
आनन्द रस दे प्रीतम प्यारे....जाग रे....

[28]

तर्ज : कोटि कोटि रुपे तुझी

कोटि कोटि रूप तेरे कोटि कोटि नाम तिहारे
तेरी ज्योति से है रोशन सूर्य चन्द्र अगणित तारे ॥ कोटि...
दिव्य अंकुरों में ईश्वर तेरा ही वास
फूलों में सुगन्ध लताओं में तेरा उल्लास
सकल धरा पर मधुमास के प्रभु सरजन हारे ॥ कोटि...
लोक में लोकान्तर में प्रभु तेरा ही प्रकाश
परम ज्ञानी पाते तुझसे ज्योति-प्रसाद
देव जो समर्पित तुझ पर करें स्तुति तुझे पुकारें ॥ कोटि...
जो भी भक्त करता तुझ पर पूर्ण विश्वास
तेरे दर से जाए ना वो कभी खाली हाथ
दोष रहित मन में दर्शन देते प्रभु पावन प्यारे ॥ कोटि....
पड़ा सूना मन मन्दिर दो ज्ञान का प्रकाश
प्रेम दान देकर मन में करो सहवास
हर एक श्वास तेरा ऋणी कैसे तेरा ऋण उतारें? ॥ कोटि...

(दिव्य) महान (अंकुर) बीज फूटी कोंपल (उल्लास) प्रसन्नता (लोक) भुवन

[29]

तर्ज : *प्रीतम तेरी दुनियाँ में*

भगवन् तेरे चरणों में दो दिन तो रहे होते
और वेद के सागर में जी भर के बहे होते ॥
स्वार्थ न लोभ होता सन्तोष में ही जीते
और भाव कुटिलता के मन में न लिए होते ॥ भगवन् तेरे...
न वैर द्वेष करते ना दुश्मनी में ढलते
इससे तो बेहतर था होठों को सिए होते ॥ भगवन् तेरे...
जीते हुए क्या जीते दुःख दर्द से सहमे दिल
मजबूर बेबसों के आँसू ही पिए होते ॥ भगवन् तेरे...
इससे तो मौत अच्छी अपने लिए जो जीते
जीने का तब मजा हे परहित में जिए होते ॥ भगवन् तेरे...
सागर भरे हुए हैं रत्नों से मोतियों से
कुछ ज्ञान के ये मोती हमने भी चुने होते ॥ भगवनं तेरे...
ईश्वर तेरी लगन में सब जन्म मेरे बीते
मन में यही अभिलाषा क्या जागते क्या सोते ॥ भगवन् तेरे...

[30]

तर्ज़ : *सारे मला मिळाले*

बिन माँगे सब मिला है क्या और माँगता
दाता प्रभु तू दानी सब कुछ है जानता ॥ बिन मांगे...
तेरे सूर्य चन्द्र तारे पल पल चलें इशारे
करें नाश अँधियारे जग में करे उजियारे
प्रभु तू स्वयं प्रकाशित ये जग है जानता ॥ बिन मांगे...
फल फूल से सजी है हरियालियों में धरती
हर जीव मात्र का ये निष्काम कर्म करती
जाने ललित कलाएँ माली जहान का ॥ बिन मांगे...
प्रहरी बनाए पर्वत हर देश के ये रक्षक
बहकर के प्रेम नदियाँ जाएँ प्रेम सागरों तक
प्रभु सोम इन्द्ररूप से जग को है पालता ॥ बिन मांगे...
तल से उठा के जल को थल ही पे बरसाए
बनके बृहस्पति प्रभु उपकार करता जाए
हर दान ईश तेरी महिमा उभारता ॥ बिन मांगे...
हर इक जगत का प्राणी महादान से अछूता
सदियों से पा रहा है प्रभु प्रेम ये अनूठा
रहे ना भण्डार खाली हर पल जो बाँटता ॥ बिन मांगे...
तू प्रकाश पुञ्ज है मैं प्रकाश तुझसे माँगू
तू है ज्ञान का भण्डारी तेरे ज्ञान को मैं साधूँ
तेरे वेद ही बताएँ अमृत का रास्ता ॥ बिन मांगे...

(प्रहरी) पहरा देनेवाला (अछूता) पवित्र, जिसे छुआ न जा सके, पहुँच के बाहर (अनूठा) अनुपम, विचित्र (ललितकला) विविध प्रकार की सुन्दर कला।

[31]

तर्ज़ : *सर्व सर्व विसरू दे*

धर्म कर्म के बिना मोल जीवन का कहाँ
लेख जीवों के लिखे वो पिता परमात्मा ॥
योनि योनि घूम के जन्म कर्म भोग के
स्वार्थ में उलझा रहा मोह माया जोड़के
ज्ञान था न भान था धर्म से अन्जान था
दौड़ विषयों की रही रात दिन गुजरे यूँ ही
सहते सहते यातना ॥ धर्म कर्म...
श्वास श्वास जोड़के जो मिली है ज़िन्दगी
कुछ सुकर्म में तो कुछ लगा प्रभु में मन कभी
तेज विद्या बुद्धिबल अपने प्रभु से माँगना
ईश की है प्रेम डोर आत्मा को बाँधना ॥ धर्म कर्म...
प्रेम श्रद्धा भक्ति मन को प्रभु ही से जोड़ती
तुझको सत्य मार्ग की दिशा में ही मोड़ती
प्रभु की कर तू प्रार्थना स्तुति और उपासना
धर्म हित ही कर्म की, कर प्रभु से याचना ॥ धर्म कर्म..
स्तुत्य आत्मा केवल प्रभु का मार्ग खोजती
दूर अन्धकार कर जलाती ज्ञान ज्योति
संत ज्ञानी साधकों की सफल होती साधना
आत्मदीप जगमगाते शुद्ध होती आत्मा ॥ धर्म कर्म...

[32]

तर्ज़ : *मंदिराच्या अंतरात देव*

प्रकाशित हृदय में ईश्वर भक्त के समाए
साँचा रूप साँचा रंग मन में दिखाए ॥ प्रकाशित हृदय में...
दिव्य रूप तेरी ज्योति। हर दिशा में तेरी कीर्ति
एक ओ३म् का ही ध्यान, मुक्ति पथ दिखाए। सांचा रूप सांचा रंग...
ज्ञानियों के शुद्ध मनों में, साधकों के चिन्तनों में
मेरी आस मेरे श्वास, तुझमें समाये। सांचा रूप सांचा रंग...
तू अनादि तू अनन्त, ध्याएँ ऋषि साधु सन्त
तू ही इन्द्र ब्रह्मा विष्णु, वेद महिमा गाए। सांचा रूप सांचा रंग...

[33]

तर्ज़ : *मृदुल कराँ नी छेड़ित तारा*

जीवन पर काँटों का घेरा कठिन डगर पर डाले डेरा
ज्योत जला दो आशा की प्रभु जागे अन्तर मेरा ॥ जीवन पर...
आत्मिक धन ऐश्वर्य जो माँगे, जीवन सुखद करे परमेश्वर
हर्षित मन कर भक्तों का प्रभु, पार लगाएँ बेड़ा ॥ जीवन पर...
सद्विचार का भाव भरे मन, पर उपकार का होवे जीवन
ज्ञान की ज्योत का करो उद्दीपन, मन का मिटे अन्धेरा ॥ जीवन पर...
वेद सिन्धु की ज्ञान तरंगे आत्मा को अनमोल रतन दे
मोती ज्ञान का वो ही पाए, जो भी उतरे गहरा ॥ जीवन पर....
वेदों की छाया में पलकार, हों विद्वान ज्ञान में ढलकर
पुरुषार्थ परमार्थ करे जग, लाए नया सवेरा ॥ जीवन पर....

(हर्षित) आनन्दित (उद्दीपन) प्रकाशन, उत्तेजन, वढ़ाना

[34]

तर्ज़ : *गा गीत तू असावे*

(इस भजन में आत्मा वाणी से कहती है)
वाणी तुझे सजाऊँ, मधुमय तुझे बनाऊँ
मेरे मन के चिन्तनों से अमृत तुझे पिलाऊँ
कितने जतन से मिलती अनमोल मेधा बुद्धि
वाणी से होके प्रेरित बने प्रेमरूप शक्ति
तुझको परमपिता की पहचान मैं कराऊँ ॥ वाणी तुझे सजाऊँ...
दे सान्त्वना तू दुःख में, ना गर्व करना सुख में
सबके दिलों में बहना ठंडी हवा के रुख में
सत्कर्म से मैं तुझको सत्य मार्ग पे ले जाऊँ ॥ वाणी तुझे सजाऊँ...
वेदों से तू धनी हो और ज्ञान से गुणी हो
निर्मल पवित्र बनकर प्रभु छाँव में पली हो
आ वेद ज्ञान देकर वसुवित तुझे बनाऊँ ॥ वाणी तुझे सजाऊँ...

देना अगर कसौटी कभी न उतरना खोटी
बनाना ओजस्विनी तू, मंगलमयी अनूठी
तुझको अनन्त प्रभु से आशीश मैं दिलाऊँ ॥ वाणी तुझे सजाऊँ...
प्रभु तुम दया के सागर दो प्रेमरूप मोती
वाणी में तुम जगाओ प्रभु सत्यरूप ज्योति
अन्तर स्वरों से साजे वही प्रेम गीत गाऊँ ॥ वाणी तुझे सजाऊँ...

(मधुमय) मिठास से भरा (अन्तर स्वर) हृदय से निकले हुए आतुर स्वर (वसुवित) बसानेवाला (सान्त्वना) आश्वासन (ओजस्विनी) कांति स्वरूप, प्रतापी, प्रभावशाली (मेधाबुद्धि) प्रकाशित बुद्धि।

[35]

तर्ज : *सांग तू माझाच ना*

(अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये)
हे प्रभु अमृत पिला, मुझको अविद्या से बचा ॥
काम क्रोध, न लोभ मोह, ना वासना में मन लगे
अप्रशस्त जो भाव आए उलटे पाँव सदा भगे
व्यर्थ ना ज़िन्दगी गँवानी, सत्य मार्ग प्रभु दिखा ॥
लाख चौरासी जनम, प्रभु गोते खाने में लगे
तेरी प्रभुताई इसी में, मुझको तेरी शरण दे
मेरे जीवन की वीरानी ज्ञान पुष्पों से सजा ॥
माँगता वर एक ही मन ज्योत भक्ति की जले
प्रीत की नैया तरे पतवार अपने हाथ ले
तू सुधा सागर है स्वामी तृप्त कर दे आत्मा ॥
दी ऋषि मुनियों की ज्योति कर कृपा मुझको भी दे
राह अमृत की चुनी कुछ ऐसा लक्ष्य मुझे भी दे
छोड़ जाऊँ कुछ निशानी जन्म तारो हे पिता! ॥

(वीरानी) उजड़ी हुई (तृप्त) सन्तुष्ट होना (गोता) जल में डुबकी (लक्ष्य) उद्देश्य

[36]

तर्ज : *असात होता संध्या छाया*

जीवन भर जीना ना आया।
भेद जीवन का समझ न पाया ॥ जीवन भर...
होश तो आया हो गई देरी
ज़िन्दगी बन गई राख की ढेरी
मिली ना मुक्ति ना ही माया ॥ जीवन भर...
काम क्रोध मद मोह में घिरकर
विषयों में दुःख जोड़े गिनकर
आस लगाई वो भी झूठी
तृष्णा रह गई फिर भी भूखी
बिना त्याग माया नहीं फलती ॥ जीवन भर...
राग द्वेष निन्दा से जुड़कर
शरम गँवाई मैला मन कर
ज़िन्दगी बेबस निर्धन रहती
क्लेष दुःखों के क्रन्दन सहती
कली नहीं मुरझा के खिलती जीवन भर...
तू खुद को प्रभु के आश्रित कर
सत्य ज्ञान से मन जागृत कर
संयम से पा मन की शक्ति
तप से पा जीवन की मुक्ति
अनबुझ प्यास सुधा से भरती ॥ जीवन भर...
सफल जीवन कर ओ३म् को भजकर
वीतराग बन तृष्णा तजकर
मन को जो मिलती है तृप्ति
वो केवल है ईश्वर-भक्ति
जगी रहे नित ओ३म् की ज्योति ॥ जीवनभर...

(क्रंदन) रोने ने क्रिया (वीतराग) आसक्तिरहित, निस्पृह

[37]

तर्ज : *जायते जाशील तू रे*

आपके आशीष से प्रभु शुद्ध होवे आत्मा
सत्य ज्ञान का पथिक बनकर पाऊँ सुख परमात्मा ॥
लालसा जागी मेरे मन तेरे अमृत बूँद की
जिसको पाकर सूर्यचन्द्र है झूमता अन्तरिक्ष भी
फूल वनस्पतियाँ लताओं में बहे आनन्द सा
पंख पसारे गीत छाए लोकान्तरों में पवन का ॥ आपके आशीष से...
दान अनुपम ईश तेरा प्राण जगत में भरा रहा
रश्मियों से सूर्य की पुलकित धरा को कर रहा
ज्वार की लहरों से उठता गीत मधुमय सागरों का
घन का धन पाने को धरती करती रहती याचना ॥ आपके आशीष से...
हर दिशा मंगल स्वरों से गीत गाती हर्ष से
विश्व परमानन्द में डूबा सोम के मधुस्पर्श से
भावनाओं की तरंगों से उठा संगीत सा
दे भले इक बूँद अमृत की मुझे विश्वात्मा ॥ आपके आशीष से....
प्राणवन्त अनन्त बहता विश्व का ये सोम सागर
वेद के ऋषियों की भर देता प्रभु अमृत से गागर
पाते वर सात्विक जीवन में आनन्द और उल्लास का
ऐसी शुद्ध आत्मा को मिलते परमपिता परमात्मा ॥ आपके आशीष से...

(पथिक) यात्री, मुसाफिर (लालसा) प्रबल इच्छा, उत्कंठा, उत्सुकता (पुलकित) रोमांचित, गद्गद्, आनन्द (घन), बादल, मेघ (विश्वात्मा) विश्व की आत्मा, परमेश्वर (प्राणवन्त) प्राणों को प्रसन्न करनेवाला (सोमसागर) परम शान्ति का सागर।

[38]

तर्ज़ : *पायल मेरी तू है छम छम के*

आया हूँ शरण सच्चिदानन्द की
ओ३म् नाम बसा है मेरे चिन्तन में ॥
निन्दा में न व्यर्थ उलझना है
मद द्वेष को मन से तजना है
कभी आए ना मौके अनबन के.... ॥ ओ३म् नाम....
खोजूँ ना किसी में दोष कभी
खुद अपने ही दोष मिटाऊँ सभी
बँध जाऊँ न स्वार्थ न बन्धन में... ॥ ओ३म् नाम....

नहीं लोभ में मन को लगाना है
परधन को धूल ही माना है
जिस विध राखे रहूँ उस रंग में... ॥ ओ३म् नाम....
मेरे मन को मुझे समझाना है
दुर्गुण के पास ना जाना है
मैं जानूँ मिले प्रभु शुद्ध मन में... ॥ ओ३म् नाम....
प्रभु बैठा मन के मन्दिर में
कहाँ ढूँढ़े नदियाँ समन्दर में
छबि आती नज़र अन्तर्मन में... ॥ ओ३म् नाम....
निष्काम जीवन पर चलना कठिन
पर चाहो तो नहीं क्या मुमकिन
मिले अमृत, ज्ञान के मंथन से... ॥ ओ३म् नाम....
मन ज्ञान की ओर लगाना है
जो प्रकाश न पाया पाना है
मन जा बैठाकर सन्तन में... ॥ ओ३म् नाम....

(परधन) पराया धन (मुम्किन) सम्भव हो।

[39]

तर्ज़ : *लफ़्ज़ों की है ये ज़िन्दगानी*

सत्कर्मों से मिली जिन्दगानी
जो माने समझे वही है सुजानी ॥
आ रहा है इकपल इक जा रहा है
कोई सुख तो कोई दुःख पा रहा है
ये कर्मों का लेखा ही, जीवन कहानी ॥ जो जाने...
मन विषयों में उलझा रहा है
प्रभु हैं निकट तू दूर जा रहा है
कैसी है तेरी, ये नादानी ॥ जो जाने...
है दूर मंजिल राह अजानी
चला जो सुपथ समझो वही ज्ञानी
साधें जीवन को, साधु सन्त ध्यानी ॥ जो जाने....
दो दिन की है तेरी जिन्दगानी
कहीं व्यर्थ में ना जाए जवानी
पाले जीवन में, तू नेकनामी ॥ जो जाने....

(नेकनामी) कीर्ति, यश

[40]

तर्ज : क्या जानूँ सजन होती है क्या

क्या करूँ जीवन, तेरे बिना, दयानिधान
दीप जले, ज्ञान के, जब किया, तेरा ध्यान ॥ क्या करूँ...

मैं राह देखूँ तेरी निज मन के द्वार पे
और इन्तजार में पल पल गुज़रे
आके दरस दिखा दे मेरे मन के दर्पण में
तेरी याद में भुला दूँ, मैं सुध अपनी ॥ क्या करूँ...

मैं एक वस्तु माँगूं तू कई हज़ार दे
बदले में कुछ न माँगे प्रभु तू इसके
क्या वस्तु मेरी तुझको मैं दूँ उपहार में
करूँ भेंट प्रार्थना स्तुति श्रद्धा भक्ति ॥ क्या करूँ...

तुझमें दया है जितनी उतना ही प्यार है
ऋषि साधु सन्त योगी तुझको भजते
आया शरण मैं तेरी चरणों में स्थान दे
मन की व्यथा प्रभुजी होगी सुननी ॥ क्या करूँ...

जीवन प्रभुजी मेरा तुझपे निसार है
पाने को प्रेम तेरा ये मन तरसे
दिया जान को जला तू अद्भुत प्रकाश दे
अनबुझ रहे ये मन की जलती अग्नि ॥ क्या करूँ...

(सन्ताप) कष्ट, पीड़ा, (अनबुझ) जो बुझ न सके, (निसार) न्यौछावर, समर्पण

[41]

तर्ज़ : सांझ सवेरे अधरों पे तेरे

सांझ सकारे, भज मन प्यारे, भजले ओ३म् का नाम
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

दुर्गुण दोष रहित मन कर ले, रहे सदा ये ध्यान
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

ना कर छल ना बन अभिमानी, ना कर मूरख तू मनमानी
इस नरतन का मोल समझ ले, करता क्यूँ अभिमान
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

राजा, रंक रहा न कोई, जो आए जाएगा सोई
पर तू ना जाने इस जीवन की, आ जाए कब शाम
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

बीज तू पापों के क्यूँ बोए, मानव जीवन में ना सोहे
बाँध गठरिया शुभ कर्मों की, जो अन्त में आए काम
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

वेद पढ़े समझे हुए ज्ञानी, बने सुपथ के वो अनुगामी
वेदों से पाके गुणों के खज़ाने बने भक्त धनवान
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

ईश चरण में करले वन्दन, काटें दुःख के प्रभु सब बन्धन
मन में जो होगा प्रकाश प्रभु का पाएगा सुखधाम
रे मनवा भजले ओ३म् का नाम

(सोहे) शोभित, अच्छा लगना (सुखधाम) आनन्दता

[42]

तर्ज : *चन्दा की नगरी से आजारे निन्दिया*

आर्यों के प्यारे देव दयानन्द
जग को जगाने थे आए ॥
धूमिल हुई थी वेदों की विद्या, बँटे थे मतों में सारे
भूल चुके थे सन्ध्या हवन को, ज्ञान से दूर बेचारे
दीपक ज्ञान का हाथ में लेकर
दीप से दीप जलाए ॥ जग को जगाने...
तप और संयम ऋषि को थे प्यारे, वैभव सब ठुकराए
वेदों के उपदेश ऋषि ने, घर घर तक पहुँचाए
दया क्षमा और त्याग सेवा से
दूर न होने पाए ॥ जग को जगाने...

[43]

तर्ज़ : *आजा कहीं से आजा दिलका*

ऐ मेरे ऋषिवर, तू है महान, तेरा पैगाम,
याद करे सारा जहान
आए ऋषि दयानन्द शिक्षा अपार लेके
जागृत किया था जग को वेदों का सार लेके ॥ जागृत ॥

गौओं की आँखों रोई, लाखों ही सर कटाए
विधवा सती अनाथों पर लाखों जुल्म ढाए
दुःख दर्द को मिटाने ऋषि आया प्यार लेके ॥ जागृत ॥

फैले थे मत मतान्तर कोई न वेद जाने
मक्कार और फरेबी, जग को लगे डराने
निकला ऋषि अकेला, कष्टों का भार लेके ॥ जागृत ॥

आर्यों ज़रा बता दो संदेश उस ऋषि का
यूँ व्यर्थ ना कभी हो बलिदान उस व्रती का
अज्ञान भ्रम मिटा दो सत्यार्थ प्रकाश लेके ॥ जागृत ॥

अमृतवाणी

आशीर्वाद के दो शब्द

श्री ललित साहनी एक बहुत ही अच्छे कलाकार हैं। परमात्मा की कृपा से ही कला-निपुणता आत्मा का अंग बना करती है। न केवल संगीत-प्रवीण हैं, अपितु काव्य कुशल भी हैं। "पश्य देवस्य काव्यं यो ममार न जीर्यति'। वेद उस आनन्द स्वरूप परमपिता का वह अनुपम काव्य है कि जिसे न तो मृत्यु ही स्पर्श कर सकती है और न जरा ही जीर्ण कर सकती है। काव्य शरीर को भी कहते हैं। वेदज्ञान परमात्मा का अध्यातम् शरीर को भी कहते है। वेदज्ञान परमात्मा का अध्यात्म शरीर है प्रभु आनन्दमय है और उसका शरीर भी आनन्दमय है। श्री ललित जी आनन्द के कलश रूप उन वेद मन्त्रों के अर्थों को हृदयंगम कर के उनको इतने सुन्दर रूप में भावना के सूत्रों में पिरोते हैं कि वह काव्य रूप में ही संगीत का परिधान धारण कर लेता है। फिर उसके लिए समुचित रागिनी का चयन उस परिधान के स्वर्णिम तारों में जो उन्मादमय लहरें पैदा करता है उनसे वातावरण ही नहीं बल्कि श्रोताओं की अन्तरात्मा तक ज्ञान, भक्ति और आनन्द के रस से लहलहा उठती है। उनका हृदय रसभरा है, उनके परिवार में रसमय वातावरण है। पत्नी भी सुन्दर काव्य रचना करती है। और पुत्री अदिति तो कला की अधिष्ठात्री देवी है। इस छोटी सी अवस्था में ही कितना नाम कमाया है। सीता बनकर फिल्म के क्षेत्र में सौन्दर्य, विनम्रता, शालीनता और वैदिक संस्कृति की जो वर्षा की है उससे नास्तिकों की बंजर मनोभूमि भी आप्लावित हो जाती है।

यह काव्य जो अभी आपके हाथों में है ललित जी का पुण्यशील काव्य है। 'गाए जा गीत प्रभु के", अमृतवाणी', 'तू जग का आसरा' और 'पल पल जीवन जाए" चारों ही भजनों के सुमधुर संकलन हैं। आशा है इन मधुर भजन के रस से अपने मन को तृप्त करेंगे और श्री ललित जी के प्रयत्न को सफल बनाएँगे।

परमपिता परमात्मा श्री ललित जी तथा उनके परिवार को सब प्रकार के सफलता प्रदान करें तथा उनकी सब कामनाएँ पूर्ण करें।

—स्वामी सत्यम्

मुम्बई फरवरी 13, 2009

कुलपति वैदिक यूनिवर्सिटी, अमेरिका

[1]

तर्ज़ : *उन आँखों में नींद कहाँ*

उस ईश्वर को क्यों तू भूला जिसने सुख भरपूर दिए
उस ईश्वर को...

मोह माया में पड़कर मूरख, जीवन अपना व्यर्थ करे।
राग द्वेष छल कपट ना तजकर, जीवन में अनर्थ करे
जो भी प्रभु की शरण में आया समझो सब दुःख दूर हुए ॥
उस ईश्वर को........
जीवन धन तो प्रभु की अमानत सोच के क्यूँ ना खर्च करे
पाप में सौदा घाटे का और लाभ तो केवल पुण्य करे
पापी होते दण्ड के भागी, पुण्य सभी मंजूर हुए ॥
उस ईश्वर को........
संचित करले शुभ कर्मों को संगी साथी कर्म तेरे
छोड़ दे सब कुछ जगत पिता पर फल की क्यूँ तू आस करे
'ललित' तो है ईश्वर विश्वासी मन के सब भ्रम दूर हुए ॥
उस ईश्वर को........

(संचित) इकट्ठा करना, जमा करना (अमानत) जो वस्तु कुछ काल के लिए रख दी हो।

[2]

तर्ज़ : *धीरे धीरे ढल रे चन्दा*

कई जन्मों से भटक रहा हूँ पाई न शरण तुम्हारी
विषय विकारों ने है घेरा चिन्ता सर पे भारी ॥ कई जन्मों से...
सोया रहा नींदे गफलत की ध्यान न टूटा माया का
प्रेम डोर न बाँधी प्रभु से बीती उमरिया सारी ॥ कई जन्मों से...
कितनी आई भोर सुनहरी कितनी मनहर साँझ रे
हर पल पास खड़ा था ईश्वर पहुँच न हुई हमारी ॥ कई जन्मों से...
अपनी भूल मैं मानूँ दाता फिर भी हूँ सन्तान तेरी
चित्त न धरो अवगुण सब हर लो बिनती यही हमारी ॥ कई जन्मों से...

(गफलत) असावधानी, भ्रम, भूल (अवगुण) बुराई।

[3]

तर्ज : *मैं तो तुम संग नैन मिलाके*

मैं तो जानूँ ना कुछ मेरा
सब प्रभु की रचना
प्रभु को बना ले अपना ॥ मैं तो जानूँ ॥
लोभ मोह मद में भरमाया
मृगतृष्णा में कुछ ना पाया
सारा जीवन व्यर्थ गँवाया ॥ मैं तो जानूँ ॥
संगी साथी मीत बनाया
वक्त पड़ा कोई काम न आया
क्यों न प्रभु को मीत बनाया ॥ मैं तो जानूँ ॥
सपनों का जो महल बनाया
नींद खुली तो खण्डहर पाया
मन का मन्दिर काम न आया ॥ मैं तो जानूँ ॥
तनकर क्यों अभिमान बढ़ाया
दुनियाँ फानी जान न पाया
अन्त समय रोया पछताया ॥ मैं तो जानूँ ॥
अब भी क्या तू जाग न पाया
झूठ फरेब क्यों छोड़ न पाया
मान जा, कर ना जीवन जाया ॥ मैं तो जानूँ ॥

[4]

तर्ज : *तेरी आँखों के सिवा दुनियाँ में*

मेरी हर साँस में प्रभु तुझको बसा रखा है
प्रभु तेरी प्रीत पले दीप आशा के जले
पुष्प जीवन का खिले तेरी चरणरज के तले ॥ पुष्प जीवन...
गीतों के फूलों से द्वार प्रभु का सजाने लगा
प्रभु प्रीतम के दरस में आँखें बिछाने लगा
नैन खुशियों के तले आँसू टपकाए भले ॥ पुष्प जीवन...
रह रह के शुभकर्म मन में दया धर्म आने लगा
मन का अँधेरा दूर मेरे मन से जाने लगा

ज्ञान के दीप जले प्रेम के भाव खिले ॥ पुष्प जीवन...
जब से प्रभु का प्यार मेरे मन को भाने लगा
प्यार उमड़ते ही गीत प्रभु के मैं गाने लगा
गाऊँ जब सुबह चले गाऊँ जब शाम ढले ॥ पुष्प जीवन...
न कोई ग़म है जब तक प्रभु का सहारा मुझे
संग प्रभु का तो जानूँ मिलेगा किनारा मुझे
ज्योत तेरी मन में जले चाहूँ मिलना मैं गले ॥ पुष्प जीवन...

[5]

तर्ज़ : *ये मेरा दीवानपन है*

जि़न्दगी तुझसे मिली है, तुझसे प्रभु नाता अटूट।
तू सुधा सागर है ईश्वर, दे दे निज अमृत घूँट ॥

भजन

ओ३म् नाम तेरा पावन है जो दुःखों को करता दूर
तू जलाए पाप सारे तू ही है ज्योतिस्वरूप ॥
जन्म जन्मान्तर से मैं तेरे ही आश्रित हूँ प्रभु
छोड़ूँ कैसे तेरा दामन है नज़र में तू ही तू ॥ ओ३म् नाम...
तू ही माता है पिता और जीव मात्र का तू जीवन
तू ही स्नेही मित्र बन्धु चाहुँ मैं तेरा ही संग ॥ ओ३म् नाम...
तेरी भक्ति में प्रभुजी लागे निशदिन मेरा मन
वेद ज्ञान का पाऊँ अमृत सार्थक कर दे जनम ॥ ओ३म् नाम...
दुर्गुणों से दूर कर दो सद्गुणों से साजे मन
कर्म ऐसा हो ना जिससे व्यर्थ ही जाए जन्म
कामना बाकी यही है अपनी भक्ति का दे रंग
हर समय मेरे हृदय में जागे तेरी हो तरंग ॥ ओ३म् नाम...

(अटूट) अखण्ड (सार्थक) सफल, अर्थयुक्त, सिद्ध, गुणकारी, (आश्रित) आश्रय प्राप्त, शरणागत, अवलम्बित

[6]

तर्ज़ : *ओ३म् का जाप*

भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
भज ओ३म् नाम, शिव ओ३म् नाम ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
अग्नि स्वरूप, अमृतसमान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
सत् चित, आनन्द, दे मोक्षधाम ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
अनादि अजन्मा अनन्त महान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
प्रभु ब्रह्मरूप अनुपम सुजान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
प्रभु निर्विकार ऋत सत्यवान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
है प्रबुद्ध, शुद्ध अति ज्ञानवान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
सर्वान्तर्यामी आत्मवान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
सकल सृष्टि करता विधान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
पितु मातु सखा बन्धु समान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
करे यज्ञरूप कर्म निष्काम ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
दानेश्वर है प्रभु दाश्वान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
गाऐं ऋक् यजु अथर्व साम ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
है जग असार प्रभु सारवान ॥
भज ओ३म् नाम, भज ओ३म् नाम,
सृष्टि है काव्य प्रभु कवि महान ॥

[7]

तर्ज : *तन के तम्बूरे में तो*

देख देख महिमा तेरी हुआ जग हैरान
तुझको शतशत प्रणाम प्रभुजी लाखों प्रणाम
दाता विधाता तू है सर्वशक्तिमान
तुझको शतशत प्रणाम तुझको लाखों प्रणाम ॥

अगणित सूर्य चन्द्र और तारे चमकें गगन में सारे (2)
गति करें आकाश में प्रभुजी केवल तेरे सहारे (2)
दया है असीम तेरी हे दयावान।
तुझको शतशत प्रणाम...

कोटि कोटि जीवों को जग में तूने दिया बसेरा (2)
पर उपकार तू जीवमात्र का करता रहा घनेरा (2)
कण कण में व्यापक तेरा निशान
तुझको शतशत प्रणाम...

तू ब्रह्माण्ड का सरजन हारा करता दूर अन्धेरा (2)
तेरी आज्ञा से दिन रैना रवि शशि देते पहरा (2)
सकल देवों को करे ज्योतिर्मान ॥
तुझको शतशत प्रणाम...

तेरे याज्ञिक कर्मों से प्रभु हुआ जगत उजियारा (2)
तेरे वेद की विद्या से प्रभु बही ज्ञान की धारा (2)
ऋषि मुनि योगी करते तेरा ही ध्यान ॥
तुझको शतशत प्रणाम...

मेरे इस मन के मन्दिर में दीप जले प्रभु तेरा (2)
मेरी आत्मा के मस्तक पर बाँधो ओ३म् का सेहरा (2)
ओ३म् ओ३म् जपते जपते निकलें तन से प्राण ॥
तुझको शतशत प्रणाम...

भटक भटक जन्मों से हारा दे दो प्रभु सहारा (2)
मेरी जीवन की नैया को दे दो सुखद किनारा (2)
चरणों में तेरे मेरी मुक्ति का धाम ॥
तुझको शतशत प्रणाम...

[8]

तर्ज़ : *मुके आज झाले मुके आज झाले*

ओ३म् नाम जपले मनवा ओ३म् नाम ध्याले
पीले ओ३म् अमृत प्याला रत्नधन कमा ले ॥

ओ३म् नाम से प्रकाशित संसार सारा
मन बुद्धि चित्त आत्मा ने ज्ञान को पसारा
ओ३म् नाम गा के वर्षा सुख की बरसा ले ॥ पी ले ॥

लगे रंग फीके सारे, ओ३म् रंग पाके
मिले हर्ष निज आत्मा को ओ३म् में समा के
पाले सद्गुणों की शक्ति अवगुण हटाले ॥ पी ले ॥

करे ओ३म् जीवन सरल नम्रता बढ़ाए
पल पल निशदिन मद को हटाए
ओ३म् के स्मरण से साधक बन के मुक्ति पाले ॥ पी ले ॥

ओ३म् सुधा की वेदों में बहे अमृत धारा
योगी ऋषि ज्ञानियों का तारन हारा
ओ३ममामृत के प्यासे मनवा प्यास बुझाले ॥ पी ले ॥

ओ३म् की शरण में आजा ओ३म् नाम प्यारा
ओ३म् नाम दुःख विसारे सुख का सहारा
ओ३म् ध्यान करके जीवन यज्ञमय बना ले ॥ पी ले ॥

[9]

तर्ज़ : *ओ जानेवाले हो सके तो लौट के आना*

ऐ प्यारे मनवा पथ प्रभु का खोज के आना
अज्ञान वश जीवन में कभी चोट ना खाना ॥

ये काम क्रोध लोभ मोह जीवन को सताए
और वैर ईर्ष्या द्वेष सबकी नजरों से गिराए
मन की मलीनता व दोष को मिटाना ॥ ऐ प्यारे...
मन से जो उठे वैर द्वेष मन को ही जलाए

तृष्णा की भूख ही तुझे लोभी पतित बनाए
मन को विषय विकारों में तू ना उलझाना ॥ ऐ प्यार...
मंजिल का राही आत्मा दुनियाँ अजब सराय
हर इक कदम समझ के सोच के अगर बढ़ाए
तो जीवन में कभी पड़ेगा ना पछताना ॥ ऐ प्यारे...
आत्मा के लिए प्रभु ने देह के मकाँ बनाए
खाली किया मकाँ चुकाने को न थे किराए
दर दर की ठोकरें हैं और आना जाना ॥ ऐ प्यारे...
ये वेद तुझको सत्य मार्ग ही सदा बतायें
दुर्गुण को दूर करके सद्गुणों से मन सजाए
वेदों को पढ़ पढ़ाना सुनना सुनाना ॥ ऐ प्यारे...
श्रद्धा व प्रेम से हृदय प्रभु के गीत गाए
मन प्रेम से प्रभु मिलन की भावना जगाए
हर स्वर में रंग तरंग में प्रभु गीत गाना ॥ ऐ प्यारे...
ऋषि साधु सन्त योगी सब प्रभु शरण में आए
आशीश प्रभु से पाके अमृत पुत्र कहलाए
जिस पथ महापुरुष गए उस ओर जाना ॥ ऐ प्यारे...
अग्निस्वरूप भाव क्यों ना आत्मा जगाए
तू इन्द्रियों को वश में कर आनन्द क्यूँ ना पाए
आत्मा को प्रभु के प्रेम का अमृत पिलाना ॥ ऐ प्यारे...

(पतित) गिरा हुआ (सराय) राह में ठहरने का स्थान (मकाँ) घर, मकान

[10]

तर्ज : *जिस गली में तेरा घर न हो*

जिस हृदय में हो प्रभु प्रेम की प्रेरणा,
उस हृदय में कभी अवगुण कभी भरना नहीं
कर्म ऐसा हो जिसमें ना उसकी रज़ा,
लाभ कितना भी हो फिर भी करना नहीं ॥ जिस हृदय में...

तू ये काम क्रोध लोभ मोह को छोड़ दे
वासना के अन्धेरों से मुख मोड़ ले
छोड़ विषयों को, मन प्रभु संग जोड़ दे

कर्म ऐसा हो जिसमें लगे डर शरम,
भूलकर भी उसे कभी करना नहीं ॥ जिस हृदय में...
मन को प्रेम से सजा वैर द्वेष छोड़ दे,
अप्रशस्त भाव आयें उलटे पाँव मोड़ दे,
आगे बढ़ दुश्मनी को पीछे छोड़ दे,
जिन दीवारों से होता है प्रेम अलग,
बीच में दो दिलों के खड़ी करना नहीं ॥ जिस हृदय में....

छल कपट झूठ से नाता तोड़ दे,
ना ही निन्दा चुगलखोरी पे जोर दे
लोभ लालच बुरी लूटपाट छोड़ दे
ऐसे कर्मों से बिक जाती शर्मोहया
सौदा घाटे का तो कभी करना नहीं ॥ जिस हृदय में....

धन कमाने में छोड़ी ना कोई कसर,
सोना चाँदी भरे हीरे मालोजहर
त्याग की ना कोई तूने कीनी कदर
जोड़ में जोड़ कर और भी जोड़कर
क्या समझ बैठा तूने कभी मरना नहीं ॥ जिस हृदय में....

सारा जीवन रहा करता मनमानियाँ,
सोच पाया ना क्या होगी परेशानियाँ
ना कमाई जीवन में नेकनामियाँ
तेरे पापों में ईश्वर बता क्या करे?
चोट खा के भी तुझको सम्भलना नहीं ॥ जिस हृदय में...

राह कंटक भरी जो बनाई बदल
आजा प्रभु की शरण ताके जाए संभल
शरण प्रभु की करे तेरी राह सरल
ज्ञान वेदों से ले शुभ कर्म कमा,
तुझको आवागमन से क्या तरना नहीं? ॥ जिस हृदय में...

(रजा) मर्जी (अप्रशस्त) बुरा, निन्दनीय

[11]

तर्ज : *ऐरी मैं तो प्रेम दिवानी*

छोड़ ना पाऊँ जग के बन्धन जनम जनम गए बीत
है अन्जानी ये मति मेरी तरसे पागल प्रीत

भजन

प्रभुजी मेरे मन ने दर सके सपने लिए संजोए ॥
प्रभु तेरी! प्रीत है साँची तेरा दर्शन किसविध होय ॥
श्रद्धा के फूलों की माला भक्ति का संगीत
तुझे रिझाने तेरे दर पे लाया अपनी प्रीत
दरस को तरसे ये मन मेरा अंसुवन नैन भिगोय ॥ तेरी प्रभु प्रीत...
विषय विकार लपट बन जाए पापी मन प्रभु रोय
राह ना सूझे तुझ बिन दाता सुधबुध मति सब खोय
पगपग मन भरमाए प्रभुजी राह दिखा दे मोहे
घायल की गति तू ही जाने और न जाने कोय ॥ तेरी प्रभु प्रीत...
सब कुछ तेरा ना कुछ मेरा तेरा संग ही सोहे
और न कुछ मैं चाहूँ तुझसे दरस दिखा दे मोहे
कितने गँवाए जनम प्रभुजी पाप को बोझा ढोय ॥ तेरी प्रभु प्रीत...
प्यार दुलार मैं तुझसे माँगूँ मन प्रभु तुझमें खोय
मात पिता मैं तुझको मानूँ बन्धु सखा तू होय
टेर सुनेगा कौन मेरी ना जग में तुझ बिन कोय
बिनती प्रभु मेरी तारो नैया माँझी मानूँ तोहे ॥ तेरी प्रभु प्रीत...

[12]

तर्ज : *जल के दिल खाक हुआ आँख से रोया न गया*

मन तो चंचल है इसे वश में जरा लाने दो
ईश चरणों में इसे शरण मिले आने दो ॥ मन तो ॥
आए दुःख रोता है मन आँख में आँसू भरभर
धर के धीरज इसे दुःख दर्द को मिटाने दो ॥ मन तो ॥
ये चकाचौंध ज़माना तो बस छलावा है
लोभ में इसके कभी मन को न तुम आने दो ॥ मन तो ॥
मन भटक जाए तो बस मूँद लो आँखें पलभर
मन को खुद अपने ही मन्दिर में ज़रा जाने दो ॥ मन तो ॥
प्रभु के ध्यान में खो जाने दे तू निज मन को
मोक्ष सागर से मन की नैया को तर जाने दो ॥ मन तो ॥
तू 'ललित' मन की डोर दे दे प्रभु के हाथों में
मन को सत्कर्म की सही राह गुज़र जाने दो ॥ मन तो ॥

[13]

तर्ज़ : *हम ही मताएकूचा बाज़ार की तरह*

तुझको प्रभु मिलेंगे जो मन तेरा साफ है
विषयों से दूर है तो समझ प्रभु के पास है ॥ तुझको ॥

विषयों से घिरे मन को अगर है नहीं असर
दिखती हैं राह प्रभु की वो खुद अपने आप है ॥ तुझको ॥

मन में प्रकाश प्रभु का मगर द्वार बन्द हैं
दस्तक तो दे अगर तुझे मिलने की आस है ॥ तुझको ॥

दुःख और दर्द तेरी ही करनी के हैं ये फल
ईश्वर के पास कर्मों का पूरा हिसाब है ॥ तुझको ॥

तेरी हवस न कम हुई हालाँकि सब मिला
जाना नहीं के तुझको जाना खाली हाथ है ॥ तुझको ॥

दिन को तो ना सूकून ना रातों को मिला चैन
माया को जोड़ने में न होशो-हवास है ॥ तुझको ॥

[14]

तर्ज़ : *वो जाना फेर के चितवन (गजल)*

न छोड़ूँ भूलकर चिन्तन प्रभु का
झुका मस्तक करूँ वन्दन प्रभु का ॥ झुका मस्तक ॥

न मन्दिर में न तीर्थ में मिला प्रभु
मेरे मन के मन्दिर में संगम प्रभु का ॥ झुका मस्तक ॥

सजा थाली में लाया प्रेम के स्वर
ये मन वाणी के तारों में गुंजन प्रभु का ॥ झुका मस्तक ॥

न कुछ मेरा प्रभु सर्वस्व तेरा
ये डोरी प्रेम की और बन्धन प्रभु का ॥ झुका मस्तक ॥

[15]

तर्ज : *वादा वफा किया है (गज़ल)*

आया जहाँ में याद तो कर प्रभु को प्यार से
बिन माँगे सब मिलेगा तुझे पालनहार से ॥ आया जहाँ ॥

होगी न मन में शान्ति तो क्या करेगा धन
कर त्याग से कर्म सदा सच्चे व्यवहार से ॥ आया जहाँ ॥

इस बात पर न रो कि ज़माने से क्या मिला
रखना है रख उम्मीद तू केवल दातार से ॥ आया जहाँ ॥

धर्म का हाथ थाम सतत् सत्य कर्म कर
मंजिल बना के मुक्ति को तरजा संसार से ॥ आया जहाँ ॥

किसकी हुई है दुनियाँ कहाँ तक किसी का साथ
साथी तो है प्रभु जो रहे मन के द्वार पे ॥ आया जहाँ ॥

आँसू 'ललित' बचा के तू रख ईश के लिए
स्वागत तू कर प्रभुका इसी अश्रुधार से ॥ आया जहाँ ॥

(अश्रुधार) आँसुओं की बहती धार

[16]

तर्ज़ : *तू इस कदर अपने करीब लगता है(ग़जल)*

तू प्यार अगर अपने प्रभु से करता है
ये बात सच है कि जीवन तेरा सँवरता है ॥ ये बात ॥

जिसे न राग से मतलब न लोभ से सरोकार
वो शक्स त्याग से कर्म निष्काम करता है ॥ ये बात ॥

ये संगी साथी ये नाते न देंगे एक भी साथ
वो इक प्रभु है जो ना तुझसे कभी बिछड़ता है ॥ ये बात ॥

जो तेरी रहमतें हम पर, मैं उससे वाक़िफ़ हूँ
जो कश्ती हाथ में तेरे वही तो को तरता है ॥ ये बात ॥

ये दिल की आरज़ू मुझको क़बूल कर लो तुम
ख़याल दिल से जो निकले तो दिल उमड़ता है ॥ ये बात ॥

'ललित' तू सौंप दे जीवन प्रभुके हाथों में
तेरी मदद तो प्रभु अपने आप करता है ॥ ये बात ॥

(निष्काम) कामना रहित (शक्स) मनुष्य,मानव (रहमत) कृपा, दया

[17]

तर्ज़ : *दो घड़ी वो जो पास आ बैठे*

प्रभु भक्ति में मन लगा लेते–ईश चरणों में सर झुका देते
दर्श प्रभु जी हमें दिखा देते ॥ प्रभु भक्ति ॥

भूल की उम्र भर समय खो के–बीज पापों के मन में यूँ बो के
अब ये जाना के क्या गँवा बैठे ॥ प्रभु भक्ति ॥

प्रेम प्रभु से कभी किया होता–दीनवत्सल को दिल दिया होता
प्रभु प्रीतम को क्यूँ भूला बैठे ॥ प्रभु भक्ति ॥

दास विषयों का रात दिन होके–शुभकर्मों के खो दिए मौके
दाग़ चोले पे क्यूँ लगा बैठे ॥ प्रभु भक्ति ॥

तुझको इक दिन ज़रूर जाना है–कर्म ही जीव का ठिकाना है
चक्र में घूम के क्यूँ आ बैठे ॥ प्रभु भक्ति ॥

(दीनवत्सल) गरीबों पर कृपा करनेवाला, छोटों का स्नेहवान

[18]

तर्ज़ : *रात ढलते ही तुम छुप गए हो कहाँ?*

कौन सी वो जगह तुम नहीं हो जहाँ
तुम जहाँ हो नहीं कोई तुमसा वहाँ ॥ तुम जहाँ हो ॥

ज्वार सागर में धार सरिताओं में है
सूर्य किरणों से प्राण धराओं में है
चाँद की उजले जल में हैं परछाईयाँ ॥ तुम जहाँ हो ॥

तेरी धाक दसों ही दिशाओं में है
इन फ़िज़ाओं में है और हवाओं में है
कैसा बाँधा है सृष्टि का सुन्दर समाँ ॥ तुम जहाँ हो ॥

हम तो पलते प्रभु तेरे सायों में हैं
तेरा प्रेम सदा मन के भावों में है
प्रीत के हर कदम पे है तेरा निशाँ ॥ तुम जहाँ हो ॥

बहता जीवन नदी सा बहावों में है
मेरा हर कर्म तेरी निगाहों में है
नहीं मुक्ति प्रभु मेरी तेरे बिना ॥ तुम जहाँ हो ॥

[19]

तर्ज़ : *मिट्टी से खेलते हो बार बार किस लिए*

पापों में मन लगा है बार-बार किसलिए
जीवन बता तू खो रहा बेकार किसलिए ॥ पापों में...
ना मन का मैल धो सका, किसी का ना तू हो सका
फरेब झूठ में कभी तू, चैन से न सो सका
पापों के हाथ इतना तू लाचार किसलिए ॥ पापों में...
वीरान राह चल के स्वार्थ के तू मद में खो गया
धर्म से दूर होके तू अधर्म संग हो गया
सत्कर्म का विचार भी आया न किसलिए ॥ पापों में...
दुःखी को देख मन में तेरे आई ना कभी दया
दर्दे-शरीक ना हुआ न आँसू पोंछने गया
बेक़स का ना तू बन सका ग़मख्वार किसलिए ॥ पापों में...
इन्सां का जन्म लेके भी न क्यूँ इन्सान बन सका
इन्सानियत का खून करके क्या मिला तुझको बता?
इन्साँ इन्साँ में दुश्मनी का वार किसलिए ॥ पापों में...

(दर्दे शरीक) दुसरे के दर्द में हिस्सा लेनेवाला (वीरान) उजाड़, सुना, (बेकस) मजवुर,लाचार (गमख्वार) दुःख दूर करनेवाला।

[20]

तर्ज़ : *आज सोचा तो आँसू भर जाए*

आज सोचा तो आंसू भर जाए प्रभु चरणों में हम तेरे आए
मन में श्रद्धा लिए सर झुकाए ॥ प्रभु चरणों में...
हम तो भटके हुए हैं मुसाफिर, बिन दया तेरी जाएँ कहाँ फिर
ठोकरों से गए हैं सताए ॥ प्रभु चरणों में...
गहरा सागर नैया बिन सहारे, बिन प्रभु के लगे ना किनारे
बीच सागर में मन घबराए ॥ प्रभु चरणों में...
तेरी प्रीत की रीत न जानें, फिर भी तेरे दरस के दीवाने
भक्तिभाव की भेंट चढ़ाएँ ॥ प्रभु चरणों में...
मन की शक्ति बढ़ा ज्ञान दे दे, तेरे चरणों में प्रभु स्थान दे दे
हम खड़े दाता झोली फैलाए ॥ प्रभु चरणों में...

[21]

तर्ज़ : *रसिक बलमा*

समझ मनवा होऽऽ जग में प्रभु की माया
जिसने प्रभु को रिझाया उसने प्रभु को है पाया ॥ समझ ॥

प्रभु है अनन्त अनादि अनुपम अभय अविनाशी
दर्शन के हम अभिलाषी हो ऽऽऽ(2)
पावन कृपा की छाया.... ॥ समझ ॥

निराकार न्यायकारी, शक्तिमान है हितकारी
लिख लिख के दुनियाँ हारी होऽऽऽ (2)
भेद तेरा ना पाया... ॥ समझ ॥

सच्चिदानन्द सुखकारी दयालू परोपकारी
सृष्टि बनाई न्यारी, हो ऽऽऽ हो ऽऽऽ
वेदों ने तुझको गाया.... ॥ समझा ॥

निर्विकार अन्तर्मायी अजन्मा कृपालु स्वामी
पाते तुझे मुनि ध्यानी हो होऽऽऽ हो ऽऽऽ
तुझे सर्वव्यापक पाया.... ॥ समझा ॥

है आधार सबका ईश्वर, तू नित्य रहे जगदीश्वर
तूने ही मन के भीतर होऽऽऽ(2)
ज्योर्तिमय रूप दिखाया.... ॥ समझा ॥

[22]

तर्ज़ : *नैन सो नैन नाही मिलाओ*

प्रभु चरणों में समय बिताओ, पल पल आए काल विकराल....
रे मना ॥ प्रभु ॥

जीवन की घड़ियाँ चलती रहेंगी, मृत्यु की ओर बढ़ती रहेंगी
पापों से अपने मन को हटाओ
पञ्चशत्रु से निज मन को बचाओ...रे मना ॥ प्रभु ॥
जीवन संग्राम गौरव प्रधान, ओ३म् का नाम अमृत समान
प्रभु चरणों में जीवन बिताओ
आसक्तियों से मन को हटाओ....रे मना ॥ प्रभु ॥
वेद स्वाध्याय ऋषियों की राय, कर्म-योगी का ईश्वर सहाय
ज्ञान सरिता को घरघर में बहाओ
शुभ कर्मों से शुभ जीवन बनाओ....रे मना ॥ प्रभु ॥
मानव का वैभव वेद विचार, मुक्ति के मार्ग का वेद आधार
ऋषियों के वैदिक पथ चलते ही जाओ
वेद मन्त्रों से निज वाणी सजाओ....रे मना ॥ प्रभु ॥

(कर्मयोगी) निष्काम कर्म करनेवाला (पञ्चशत्रु) काम क्रोध लोभ मोह अहंकार-पाँच शत्रु (गौरव) सम्मान, आदर, बड़प्पन, महत्व (आसक्ति) अनुराग, अवलम्बन, (वैभव), यश, दौलत, ठाठबाठ

[23]

तर्ज : *बहार बनके जो आए हो दिल की राहों में*

प्रभु को देख रही है नज़र नज़ारों में, खिले हैं फूल ये रंगी सदा बहारों में ॥
महक गुलों में चहक बुलबुलों पपीहों में ॥ प्रभु को ॥
खड़कते पत्तों में सुर है लचकती डालों में

हरेक वस्तु है चलती तेरे इशारों से, हवाएँ गा रहीं लय में तेरे तरानों को
तरस रहे हैं तेरे दीप जगमगाने को
तेरी ही ज्योत है सूरज व चाँद तारों में ॥ खिले हैं ॥
है राग नदियों का बहती हुई लकीरों में,
गगन को चूमते पर्वत के इन जज़ीरों में
घटाएँ घूम बरसती सहस्त्र धारों में ॥ खिले हैं ॥
जहान कैसा अनोखा सजाया है प्रभुवर,
खुशी से महिमा तेरी गा रहे हैं सब मिलकर
तेरी दया का है सागर खड़े किनारों पे ॥ खिले हैं ॥

(गुल) फूल, पुष्प (जज़ीरा) पहाड़ पर बनी झील

[24]

तर्ज़ : *सितारों से पूछो नजारों से पूछो (राग-पहाड़ी)*

सितारों से पूछो बहारों से पूछो
दिलों में दयानन्द छाए हुए हैं
शहीदों के खूँ आज़माए हुए हैं ॥

जहालत की घनघोर घटाएँ जो छाईं
मुसीबत जहाँ में फिर मँडराई
जहालत मिटाने को आए हुए हैं ॥ शहीदों के ॥

बनेंगे दयानन्द के सच्चे सिपाही
चारों वेदों की जिसने धूम मचाई
हम निष्काम कर्म सिखाए हुए हैं ॥ शहीदों के ॥

'कृणवन्तो विश्वार्यम्' करके दिखाएँ
सारे जहाँ को हम स्वर्ग बनाएँ
ये सपना ऋषि का सजाए हुए हैं ॥ शहीदों के ॥

ध्वजा ओइम् की कर में लेके फिरेंगे
ओइम् नाम से सब के भेद मिटेंगे
ऋषिवर का संदेश लाए हुए हैं ॥ शहीदों के ॥

तरसती हैं तेरे लिए ये निगाहें
तड़पकर निकलती हैं दिलों से सदाएँ
दर्दे दिल की चाहत जगाए हुए हैं ॥ शहीदों के ॥

दयानन्द के भक्तो तुम सो ना जाना
कृपा करके जागो और जग को जगाओ
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि से लाए हुए है ॥ शहीदों के ॥

[25]

तर्ज़ : *तंग आ चुके हैं कश्मकशे ज़िन्दगी से हम*

भूले से भी न भूल सकेंगे ऋषि को हम
दरियादिली ऋषि की बता दें सभी को हम ॥ भूले से ॥

जो प्यार करना ऋषि ने सिखाया जहान को
अपना बना के प्यार करें हर किसी को हम ॥ भूले से ॥

तोड़े ना हम ऋषि की कभी रिश्ताए उम्मीद
वेद प्रचार करें शुरू आज ही से हम ॥ भूले से ॥

वेदों की राह जो न दिखाता ऋषि हमें
कैसे सुनाते हाल अपना बेबसी को हम ॥ भूले से ॥

गुमराहों पर ऐ आर्य निगाहें करम तो कर
ग़फलत को क्या मिटा न सकेंगे कभी भी हम? ॥ भूले से ॥

[26]

तर्ज : *वो तो चले गए हैं दिल*

वेदों का अमृत पिला गया ऐसे ऋषि को याद कर
सोतों को जो जगा गया ऐसे ऋषि को याद कर ॥

छोड़ा जिन्होंने धर्म कर्म आए दयानन्द की शरण
संध्या हवन सिखा गया ऐसे ऋषि को याद कर ॥

लाखों बचे मँझधार से ऋषि लाया किनारे उबार के
अज्ञान भ्रम मिटा गया ऐसे ऋषि को याद कर ॥

आर्य बँधे दस नियमों से ऋषि की अटूट डोर से
निष्काम कर्म सिखा गया ऐसे ऋषि को याद कर ॥

अनमिट लिखी कहानियाँ शहीदों ने अपने ख़ून से
ख़ून का रंग खिला गया ऐसे ऋषि को याद कर ॥

काबिल 'ललित' तू इतना कहाँ जो लिख पाए कह पाए तेरी जुबाँ
जिसकी मिसाल कहीं न आज ऐसे ऋषि को याद कर ॥

[27]

तर्ज़ : *बदली से निकला है चाँद*

टंकारा से आया वरदान ना देखा जग ने
ऋषि दयानन्द सा महान ॥ टंकारा ॥
देश की दशा पे ऋषिवर नैन भर रोए, देख गुमराहों को चैन से न सोए
समझ ना सके ऋषि को लोग थे नादान ॥ टंकारा ॥
छूआछूत ऊँच नीच के भेद मिटाने, आया दयानन्द सबको गले से लगाने
पतितों का दयानन्द ने किया उत्थान ॥ टंकारा ॥
पाखण्डियों ने अपने पंथ थे चलाए, पञ्जों में जकड़े लोग ऋषि ने छुड़ाए
मतवादियों की कर दी नींद हराम ॥ टंकारा ॥
बैठे थे लोग वेदों को भुलाए, फैले थे सदियों से रूढ़ियों के साए
वेदविहीनो को दिया सत्य का ज्ञान ॥ टंकारा ॥
जन गण मन को सही मार्ग दिखाए, दीप जो भी बुझ चुके थे ऋषि ने जलाए
अपने गुरु के पूरे किए अरमान ॥ टंकारा ॥
मृत्यु से डराया विष के प्याले पिलाए, डरके मृत्यु ने अपने प्राण बचाए
दान दया का बाँट के पाया प्रभुधाम ॥ टंकारा ॥

[28]

तर्ज : *दिल उनको उठा के दे दिया*

दयानन्द देश को जगा गया अपने पुरुषार्थ से
चलके सन्मार्ग पे पर्दा अज्ञान का हटा गया ॥ दयानन्द देश...
जुल्मों से हुआ सामना दर्द उफ ना कोई आह ना
कष्ट सहते गए पर ना विचलित हुए कष्ट भी मुश्किलों में पड़ गया
॥ दयानन्द देश...

धरती वेदों की थी सो गई पराधीन धरा हो गई
वेद शिक्षा हुई धर्म रक्षा हुई धर्म वैदिक ऋषि बता गया ॥ दयानन्द ॥
वेद पढ़ना था और था पढ़ाना वेद सुनना था और सुनाना
वेद कर्मी बने आर्य धर्मी बने वेद पूर्ण ज्ञान है बता गया ॥ दयानन्द ॥
ऋषि के हाथों में ध्वज ओ३म् का भाईचारा था हर कौम का
सिक्ख ईसाई थे मुस्लिम भाई भी थे समदृष्टि ऋषि दिखा गया ॥ दयानन्द ॥
काम ऋषि का था हित चाहना मन में कोई ना वैर भावना
धर्म आधार था कर्म निष्काम था शुद्ध आचरण ऋषि सिखा गया ॥ दयानन्द ॥
युग प्रवर्तक को क्यों भूले हम क्यों न थामे ऋषि का दामन
मिलके चलते रहें हम कदम-कदम ऋण चुकाने का वक्त आ गया ॥ दयानन्द ॥

[29]

तर्ज : *गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा*

उजड़ा हुआ था गुलशन दयानन्द ने सँवारा
जय जय ऋषि तुम्हारा ॥

वो रात धन्य आई नूतन प्रभात लाई
टंकारा की धारा पर रवि किरण जगमगाई
इक नन्हीं सी किरण से फैला प्रकाश सारा ॥ जय जय ऋषि ॥

जो खेलने के दिन थे आँसू बने खिलौने
शंकर का मूलशंकर चला सच्चे शिव का होने
ममता की चाह छोड़ के घर से चला दुलारा ॥ जय जय ऋषि ॥

ऋषि को तो ना फिकर थी काँटों भरी डगर की
परवाह न थी खारों के तपते हुए सफर की
बर्फों के पर्वतों पे जीवन कठिन गुज़ारा ॥ जय जय ऋषि ॥

घर सबके जल रहे थे नफरत में पल रहे थे
भाई के ख़ूँ के प्यासे भाई ही बन रहे थे
अच्छा हुआ जो हमने देखा नहीं नजारा ॥ जय जय ऋषि ॥

मर्यादा मनु की छूटी हर बात थी अनूठी
सब दे रहे थे जग को धर्मो की आस झूठी
बिगड़े हुए समाज को दयानन्द ने सुधारा ॥ जय जय ऋषि ॥

नारा स्वतन्त्रता का ऋषि ने प्रथम लगाया
विधवा अनाथ गौओं को अपमान से बचाया
पत्थर की चोट खा के ऋषि लक्ष्य से ना हारा ॥ जय जय ऋषि ॥

वैदिक धर्म का प्यारा युग का चमकता तारा
दयानन्द सा जहाँ में नहीं दूसरा पधारा
जो गया तो रो दिया नगर कूचा गली चौबारा ॥ जय जय ऋषि ॥

[30]

तर्ज : *देखो वो चाँद चुपके करता है क्या इशारे*

देखो वो ऋषि दयानन्द दिल में बसे हमारे
शायद जगे थे भाग्य जो ऋषिवर यहाँ पधारे, हो गए हमारे
ऋषि हम हुए तुम्हारे, तुम हुए हमारे ॥ देखो ॥

ब्रह्मचर्य के ऋषि ने जौहर अजब दिखाए
भयभीत हो के भागे दुश्मन जो बन के आए
दुश्मन भी मित्र बनकर ऋषि पर गए थे वारे ॥ देखो ॥

विधवा सति अनाथों को ऋषि तारने थे आए
समदृष्टि और दया से अधिकार सब दिलाए
जितने भी काज बिगड़े पुरुषार्थ से सँवारे ॥ देखो ॥

ईश्वर के गुण थे जितने ऋषि ने हमें बताए
इक ओ३म् नाम से ही कई भेद थे मिटाए
उस ओ३म् के पुजारी ने जीवन के कई सुधारे ॥ देखो ॥

कर्मों से कृष्ण बनकर दया राम सी दिखाई
वेदों की सत्य वाणी घर घर में जा सुनाई
पाखण्डी पापी दम्भी शास्त्रार्थ करके हारे ॥ देखो ॥

संयम तप और भक्ति का संगम कहाँ से लाए
उसपर भी क्या गजब है इक पल न डगमगाए
वाह रे! ऋषि दयानन्द कैसी अजब प्रभा रे ॥ देखो ॥

जितने ज़हर पिलाये उतना निखर के आए
तपकर बने थे कुन्दन रवि तुल्य जगमगाए
दयानन्द ऋषि की बोलें जय एक स्वर से सारे ॥ देखो ॥

[31]

तर्ज : *शिकायत क्या करूँ दोनों तरफ*

दयानन्द क्या करूँ वैदिक धर्म आगे चलाना है
मेरे आगे तेरा आदर्श जो जीवन भर निभाना है ॥ दयानन्द ॥

ज़माने भर में तेरा नाम और चर्चा है ऐ ऋषिवर
अभी तो नाम का चर्चा बहुत ही दूर जाना है ॥ मेरे आगे ॥

तेरे कष्टोंसे मुखरित हो गया आर्यों का भारत देश
तेरे इस त्याग का जादू ज़माने पर चलाना है ॥ मेरे आगे ॥

जहालत से भरे जग का बना था तू ऋषि रहबर
ये हालत फिर से आई है जहालत को मिटाना है ॥ मेरे आगे ॥

तेरे तर्कों के तरकस ने मिटा डाले भ्रमों के जाल
भ्रमों के जाल और जंजाल को जगसे मिटाना है ॥ मेरे आगे ॥

जो पत्थर ईंटे खाई तुमने ऋषिवर अपने सीने पर
जमाकर जतन से इनको दया का महल बना है ॥ मेरे आगे ॥

मुसलमाँ जैनी सिक्ख हिन्दू ईसाई को बना बन्धु
ऋषि के ओ३म् के झण्डे तले लाकर मिलाना है ॥ मेरे आगे ॥

जो हँस के त्याग से ऋषि ने लगा दी प्राण की बाज़ी
वो प्राण इक प्रण में बदलेगा यहीं से आगे जाना है ॥ मेरे आगे ॥

सच्चाई का सजग डंका जो ऋषिवर ने बजाया था
वो डंका आखिरी दम और कदम तक बजते जाना है ॥ मेरे आगे ॥

बनाई और बनाकर बाँध दी कड़ी प्रेम की ऋषि ने
कड़ी मेहनत से जो बन गई कड़ी उसको बढ़ाना है ॥ मेरे आगे ॥

चले काँटो की राहों पर मगर हम को दिए हैं फूल
जो आएँ कष्ट फूलों की तरह यूँ मुस्कुराना है ॥ मेरे आगे ॥

दशा जो देख भारत की बहाए दर्द के आँसू
उस इक इक मोती की कीमत 'ललित' हमको चुकाना है ॥
मेरे आगे ॥

[32]

तर्ज़ : *इन्तज़ार और अभी और अभी*

(ऋषि निर्वाण)

आई दिवाली काल कराल की बन गई काली धूल
अपने हाथों दीप बुझाया कैसी हो गई भूल ॥
आई थी भोर सुनहरी वो हमें छोड़ गई
ऋषि दयानन्द की यादों से हमें जोड़ गई ॥ आई थी...

ज्योत बुझी अँधियारा कर गई बुझे गगन के तारे
इक इक कर रवि शशि भी बुझ गए शोक में डूबे सारे ॥ आई थी...
भोर भई पर ऋषि ना आए याद ऋषि की आई
लाखों दीए जला कर गया, ऋषि हर दीए में दिए दिखाई ॥ आई थी...

[33]

तर्ज़ : *दिल से भुला दो तुम हमें हम ना तुम्हें भुलाएँगे*

श्रद्धा के फूलों से ऐ ऋषि यादों को दिल में सजाएँगे
सत्य की बाती से दिपक ज्ञान का मन में जलाएँगे ॥
हम ना तुम्हें भुलाएँगे ॥

नजरों से क्यूँ था गिरा दिया धर्म के ठेकेदारों ने
गिरतों को प्रेम से ऋषि ने अपने गले लगा लिया
सींचे ऋषि ने खूने चमन कैसे भला मुरझाएँगे ॥ सत्य की...

गुरुकुल ऋषि बना गया आदर्श शिक्षा बता गया
विधवा सति गौ अनाथों को अपना हक दिला गया
मन्त्र स्वराज्य का ए ऋषि हर दौर में दोहराएँगे ॥ सत्य की...

ऐसी थी धर्म की लगन जैसी किसी दीवाने की
सत्य की खातिर मिट जाने की मिटते हुए परवानों की
सत्य के उजले प्रकाश को हम घर घर तक फैलाएँगे ॥ सत्य की...

वैदिक धर्म संध्या हवन से मन में बसाया ओउम् को
दिल में दया अटूट थी, प्यार दिया हर कौम को
घातक को गले लगा लिया हम तुझको गले लगाएँगे ॥ सत्य की...

[34]

तर्ज़ : *दुनियाँ ना भाये मोहे*

दयानन्द आए हम सर को झुकाए चरणों में चरणों में
शिव के दर्शन को ऋषि तरसे गुरु के चरणों में आए
बाँट दिया गुरुज्ञान को जग में शिष्य गुरु के कहलाए
ज्ञान के ये मोती रखना है सम्भाले चरणों में चरणों में ॥ दयानन्द...
तेरी दया से दीन दुःखी के भाग्य जो सोए थे जागे
तूने बजाई वेद की बन्सी सारी दुनियाँ के आगे
अपने भी आए संग आए पराए चरणों में चरणों में ॥ दयानन्द...
ईंट पत्थर की चोटें खा के अमृत के प्याले बाँटे
तुमने कृपा की दुष्टों पर जो विष के प्याले दे जाते
शर्मसार होते काले मुँह को छुपाए चरणों में चरणों में ॥ दयानन्द...
वेद ज्ञान सागर छलकाए मतवादी डर के भागे
तर्क से सत्य उजागर करके वेद के मार्ग पे ले आए
शत्रु जो बने थे ऋषि के मित्र बनके आए चरणों में चरणों में ॥ दयानन्द...
ऋषिगीत मेरे संग सहारे मन की उमँगों में जागे
तेरे गीत मैं कैसे गाऊँ नीरस वाणी तो जागे
गीत स्वरों की माला भेंट चढ़ाए चरणों में चरणों में ॥ दयानन्द ॥

[35]

तर्ज़ : *मेरे लिए वो गमे इन्तजार*

दिलों की तह में ऋषि अपनी याद छोड़ गए
गए तो ऐसी अनोखी बहार छोड़ गए ॥
ज़ुबाँ से कुछ न कहा अपने दुःख के बारे में
पराए दुःख में ऋषि सुख का साथ छोड़ गए ॥ गए तो...
हज़ारों कष्ट भी ऋषि के कदम पलट ना सके
धरम पे चलते कदम त्याग तप की ओर बढ़े ॥ गए तो...
उधर अधर्म इधर महर्षि अकेला था
ऋषि के सत्य के आगे अधर्मी दौड़ गए ॥ गए तो...
इसी ख़्याल से ऋषि ने बनाया आर्य समाज
हरेक आर्य को वैदिक धर्म से जोड़ गए ॥
ऋषि को विष में भी अमृत दया के घूँट दीखे
घातक की बेड़ियाँ अपनी दया से तोड़ गए ॥ गए तो ॥
दया थी दिल में हँसी मुख पे जाँ सफर पर थी
'प्रभु की इच्छा' थी प्रभु से वो नाता जोड़ गए ॥ गए तो ॥

[36]

तर्ज : *ऐ मेरे वतन के लोगों*

ऐ मेरे वतन के लोगो जयकार ऋषि की लगाओ
ये शुभदिन है हम सबका, हुआ वेदों का उजियारा
मत भूलो धर्म की खातिर दयानन्द ने प्राण गँवाए
तुम याद श्रद्धा से कर लो, तुम याद श्रद्धा से कर लो
जो धर्मवीर कहलाए, जो धर्मवीर कहलाए
ऐ मेरे वतन के लोगों दयानन्द की सुनो कहानी
विष पिए धर्म की ख़ातिर ज़रा याद करो कुरबानी ॥
थे खेल के दिन बचपन के अंकुर थे ज्ञान के फूटे
शिव के दर्शन के वादे इक इक कर निकले झूठे
पत्थर के शिव की पूजा लगती रही बेमानी ॥ विष पिए...

जब हुई बहन की मृत्यु तब कुछ ना समझ में आया
अमरत्व का प्रश्न उठा फिर तब मूलशंकर भरमाया
चाचा की मृत्यु पर रोया शिशु आँख में भर भर पानी ॥ विष पिए...

वैरागी शिशु ने शिव की राहों में आँख बिछा दी
सच्चे शिव दर्शन देंगे ये मन में आस लगा ली
समझाया सबने मिलकर पर बात किसी की न मानी ॥ विष पिए...

घर त्याग के निकला बालक सत्य ज्ञान की शिक्षा पाने
लालायित हुआ वो बालक गुरुओं की दीक्षापाने
और ज्ञान लिया वर्षों तक ना दूर परेशानी ॥ विष पिए...

आखिर गुरु विरजानन्द संग दयानन्द हुए अति ज्ञानी
गुरु की हर आज्ञा ऋषि ने मन वचन कर्म से मानी
ऋषि गुरुभक्त ऐसे थे ना उनका कोई सानी ॥ विष पिए...

गुरु वचन बना गुरु दक्षिणा, जग का अन्धकार बताया
ऋषि दयानन्द को गुरुने सुप्रकाश का मार्ग सुझाया
निज मोक्ष मार्ग को त्यागा, केवल गुरु आज्ञा मानी ॥ विष पिए...

कोई सिक्ख कोई मुस्लिम जैनी कोई हिन्दू कोई ईसाई
अन्धकार में डेरा डाले जा रहे ठगे थे भाई
बहकाते रहे लोगों को पाखण्डी और अज्ञानी ॥ विष पिए...

लानत दी और फटकारा पाखण्डी किए किनारा
शास्त्रार्थ किए मतवादी था वेद ऋषिको प्यारा
वहाँ खड़े थे लोभी कामी यहाँ ऋषि सत्य संग्रामी ॥ विष पिए...

था मान नहीं नारी का गौओं का वध करते थे
दुःखियों को सताते अभिमानी दुराचारी मद करते थे
संघर्ष की ऋषि ने ठानी दुर्दशा सही पहचानी ॥ विष पिए...

परमेश्वर की सत्ता पर ना जाने कितने मत थे
सब अपनी बात मनाने अपने स्वार्थ में रत थे
वेदों के तर्क से निखरी वेदों की ईश्वर वाणी ॥ विष पिए...

उस ओर थे स्वार्थी अधर्मी इस ओर थे ऋषि सुकर्मी
धूर्तों को चली न मरजी फिर ऋषि को दिए ज़हर भी
ऋषि ने तो केवल ठानी ऋत् सत्य की ज्योत जलानी ॥ विष पिए...

यह बात सिद्ध की ऋषि ने ईश्वर अवतार न लेते
ना पिता कोई ईश्वर का ना ईश्वर बनते बेटे
ईश्वर अविनाशी अजन्मा इसमें न कोई हैरानी ॥ विष पिए...

जब पूछा फिरंगियों ने क्या कष्ट यहाँ तुम्हें ऋषिवर
तब कहा कि राज गुलामी का ना हुआ कभी है बेहतर
तुम छोड़ो भारत देश को मञ्जूर नहीं है गुलामी ॥ विष पिए...

सोलह विष प्याले पीकर बदले में अमृत-बाँटे
ऋषि बना धर्म का प्यारा दुःख पाकर भी सुख बाँटे
जब अन्तिम ज़हर पिया तो कह गए वो जाते जाते
ना त्यागना तुम वेदों को आओ हम प्रण करते हैं
थे धर्म के ऋषि दीवाने योगी ऋषि तपी थे स्वामी
ना भूले जग दयानन्द को इसलिए कही ये कहानी
दयानन्द दयानन्द की जय हो दयानन्द, दयानन्द, दयानन्द

[37]

मत भेद करो इन्सानों का मतभेद नहीं है ये अच्छा
इन्सां को जो इन्सां समझे मानव केवल वो ही सच्चा ॥

इन्सानियत में नियत इन्सां की पाक नहीं है जब तलक
देश की एकात्मकता भी संभव नहीं है तब तलक,
मानव हित में देश का हित है जाने ये बच्चा बच्चा ॥ इन्सँा को...

धर्म नहीं है इन्सानों का जो आपस में द्वेष करें
छोटी-छोटी व्यर्थ हैं बाते क्या उसमें हम क्लेष करें
देश के भूमि पुत्र बनो तुम रखो देश हँसता हँसता ॥ इन्सँा को...

मन्दिर मस्जिद और बुतों पे भूले से भी करो ना झगड़ा
ना समझो इसमें होता है भारी कभी किसी का पलड़ा
चलते चलते देश के रथ का रुक जाता चलता चक्का ॥ इन्सँा को...

ईद दिवाली क्रिसमस के रंग देखो लगते कितने प्यारे
इक दुजे की खुशी में झूमे भारत देश के वासी सारे
ऋषिमुनि सूफीओं ने खोजा यहाँ सत्यज्ञान का रस्ता ॥ इन्सँा को...

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई आपस में हैं सब हैं भाई
आत्मा में जब भेद नहीं इन्सां के बीच है क्यूँ कर खाई
फर्क पड़े ना जाओ चाहे मथुरा, गोवा या मक्का ॥ इन्सँा को...

एक है कुटुम्ब कबीला देश का रिश्ता केवल मन से मन का
हृदय विशाल हो इक इक जन का एक हो नारा सदा अमन का
सम दृष्टि हो रहे मित्रता, मैत्री भाव में अटूट श्रद्धा ॥ इन्सँा को...

हिन्दुस्तान की सब हैं धरोहर सबकी अपनी क़ीमत जौहर
जैसे एक ही बाग में खिलते भाँति भाँति के पुष्प मनोहर
दिखला दो तुम सारे जहाँ को सत्य पे आधारित सत्ता ॥ इन्सँा को...

[38]

एक समय ऐसा था भारत थी सोने की चिड़िया
आओ मिल समृद्ध बनाएँ अपना प्यारा इन्डिया ॥

गाँव गाँव में हरियाली हो बाँध नदी में पानी हो
धन और धान्य की दीवाली हो खेतों में खुशहाली हो
पूरे हो अरमाँ किसान के आँख में चमके खुशियाँ ॥ आओ मिल...

देश की रक्षा में सैनिक हों धीर वीर अर्जुन कीं भाँति
अविष्कारों से वैज्ञानिक लाएँ देश में अद्भुत क्रान्ति
अतिक्रमण जो करे शत्रु उड़ जाएँ उनकी धज्जियाँ ॥ आओ मिल...

कल कारखाने और मिलों की देश में कहीं कमी ना हो
देश में हो उत्पादन इतना भीख की नौबत कभी ना हो
देश का रथ हो चाँदी का और सोने का पहिया ॥ आओ मिल...

सच्चे नेता नेतृत्व करें और देश में कभी उठे ना भ्रांति,
अपने सब कर्तव्य समझकर वो लाएँ सुख और शान्ति
एक सूत्र में बाँधे सबको जोड़ें प्रेम की कड़ियाँ ॥ आओ मिल...

विविध रूप में एक रूपता यही दर्शन है भारत का
यहीं जन्म ले हमने सीखा पाठ सदा निस्वार्थ का
हे मातृभूमि हम धन्य हों तेरे पुत्र और पुत्रियाँ ॥ आओ मिल...

आओ फिर से राम राज्य को धरती पर ले आएँ
मानव को मानव से जोड़े सत्य धर्म अपनाएँ
देश का नाम उजागर कर ऋण माटी का चुकाएँ
सत्ता भारत की मानेंगे, यूएस, चायना, रशिया ॥ आओ मिल....

[39]

शहीदों ने वतन की इक नई तस्वीर बनाई है
वतन की मिट्टी में खुशबू ही खुशबू तब से आई है ॥
आज़ादी जो मिली हमको शहिदों की विरासत है
जो दे दी जाँ वतन को ज़िन्दगानी की वो लागत है
हर हिन्दुस्तान का बेटा शहीदों का करजाई है ॥ शहीदों ने ॥

भगत सुखदेव जैसे सैकड़ों कई और वीरों ने
खुशी से दे दिया जीवन वतन के वीर शेरों ने
कहाँ मरते हैं ऐसे नौजवाँ कहाँ उनकी विदाई है? ॥ शहीदों ने ॥

जवाहर देश के थे और रतन गाँधी के जैसे थे
बहादुर लाल माँ के थे और चन्द्र सुभाष जैसे थे
ये झाँसी की ही रानी आँधी बन गोरों पे छाई थी ॥ शहीदों ने ॥

विठ्ठल वल्लभ के जैसे लोह पुरुष जन्मे भारत में थे
दयानन्द जैसे योग़ी भी समाज के सुधारक थे
लहर ठंडी विवेकानन्द परमहंस ने लाई थी ॥ शहीदों ने ॥

शिवाजी वीर थे, शत्रु की नींदे तक उड़ाई थी
वतन की माटी को अपने ही माथे से लगाई थी
अमन के वास्ते ही तो वतन की ये लड़ाई थी ॥ शहीदों ने ॥

ना सिक्ख था कोई हिन्दु ना कोई मुसल्माँ था
सभी को मिलके हिन्दुस्ताँ का मुस्तकबिल बदलना था
फिरंगीयों के दाँतों में शिकस्तों की खटाई थी ॥ शहीदों ने ॥

अमर हो तुम शहीदो ओर तुम्हारी ये कहानी भी.
वतन के बच्चे बच्चे को कहानी है सुनानी भी
वतन की जिम्मेदारी इन शहिदों ने सिखाई है ॥ शहीदों ने ॥

[40]

विश्वशान्ति के साधक हैं हम, विश्वशान्ति है ध्येय हमारा
युद्ध विहीन हो विश्व का सपना, सदा बहे प्रेम की धारा ॥

तीन बार लड़ चुके लड़ाई, सोचो कितना महँगा सौदा?
वीर, शत्रु धनमाल गँवाए, एक नहीं दोनों ने भोगा,
पाक के रहे नापाक इरादे द्वेष ने उसको सदा ही मारा ॥ विश्व शान्ति...

चाँद प्राप्त करना शिशु चाहे, ये तो उसकी नादानी है
पाक भी चाहे काश्मीर, ये पागलपन की निशानी है,
लूट खसोट ही उसकी नीति, उसके छल ने उसे ही मारा ॥ विश्व शान्ति...

मौत की क्यों कर फसल उगाएँ जीवन के खलिहानों में
मानव धन निर्मूल्य नहीं है जो हो भेंट स्मशानों के,
भारतवर्ष है दूत शान्ति का सब देशों से भारत न्यारा ॥ विश्व शान्ति...

रूसी बम हों या अमरीकी, युद्ध तो एक बहाना है
क्या इतने संकुचित हृदय हैं खून में जिन्हें नहाना है
खून से लथपथ मानवता ने ए मानव है तुझे पुकारा ॥ विश्व शान्ति...

मिसाईलें हों या बमबारी सभी ओर मानवता हारी
जितनी जिसको बँटी है धरती, वही उसीकी है फुलवारी
साथ साथ मिल रहें पड़ोसी, बनें एक दूजे का सहारा ॥ विश्व शान्ति...

सुख शान्ति के नियम वेद में संयम रखें जो बुद्धिस्तर पे
सम विचार हों एक रहे मन, वैर द्वेष वैमनस्य भ्रम मिटें,
प्रेम के सूत्र में बँधे रहें हम, लक्ष्य प्राप्त हो हमें हमारा ॥ विश्व शान्ति...

तू जग का आसरा

[1]

तर्ज़ : *न आसमां ना सितारे फरेब देते हैं*

तू जग का आसरा सब का तू ओ३म् प्यारा है
तू ही पिता तू ही बन्धु सखा हमारा है ॥
तलाश क्यूँ करूँ मरुस्थल पहाड़ या बन में
इधर उधर क्यूँ मैं भटकूँ जो पाऊँ निज मन में
जो आँख मूँद लूँ घट में तेरा नज़ारा है ॥ तू ही पिता....
प्रकाशमय है तू तुझसे प्रकाश पाते हैं,
तू आत्मज्ञान का है दाता ये वेद गाते हैं,
जो भक्त आए शरण तेरी उनको तारा है ॥ तू ही पिता....
मैं चल पड़ा हूँ प्रभु वेद मार्ग पर तेरे,
प्रबल विचार हों प्रभु यज्ञमय सदा मेरे,
न हूँ निराश पता जब कि तू सहारा है ॥ तू ही पिता....
तुझे विसार नहीं चाहूँ मैं जन्म खोना,
न पाई तेरी शरण अन्तकाल है रोना,
मैं जानूँ जन्म ये मिलता नहीं दुबारा है ॥ तू ही पिता....

[2]

तर्ज : *चाँद मध्यम है आसमाँ चुप है*

ओ३म् जपने में लगा चित्त है
ओ३म् के जाप में बड़ा हित है ॥
ओ३म् है शुद्ध स्वरूप रहता शाश्वत
ओ३म् गुरु-मंत्र और दुःख नाशक
ओ३म् है कर्ता और विधाता है
उसका सिमरन नियम से करते हैं ॥ ओ३म् जपने में......
सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार
उस अनुपम से प्यार करते हैं
सृष्टिकर्ता है ओ३म् सर्वाधार
उसकी करुणा का पात्र बनते हैं ॥ ओउम जपने में......
ओ३म् की शरण में 'ललित' आजा
ज़िन्दगी फिर तेरी रहे ना रहे
सार्थक जिन्दगी को करना है
करले चिन्तन कि खुद की सुध न रहे ॥ ओ३म् जपने में...

[3]

तर्ज : *ऐ मेरे प्यारे वतन ऐ मेरे बिछड़े चमन*

तुम बसो प्रभु मेरे मन पाऊँ मैं तेरी शरण दे दो अमृत दान
तू ही सच्चिदानन्द स्वरूप तूही प्रभु ज्योति स्वरूप मन में तेरा ध्यान ॥
सूर्य चन्द्र सितारों का प्रभु कैसा अनुपम दीना दान
धरती रत्नों से सजाई और सजाया आसमान
ये नज़र देखे कहाँ तक मन करे कितनी उड़ान मन में तेरा ध्यान ॥
सूर्य चन्द्र सितारों का प्रभु कैसा अनुपम दीना दान
धरती रत्नों से सजाई और सजाया आसमान
ये नज़र देखे कहाँ तक मन करे कितनी उड़ान मन में तेरा ध्यान ॥
तेरे पावन ओइम् नाम में हैं बसे चारों ही धाम
तेरी महिमा गा रहे हैं नारी नर सब सुबह शाम
सर्वगुण सम्पन्न तू प्रभु तू है सर्वशक्तिमान्, मन में तेरा ध्यान ॥
जो निरन्तर ध्यान करते उनको देता तू प्रकाश
साधकों के शुद्ध हृदय कर तू करे पापों को नाश
है सदा तुझको प्रभु हर भक्त की पूरी पहचान, मन में तेरा ध्यान ॥
तेरी भक्ति प्यासे भक्तों के लिए है जल समान
तू बुझाए प्यास भक्तों का करे जीवन कल्याण
तेरे दर्शन को प्रभु जाए तड़प भक्तों के प्राण, मन में तेरा ध्यान ॥
गोद में अपनी बिठा प्रभु प्यार दे माता समान
और कभी बनके पिता तू ही कराता अमृतपान
पाते सुख आनन्द तुझसे भक्त पाते मोक्ष धाम, मन में तेरा ध्यान ॥

[4]

तर्ज : *जब दीप जले आना*

मनमीत प्रभु आना, तेरी ज्योत जगा जाना
प्रेम पतंगा बनकर चाहूँ तेरी ज्योत पे मंडराना ॥
मैं काम क्रोध विसारूँगा ना लोभ मोह से हारूँगा
संयम धीरज दे दो प्रभुजी नादान मैं अन्जाना ॥

मैं यज्ञमय भाव विचारूँगा अनमोल है जीवन तारूँगा
तेरे वेद ज्ञान के अमृत की इक बूँद पिला जाना ॥
सत्कर्म की राह निहारूँगा सुख दुःख में तुझे पुकारूँगा
तेरी महाशक्ति है हे दाता उद्धार करे जाना ॥
तेरा प्रेम हृदय में उतारूँगा मन को अपने मैं सँवारूँगा
तेरी प्रीत के आँचल में प्रभुजी मुझे आश्रय है पाना ॥
नित ओ३म् का जाप लगाऊँगा तेरे गीतों से आनन्द पाऊँगा
आत्मा परमात्मा सरस्वती का संगम है लाना ॥
अंतः नैनों से बुहारूँगा कह पिता पिता मैं पुकारूँगा
मन द्वार सजाकर बाट तकूँ मेरे प्रीतम आ जाना ॥
शम दम श्रद्धा को धारूँगा तन मन धन तुझपर वारूँगा
कैसे संभव तव कृपा बिना तेरे दर्शन पा जाना

[5]

तर्ज : *लगन तो से लागी*

ऐ मन ओ३म् नित जपना (2)
कर प्रभु से प्यार जीवन सुधार पछताएगा तू वरना ॥ ऐ मन...
सुत नारी सोना चाँदी घरबार के सपन सजाए
त्याग अहिंसा प्रेम दया के क्यूँ ना रतन कमाए
आत्मिक रत्नों से ऋषियोंने राह प्रभु की खोजी ॥ ऐ मन...
भटक भटक जन्मों से हारे भोगे सुख-दुःख सारे
आए जितने भक्त शरण में इक इक करके तारे
सदा समर्पित भक्त पे क्यूँ कर प्रभु कृपा ना होगी? ॥ ऐ मन...
सत्यज्ञान पाले वेदों से प्रीत प्रभु से होगी
जिसके कारण जन्म मिला है सद्गति भी हो होगी
श्रद्धा प्रेम से हो प्रभु आश्रित ना बन जाना भोगी ॥ ऐ मन...
अन्तरिक्ष द्युः पृथ्वी में भी ओ३म् की जलती ज्योति
ओ३म् से मन बुद्धि आत्मा भी सदा प्रकाशित होती
ओ३म् ही पालक ओ३म् ही रक्षक ओ३म् ही मित्र सह्योगी ॥ ऐ मन...

[6]

तर्ज़ : *नादर दिन ताना देरे ना ऽ ऽ*

सिमरन करूँ ओ३म् का (2)
आनन्द जगे रोम रोम का ॥ सिमरन करूँ...
जीवों के लिए संसार दिया
कैसा अद्‌भुत उपकार किया
शरणागत का उद्धार किया
तुझसे बेहतर सखा प्रभु कौन सा ॥ सिमरन करूँ...
अन्धकार मिटे मेरे मन से
आत्मा हो प्रकाशित शम दम से
करूँ त्याग सदा तन मन धन से
जीवन है मिला अनमोल सा ॥ सिमरन करूँ...
दे दो सत्य ज्ञान की उजली किरन
पाऊँ जिससे प्रभु तेरी शरण
छूटे दुःख कष्ट ये जन्म मरण
ज्ञान अमृत बहे तेरे सोम का ॥ सिमरन करूँ...
मेरी श्रद्धा विश्वास कहे
तेरा प्रेम सदा मेरे मन में बहे
तेरी वेदवाणी से प्यार रहे
आशुतोष हैं तू प्रभु मोम सा ॥ सिमरन करूँ...

[7]

तर्ज : *बन चले राम रघुराई*

है ओ३म् नाम सुखदायी, चहूँ दिशी तेरी प्रभुताई...
तेरी शरण सुहाई, है ओ३म् नाम...
प्रभु बिन सूना मन का मन्दिर, ज्ञान की ज्योत बुझाई...
विवश आत्मा बिलखत डोले, राह ना देत सुझाई
है ओ३म् नाम...

पाँचतत्व की मानुष काया, पाँच में जा के समाई
माटी का था पात्र ये नश्वर, काहे प्रीत लगाई
देह को समझा सुख का साथी, मोह में मति भरमाई
है ओ३म् नाम...

माटी के इस घर में प्रभुजी, ज्ञान का दीप जलाओ
दूर करो मन का अन्धियारा, ज्योतिमार्ग दिखाओ
हरो मोह माटी का मेरा, मोह बड़ा दुःखदाई
है ओइम् नाम...

प्रीत मेरी तड़पे प्रभु तुझ बिन, ज्यूँ बछड़े बिन गाई
आनन्दन आनन्द रस भर दे, परम-प्रीत मनभाई
है ओइम् नाम...

(बिलखत) रोते हुए, विलाप करते हुए (अनुपम) विचित्र (आनन्दन) सुखकर, आनन्द देनेवाला

[8]

तर्ज़ : *दीवारों से मिलकर रोना अच्छा लगता है*

तेरा प्रेम और चिन्तन प्रभुजी अच्छा लगता है
इक दिन तुमको पा जाऊँगा ऐसा लगता है ॥
संगी साथी जब तक तू प्रभु जीवन है अनमोल
दो दिन का है जीवन फिर भी सच्चा लगता है ॥ इक दिन...

वाणी में दो प्रेम अनूठा हर ले सबका मन
ऐसे बोलों मेंना पैसा धेला लगता है ॥ इक दिन...
वैर और द्वेष ना जागे मन में ना हो जिससे क्लेष
प्रेम अगर हो मन में, पराया अपना लगता है ॥ इक दिन...

त्याग दया उपकार अहिंसा सत्कर्मों का खेल
योगी ऋषि मुनि और सन्तों ने खेला लगता है ॥ इक दिन...
तेरे नियमों का पालन ही मेरा जीवन ध्येय

मुझको राह सुझाने में क्या तेरा लगता है ॥ इक दिन...
शरणागत को शरण में ले लो थामों में मेरी बाँह

तू केवल अपना बाकी सब सपना लगता है ॥ इक दिन...

[9]

तर्ज़ : *मेघा छाए आधी रात*

प्रभु इस जहान में सजाई कैसी बगिया......देखकर हैरान हूँ ॥
गन्ध उड़ाए स्वर से गाए पवन हर ले जिया
हँसती गाती बहती जाती प्रेम लहर में नदिया
मिल गया सागर का साथ अजब तेरी दुनियाँ......देखकर हैरान हूँ ॥
प्रभु इस जहान...

सूरज चाँद सितारों ने आधार प्रभु का लिया
सारे विश्व को प्रभु कृपा ने ही प्रकाशित किया
है प्रभु तू सर्वाधार अजब तेरी महिमा......देखकर हैरान हूँ ॥
प्रभु इस जहान...

धरती और आकाश में प्रभु दान अनुपम कीना
मेघ से बरसा के जल को धरती पे ला दीना
हरियाली की क्या है बात हैरत देखे अखियाँ......देखकर हैरान हूँ ॥
प्रभु इस जहान...

तेरे आश्रित मैं जगत में ज्ञान तुझसे लिया
जो पिलाया ज्ञानामृत वो मस्त हो के पिया,
जो मिली तेरी दया भर आई मेरी अँखियाँ......देखकर हैरान हूँ ॥
प्रभु इस जहान...

मन के मन्दिर में जलाऊँ ओ३म् नाम का दिया
प्रेम आसन पर बिठाऊँ तरसे मेरा जिया
प्रेम ही मेरी सौगात ओ मेरे मन के बसिया....ध्यान तेरा ही धरूँ
प्रभु इस जहान...

(सर्वाधार) सब जगत का आधार (आश्रित) शरणागत, अवलम्बित (सौगात) भेंट, उपहार

[10]

तर्ज़ : *अगर तेरी दुनिया में ये गम रहेंगे*

जो वेदों की शिक्षा पे हम सब चलेंगे
तो निश्चय ही हम सच्चे आर्य बनेंगे ॥
न पूरब न पश्चिम न उत्तर न दक्षिण
अमंगल कहीं ना हो मंगल हो निशदिन
जो ईर्ष्या और द्वेषों से बचके चलेंगे ॥ तो निश्चय...
विभिन्न बोलियाँ है, विभिन्न धर्म प्रेमी
बने इस धरा के सभी मातृप्रेमी
वेद आज्ञा से हम भूमि-पुत्र बनेंगे ॥ तो निश्चय...
परस्पर क्यूँ हर राष्ट्र नीचा दिखाएँ
इन घातक शस्त्रोंकी क्यूँ होड़ लगाएँ
वेदों की अहिंसा उजागर करेंगे ॥ तो निश्चय...
धनुष कोटियों पे जो डोर चढ़ाई
न उसमें कभी भी किसी की भलाई
अहिंसा अमन एकता पर जिएँगे ॥ तो निश्चय...
लड़ाई से ना है समाधान कोई
हिंसाओं ने देशों की नावें डुबोई
जो चाहोगे संग्राम क्यूँ ना मिटेंगे ॥ तो निश्चय...
अगर आक्रमण हो तेरी इस धरा पर
तो पीछे ना हटना कभी घबराकर
धर्महित मरें वो अमर ही रहेंगे ॥ तो निश्चय...
शक्तिधर ऐ मानव तू मद में न आना
न मासूम लोगों का जीवन मिटाना
सशक्त भी चाहें तो शिव ही बनेंगे ॥ तो निश्चय...
संहारक न बन, बन तू प्रेम-उपासक
एकता मित्रता का सदा कर तू स्वागत
हर राष्ट्र के मोती इक सूत्र में होंगे ॥ तो निश्चय...
सभी शक्तियों के हैं ईश ही प्रेरक
तू बन लोक-रक्षक न बन जाना भक्षक
अहिंसा से तो राष्ट्र स्वर्ग बनेंगे ॥ तो निश्चय...
सदा एकता ही बने सुख की वर्षक
अग्निसम प्रकाशित और यश की वर्धक

इन आत्मिक ऐश्वर्यों को पाते रहेंगे ॥ तो निश्चय...
समिति एक हो एक मन एक चित्त हो
ये जग एकता से सदा जागृत हो
इसी मंत्र से सोए लोग जगेंगे ॥ तो निश्चय...
दृष्टि में हमारी सदा मित्रता हो
हृदय में कभी द्वेष ना शत्रुता हो
इन सात्विक भावों को हृदय में भरेंगे ॥ तो निश्चय...
धरा पर रहें, चाहे कोई दिशा में
परस्पर सदा प्रेम होवे जिया में
सदा प्रेम सत्कार स्वागत करेंगे ॥ तो निश्चय...
वैदिक भावना मिलके मन में जगाओ
चलो मिल के बोलो गाओ मन सजाओ
तभी ईर्ष्या, द्वेष, विध्वंस मिटेंगे ॥ तो निश्चय...

(घातक) हत्यारा, चोट पहुँचाने वाला (धनुषकोटि) धनुष की रस्सी (अमन) शान्ति, चैन (समाधान) निबटारा, समर्थन (संग्राम) युद्ध (समिति) समाज (सात्विक) सत्वगुण प्रधान (विध्वंस) नाश, वैर

[11]

तर्ज़ : *छुप गया कोई रे दूर से पुकार के*

ओ३म् नाम जपले बन्दे जीवन सँवार ले
त्याग और संयम से अपना जीवन गुज़ार दे ॥
काम क्रोध लोभ गया मिला मन को चैन रे
मन से वैर द्वेष गया काटी सुख से रैन रे
दूर विषयों से रहके जीवन सुधार ले ॥ त्याग और...
पाया नया चोला प्रभु से, पुराना उतार के
करना तू निर्मल मन को शुद्ध व्यवहार से
धर्म-कर्म करना सत्य असत्य को विचार के ॥ त्याग और...
कर्म क्षेत्र ये जग सारा, कर्म निष्काम कर
दया त्याग सत्य अहिंसा का उपदान कर
प्रभु प्रेम पाके जीव-मात्र को तू प्यार दे ॥ त्याग और...
ज्ञानी सन्त विद्वानों का सदा संग कर ले
यज्ञमय जीवन को तू अमृत से भर ले
प्रभु ध्यान करते करते, खुद को विसार दे ॥ त्याग और...

(उपदान) भेंट, नज़राना

[12]

तर्ज़ : *रेत पर लिख के मेरा नाम मिटाया ना करो*

आर्य गर हो तो आर्य समाज में तुम आया करो
संग सत्संग में औरों को भी तुम लाया करो ॥ संग सत्संग...
रूठ बैठे जो तेरे भाई-भाई से अलग
उनको तुम प्रेम की भाषा में समझाया करो ॥ संग सत्संग...
बेखबर चलते हैं जो वेदों की राहों से अलग
उनको वेदों की सही राह भी दिखाया करो ॥ संग सत्संग...
जाति मज़हब की खातिर जो बँटे हिस्सो में
तुम दयानन्द के उपदेशों से समझाया करो ॥ संग सत्संग...
अपनी उन्नति में न केवल खुश रहना आर्यो
दूसरों की उन्नति में शामिल हो जाया करो ॥ संग सत्संग...
दर्द जो सहते हो खुद के तो बड़ी बात नहीं
दर्द गर हो पराया तुम उसे अपनाया करो ॥ संग सत्संग...
करके दिखला दो निष्काम कर्म दुनिया को
त्याग सेवा की लगन सब में जगाया करो ॥ संग सत्संग...
जो जहालत की दीवार गिरी फिर वो खड़ी
तुम दयानन्द की मेहनत को न जूँ ज़ाया करो ॥ संग सत्संग...

[13]

तर्ज़ : *सुबह होती है शाम होती है*

यज्ञ कर्मी का नाम होता है यज्ञकर्ता महान होता है।
आदि सृष्टि में आए चार ऋषि उनको वेदों की ईश-प्रेरणा हुई
जिसमें परिपूर्ण ज्ञान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ की अग्नि तीव्र होती है हवि छिन्नभिन्न शीघ्र होती है
लाभकारी जहान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ में हवित पदार्थ जलता है वायु जल को वो पुष्ट करता है
अमृत वर्षा का दान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञवर्षा तो शुद्ध जल देती शुद्ध अन्न से सुन्दर फसल होती
अन्नपूर्णा का स्थान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ तो शुद्ध अन्न देता है जिससे मन शुद्ध सदैव रहता है

मन की शुद्धि से ज्ञान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
शुद्ध मन को प्रकाश मिलता है आत्मिक एश्वर्य से देव बनता है
यज्ञ मुक्ति का धाम होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ तो राग द्वेष हरता है कोई मानव कभी न बँटता है
मित्र भावों का भान होता है
यज्ञ से भाग जाते सारे दुःख, यज्ञ तो देता प्राणीमात्र को सुख
यज्ञ तो सुख की खान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ निर्भय सदा बनाता है प्रजापालन का ढंग सिखाता है
मृत्यु भय का निदान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ की अग्नि ऊँचे उठती है मन के भावों को ऊँचा करती है
शुद्ध जीवन निर्माण होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
यज्ञ को जीवन से यही कहना, दीर्घ आयु समर्थ ही रहना
भाव यज्ञ का निष्काम होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...
जो भी करते हैं यज्ञ श्रद्धा से पाते आशीश सृष्टिकर्ता से
ईश चरणों में स्थान होता है ॥ यज्ञकर्ता महान...

[14]

तर्ज : *अग्निरूप तेरा है प्यारा*

हे प्रभु जीवन हमारा अग्निरूप महान कर दो
दृढ़ करो संकल्प हमारे प्रेरणा स्वःस्वरूप भर दो ॥
यज्ञ के यजमान बनकर हम प्रभु उर्ध्वगामी
खुद को उन्नत करके हम औरों को उन्नत कर दें स्वामी
छोड़ें ईर्ष्या-द्वेष प्रभुजी मन और चित्त को निर्मल कर दो ॥
दीप विद्युत सूर्यचन्द्र हो या हो ग्रह नक्षत्र तारे
अग्नि का गुण है स्वाभाविक तम हो नाश प्रकाश उबारे
भिन्न रूप प्रकाश से प्रभु मन व चित्त को उज्जवल कर दो ॥
इक चिन्गारी से भी बन सकती है अग्नि दावानल
अग्नि की विस्तार सीमा बाँध सका ना गगन ना तल
बीजरूप चिन्गारी से महावृक्ष सा जीवन यूँ कर दो ॥
सृष्टि के पच्च तत्वों में अग्नि का है तेज तमोभिद्
सूर्य में भी हो रही है उष्णता और तेज मुखरित
तेजोमय दिव्य रूप तेरा हमको भी तेजस्वी कर दो ॥

आत्मसात करती है अग्नि भस्मसात करने से पहले
उड़के दूर सुदूर गगन से ब्रह्मलोक तक जाके फैले
दूर तक सद्गुण जो फैले ऐसा गुणग्राही तो कर दो ॥
भस्मशील ये शक्तियाँ जब जब जगत में क्षीण हुई
हो गई जर्जरा धरा दुःख और सन्ताप से दीन हुई
ना पतन हो ज्ञान और कर्मेन्द्रियों में शक्ति भर दो ॥
द्विक पदार्थों के संघर्ष से अग्नि उद्दीप्त हो जाती है
जीवन के संघर्षों से दुलर्भ वस्तुएँ मिल जाती हैं
चित्त में हो चन्दन सी गन्ध मन में चमक कुन्दन सी कर दो ॥
परोपकार धर्म अग्नि का जो सुख समृद्धि देती सबको
तपना होगा समिधा बनकर जीवन के यज्ञ कुण्ड में तुमको
अमृत पथ के यजमानों को अग्निपथ पर अग्रसर कर दो ॥

(स्वःस्वरूप) प्रकाश स्वरूप (यजमान) याजक, यज्ञवेदी पर बैठा मुख्य व्यक्ति (दावानल) भीषण आग (तमोभिद्) अन्धकार दूर करनेवाला (आत्मसात) अपने अधिकार में (भस्मशील) जलाकर राख कर देना (क्षीण) दुर्बल, कमजोर (द्विक) द्वय, दो (उद्दीप्त) प्रकाशित (समिधा) अग्नि में डालनेवाली लकडी

[15]

गुज़री तमाम उम्र लुटा तब पता चला
मंजिल से भटकने का तब पता चला ॥
आने को तो तू आ गया रब के जहान में
खुद को ना समझा ना मुझे रब का पता चला ॥
बचपन जवानी गुज़री खिली मौज मस्तियाँ
मौजों में मस्तियाँ जो डूबी तब पता चला ॥
किया रुख ना किनारे की तरफ अपनी कश्ती का
जब डूबने लगी भँवर में तब पता चला ॥
तन के ख्याल में तो सदा तनकर ही तू चला
हुस्न और जवानी ढल गई तब पता चला ॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष हित तुझको जन्म मिला
शुभ कर्म किए आज़माना तब पता चला ॥
अब भी तू जाग ऐ 'ललित' हालाँकि हुई देर
माना कि तब पता न था, क्या अब पता चला?

(रब) ईश्वर (हुस्न) सौन्दर्य, सुन्दरता

[16]

तर्ज़ : *ठुमरी*

मन मोरे प्रभु शरण में आजा ॥
जो भी तेरे दर पे आया
खाली हाथ नहीं लौटाया
बाँध ले प्रीती जोड़ ले नाता
प्रभु दर छोड़ तू ना जा ॥ प्रभु शरण में...
जिसने जीवन शुद्ध बनाया
दुष्कर्मों को दूर हटाया
सत्कर्मों की बाँधी गठरिया
खोल के देखें दाता ॥ प्रभु शरण में...
इक भक्ति का गीत जो गाया
परमानन्द सुधा रस पाया
भक्तिभाव के मन मन्दिर में
प्रेम का दीप जला जा ॥ प्रभु शरण में...

[17]

तर्ज : *मोसे मत पूछ मेरे इश्क में*

जब भी प्रभु याद तेरी दिल में बसी जाती है
प्रेम श्रद्धा मेरे मन का दिया जलाती है ॥
पहले मक्सद नहीं समझा था जग में आने का
चक्रव्यूह में न मिला मार्ग निकल पाने का
अब ये जाना के प्रभु तू ही मेरा साथी है ॥ जब भी...
मन के दर्पण में तेरे प्रेम की प्रभु मूरत है
भूल बैठा हूँ प्रभु खुद ही अपनी सूरत मैं
जहाँ देखूँ, मैं छबी तेरी नज़र आती है ॥ जब भी...
चाहे दुःख आए या सुख मैं ना तुझे भूलूँगा
तेरे ही प्रेम हिंडोले में प्रभु झूलूँगा
देखूँ तुझे पाने की वो शुभ घड़ी कब आती है ॥ जब भी...

[18]

तर्ज : *चैन नहीं आए कहा नहीं जाए*

ये मन भरमाए चैन ना पाए, मिला जीवन जो, न यूँ ही खोऽऽ
बचपन खोया खेल कूद में आई मस्त जवानी
याद किया ना प्रभु प्रीतम को किसने दी ज़िन्दगानी
अन्त समय लेकर पछतावा रो रो जान गँवाए ॥
ये मन भरमाए...
जिसने सकल ब्रह्माण्ड रचाया क्यूँ उसको बिसराया
ज्ञान न पाया जग में रहकर सत्संगत ना आया
काम क्रोध मद मोह में डूबा पापी मन कित जाए ॥
ये मन भरमाए...
आऊँ तो आऊँ दाता कैसे मैं आऊँ, तेरे मिलन की राह न पाऊँ ॥
ये मन भरमाए...

[19]

तर्ज : *ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन*

ऐसी लागी लगन प्रभु में हो गई मगन
तेरी हर शै में छबि नज़र आने लगी ॥
छोड़ जग के बन्धन आई तेरी शरण
मन में भक्ति की लौ जगमगाने लगी ॥ ऐसी लगी...
पाया मानुष जनम अनमोल रतन (2)
सत्य ज्ञान कर्मों का ये दिव्य भवन (2)
मन का मन्दिर इसी में सजाने लगी ॥ ऐसी लगी...
आत्मा मन बुद्धि जैसे खिले हैं सुमन (2)
प्रभु देता महक इसमें जैसे चन्दन (2)
फूल चरणों में प्रभु के बिछाने लगी ॥ ऐसी लगी...
सत्य जप तप अहिंसा की दे दो अगन (2)
इसके पालन में लागे तन मन व धन (2)
प्रेरणा शक्ति तुमसे मैं पाने लगी ॥ ऐसी लगी...
गहरा सागर प्रभु दूर मंजिल मेरी (2)
नाव मेरी सही पर दया है तेरी (2)
मेरे साँझी मैं तुझको रीझाने लगी ॥ ऐसी लगी...

[20]

तर्ज़ : *कहीं दूर जब दिल ढल जाए,*

करो दूर पापों से प्रभुजी! जीवन पाप में ढल ना जाए तू ही सहाय
पाप पुण्य का भेद समझकर भक्त जो तेरी शरण में आए तू ही सहाय

पापों के पथ पर जो भी जाए नदी प्रवाह सम बहता जाए
कोई किनारा ढूँढ़ ना पाए, दुविधा में तब तुझे बुलाए तू ही सहाय

पाप की वृत्ति जैसी मन में वैसा ही पापी बन जाए
भटक भटक जब मन भरमाए फिर जबसही दिशा में जाए तू ही सहाय

पापाचार ही पतित बनाए पाप बढ़े भय बढ़ता जाए
चुपके छुपके कर्म कराए मन जब पश्ताताप में जाए तू ही सहाय

पाप पुण्य का है दोराहा जहाँ से मार्ग अलग हो जाएँ
या आत्मा पथ पाप के जाए और जो पुण्य के पथ पे जाए तू ही सहाय

पापी यदि साधक बन जाए पुण्य का दृढ़ संकल्प जगाए
पाप ज्यूं आए वैसे ही जाए, प्रतिपक्ष का भाव जो आए तू ही सहाय

आत्मा में जब पुण्य समाए क्या कारण फिर पाप में जाए
अंगारों से जलते जलते योगधर्म को जब अपनाए तू ही सहाय

[21]

तर्ज़ : *जा आपल्या घरी तू जा लाडके सुखा ने*

जा मन प्रभु शरण में प्रभु प्रेम स्नेह पाले
प्रभु में हैं गुण अनेकों संग करके मन सजाले ॥

बनजा प्रभु का प्रार्थी, वाणी में स्तोम् भाषा
समिधान हो स्वयं तू बन जा प्रभु का ध्याता
प्रभु के सदृश्य मन से गुण कर्म उपजाले ॥ जा मन प्रभु शरण में ॥

तू दिव्य कर्म में ही यतमान होके रहना
करे प्रार्थना तू जैसी सत्कर्म वैसा करना
तू प्रकाशमान हो निज अन्तःकरण जगाले ॥ जा मन प्रभु शरण में ॥

पुरुषार्थ प्रार्थना से बनते प्रभु सहयोगी
गुण कर्म ना सधे तो केवल बने तू भोगी
यशगान से है बेहतर यश कर्म तू कमा ले ॥ जा मन प्रभु शरण में ॥

अगणित तेरे पराक्रम हे प्रभु! पूजित धनवाले
भक्तोंको बल दे भगवन् सर्वज्ञ हे बलवाले
दुष्कर्म से हटा मन सत्कर्म में लगा दे ॥

(स्तोम) स्तुति समूह (यतमान) संलग्न, प्रयत्नशील (समिधान) प्रकाशित (प्रार्थी) प्रार्थना करनेवाला

[22]

तर्ज़ : *ऐ मेरे दिल नादां तू*

ऐ आर्य तू जीवन में शुभकर्म कमा जाना
दिए लाखों जलाए ऋषि ने इक तू भी जला जाना ॥ ऐ आर्य तू...

परदा जो अकल पर था गुमराह से लोगों का
ऋषि राह पे ले आए दिया ज्ञान वो वेदों का
वेदों को पढ़ना पढ़ाना और सुनके सुना जाना ॥ ऐ आर्य तू...

पत्थर और ढेलों से आघात किया ऋषि पे
विष और खंजर से किया विश्वासघात मुनि पे
सन्तों पे चले खंजर तू अपने सीने पर लाना ॥ ऐ आर्य तू...

नारी को दिया अधिकार दुःखियों का बना ग़मख्वार
गौ माता के आँसू देख बरसी आँखों से धार
गौ नारी दुःखियों के लिए संसार से टकराना ॥ ऐ आर्य तू...

सच्चाई सरलता थी उपकार था ऋषिवर का
दया और क्षमा का था व्यवहार मुनिवर का
जीवन से दयानन्द के दया प्रेम तू ले आना ॥ ऐ आर्य तू...

लाना था विश्व को ओ३म् ध्वज के तले करके
जाना था जग से जग को बस एक कुटुम्ब करके
संकल्प ऋषि का तुम सार्थक करते जाना ॥ ऐ आर्य तू...

[23]

तर्ज़ : *रुके रुके से थे हम*

लुटे लुटे से थे हम बाग थे उजड़ते चले
बहार आई ऋषि की कृपा से फूल खिले ॥ लुटे लुटे से...
जहालतों में फँसे लोग हुए थे दिले-ज़ार
छुड़ाया पञ्जों से उनको जो जा रहे थे छले ॥ बहार आई...
न खंजरों का कोई ख़ौफ था दयानन्द को
जो बेरहम थे झुके ऋषि की दया के तले ॥ बहार आई...
ज़ुबाँ पे थी वो ग़जब कशिश दयानन्द की
ऋषि की शीरी जुबाँ ने मिलाए बिछड़े गले ॥ बहार आई...
न सौदा सत्य का शौहरत या दौलतों में तुला
तुला पे सत्य का उतना वज़न दिखाते चले ॥ बहार आई...
ज़हर को पी, सो गए नींद के जो पहलू में
थी नींद ऐसी जहाँ को ऋषि जगा के चले ॥ बहार आई...
न लूट ले कभी फिर से हमें ये दौरे जुनूं
हटें जो द्वेष ज़माने को साथ लेके चलें ॥ बहार आई...

[24]

तर्ज़ : *सो गया सारा ज़माना*

रो दिया सारा ज़माना ऋषि की जाँ निसार पर
बादलों रोना गरजकर आसमाँ से हार कर ॥
चाँद पहले भी निकलता था ऋषि के वक्त पर
आज वैसी चाँदनी खिलती नहीं संसार पर ॥ रो दिया सारा...
ऐ समाँ तू जा के ला दे जज़्बा वो दयानन्द का
आ तू ऐ वादे सबा दया प्रेम त्याग की राह पर ॥ रो दिया सारा...
जो सजाया बाग ऋषि ने अपने ही पुरुषार्थ से
उस चमन को सींच कर तू बहार ही बहार कर ॥ रो दिया सारा...
सत्य का शृंगार था दयानन्द के तनमन वचन पर
तू भी मानव जिन्दगी में सत्य का शृंगार कर ॥ रो दिया सारा...
जो तमन्ना दिल में बाकी थी ऋषि दयानन्द की
सारी दुनियाँ को उठाना वेद के आधार पर ॥ रो दिया सारा...

[25]

तर्ज़ : *लूटा है जमाने ने*

लूटा था जमाने ने ऋषिवर ने बचाया है
अपने गुरु विरजानन्द का वचन निभाया है ॥ लूटा था...
भ्रमजाल में लोगों को बहकाया मक्कारों ने
अन्याय पाप पाखण्ड से दयानन्द ने छुड़ाना है ॥ लूटा था...
निर्जीव आर्य जाति में नव प्राण फूँके ऋषि ने
सौ बार उठाया है सो बार बचाया है ॥ लूटा था...
नारी का नहीं था मान गौओं को सताया था
दयानन्द दया सिन्धु तारक बन आया है ॥ लूटा था...
क्या सत्य था क्या था असत्य लोगों को पता न था
सत्यार्थ प्रकाश रचा अज्ञान मिटाया है ॥ लूटा था...
गुरुकुल और आर्य समाज सींचा था ऋषिवर ने
आदर्श के फूलों से आँगन महकाया है ॥ लूटा था...
जो कुछ था ऋषि ने संग जब बाँट दिया जग को
हँस के दिए प्राण, क्षमा घातक को दे आया है ॥ लूटा था...
इस युग में नहीं है कोई महर्षि दयानन्द सा
निष्काम कर्म ऋषि का, हर मन में समाया है ॥ लूटा था...

[26]

तर्ज़ : *अगर मुझसे मुहब्बत है*

तर्ज़ : *जो हमने दास्ताँ अपनी सुनाई*

अगर ऋषि से मुहब्बत है सच्चाई का वचन दे दो
ऋषि की राह उल्फत की है चलने की कसम ले लो ॥ अगर ऋषि से...
मिटाया जादू टोनों का भ्रम सबके दिलों पर से
ठगों को लानते दीं और हटाया खौफ़ को सर से
सत्यार्थ प्रकाश ज्ञानदीप से तुमसत्य किरण दे दो ॥ अगर ऋषि से...
विपत्तियों को अपनाया सहा कष्टों को हँस हँस के
जो देखा दुःखियों को तो आँसू टपके आँख भर भर के
दुःखी को देख लो गर तो दया से तुम शरण दे दो ॥ अगर ऋषि से...
जगाया था ऋषि ने ज्ञान से सोए हुए जग को

बताया था कि वैदिक धर्म अमृत दान दे सबको
तो वैदिक धर्म का सत्य ज्ञान वेदों से स्वयं ले लो ॥ अगर ऋषि से...
जो निर्भयता ऋषि में थी सुनी ना थी ना देखी थी
डरे ना ज़हर खंजर से ना परवाह की थी प्राणों की
अगर मरना पड़े तो धर्महित में ये जन्म दे दो ॥ अगर ऋषि से...
दिखाया सत्य पे चलके निडर जीवन सफर करके
प्रकाशित आए जग में और गए मृत्युंजय बनके
सुकर्मों से खिले फूलों की चाहो तो सुगन्ध दे दो ॥ अगर ऋषि से...

[27]

तर्ज़ : *हमसे आया ना गया तुमसे*

तेरा उपकार ऋषि दिल से भुलाया न गया
तेरे बलिदान का ऋण हमसे चुकायान गया ॥ तेरा उपकार...
कौम गर्दिश में लुटेरो ने की थी मनमानी
घोर अज्ञान से थी वेद ज्ञान की हुई हानि
ऋषि से आर्य बचा हमसे बचाया ना गया ॥ तेरा उपकार...
ज़ख्म खा के ऋषि ने ज़ख्म भरे दुनियाँ के
जलती ज्वाला से बचाया ऋषि ने सतियों को
दया सागर जो बहा हम से बहाया ना गया ॥ तेरा उपकार...
सम्प्रदायाओं में बँटा बेड़ियों से जकड़ा देश
लोभी पाखण्डी पहने थे भेड़ियों के भेष
ऋषि के देश बचा हमसे बचाया ना गया ॥ तेरा उपकार...
उजले वेदों का उजाला था गया धुन्ध की ओर
लाए ऋषि वेदों के उजले प्रकाश पुञ्जकी ओर
जो वेद नाद बजा हमसे बजाया ना गया ॥ तेरा उपकार...
दया को मार सके ना ज़हर के वो प्याले
मुँह पे शत्रुओं के पड़े पश्चाताप के ताले
दया का महल बना हमसे बनाया ना गया ॥ तेरा उपकार...

[28]

तर्ज : *ख्यालों में किसी के*

दयानन्द तो कभी भी दूर दिल से रह नहीं सकते
जो जाने महिमा ऋषि की वो बयाँ कर नहीं थकते ॥
जमाने में कदम रखे ऋषि ने जब अन्धेरा था
ऋषि के हर वचन में सत्य का उजला सवेरा था
उजाला जो किया है हम अकेले कर नहीं सकते ॥ जो जाने महिमा...

हटाया पाप पाखण्ड को जो फैला था जहाँ भर में
मजहब के नाम पर लड़ते थे और मनमानियाँ करते
ये इक रहबर था ऐसा सैकड़ों मिलकर नहीं बनते ॥ जो जाने महिमा...

हटाया पाप पाखण्ड को जो फैला था जहाँ भर में
मजहब के नाम पर लड़ते थे मनमानियाँ करते
ये इक रहबर था ऐसा सैकड़ों मिलकर नहीं बनते ॥ जो जाने महिमा...

बचाया नारी गौ दुःखियों को जुल्मों से छुड़ाकर के
उठाया उनको देकर मान हक ऋषि ने दया भर के
दया के इस चमन का एक फूल उगा नहीं सकते ॥ जो जाने महिमा...

न मरते हैं ऋषि ऐसे ज़हर से तीर खंजर से
ये वहशत और नफरत मारे वहशी को ही अन्दर से
समर्पित जो प्रभुपर हो गए वो मर नहीं सकते ॥ जो जाने महिमा...

हुई नफरत थी शर्मिंदा धर्म की इस शहादत पर
मैं सदके जाऊँ तेरी पाक और नायाब उल्फत पर
बहाई प्रेम गंगा काश वो हम भी बहा सकते ॥ जो जाने महिमा...

दिखाओ विश्व को आर्यो चमकता सूर्य वेदों का
मिले जो ज्ञान की किरणें भला हो देश देशों का
जहालत में फँसे दुनियाँ गँवाराकर नहीं सकते ॥ जो जाने महिमा...

[29]

आज ऋषिवर सा कोई भी मिलता नहीं
याद आई ऋषि की तो हम रो पड़े (2)
वक्त से पहले ऋषिवर को खोने का दर्द
हम छुपाने लगे ये मगर रो पड़े (2)
स्वार्थी लोभी थे मचाए कहर
कश्तियाँ बेहिसाब पड़ी थी भँवर
कष्ट सन्ताप सहते रहे बेखबर
धर्म का रास्ता भी ना आया नज़र
देख दुःखियों को ऋषिवर ने नैन भरे
पोंछते पोंछते आँसू खुद रो पड़े ॥ आज ऋषिवर...
धर्म था पर अधर्म पनपाता रहा
जुल्म बेबस की आँखों सा रोता रहा
कृष्ण की गौ कटी नारी हो गई सति
जागा केवल ऋषि जग तो सोता रहा
आँसुओं की ये नदियाँ बहीं बेवजह
सहमी धरती ये बादल बरस रो पड़े ॥ आज ऋषिवर...
मान करते थे ऋषि हर कौम का
और लगाया था नारा इक ओ३म् का
वेद के सत्य का ऋषि को आधार था
वेद अनुसार जीवन का व्यवहार था
विष के प्याले भी ऋषिवर के अमृत हुए
सर झुका के ये विषवदाता भी रो पड़े ॥ आज ऋषिवर...
बस यहीं जान लो दुनियाँ वालो, आर्य रखते हैं श्रद्धा दयानन्द पे
दिल में मौजूद है त्याग प्रेम दया, जाएँ बलिहार हम उस दयावन्त के
की दया ऋषि ने थे विषदाता बेहरम
हँसते-हँसते गए ऋषिवर हम रो पड़े ॥ आज ऋषिवर...
आर्यों आया समय हम मिटाएँ कलह
आज अन्धकार का मिलके कर दें प्रलय
कर दें इक भाषा इक धर्म एक संस्कृति
सूर्य वैदिक धर्म का ही लाए सहर
पापी लोभी पाखण्डी ना पाएँ पनाह
वक्त आंए वो करनी पे खुद रो पड़ें ॥ आज ऋषिवर...

[30]

तर्ज़ : रंजिश ही सही दिल को दुःखाने के लिए आज

अनमिट ही रही दिल में बसी तेरी ऋषि याद
कैसे भुला दें तेरा परोपकार ऋषिराज ॥ अनमिट ही...

ऋषिवर तेरी दया की अमिट छाप है मन में
जी चाहता है प्रेम दया में पले समाज ॥ अनमिट ही...

तूने दलित-समाज बनाया ललित-समाज
हम सब को मिटा देने हैं दामन में लग दाग़ ॥ अनमिट ही...

विधवा अनाथ गौओं का तूने बढ़ाया मान
जब हम हैं तेरे भक्त तो इन सबकी रखें लाज ॥ अनमिट ही...

पाखण्ड झूठ मिट गया वेदों के तर्क से
फैलेगा फिर से जब गिरेगी आर्यों की गाज ॥ अनमिट ही...

वेद के संदेशों से हुए झंकृत हृदय के तार
देवे सुनाई फिर से वेदों का ब्रह्मनाद ॥ अनमिट ही...

डुबकी लगा निकाले वेद सिन्धु से रतन
धनवान ज्ञान के बने तेरी कृपा से आज ॥ अनमिट ही...

वैदिक धर्म प्रचार में छोड़ी नहीं कसर
वेदों की नाव में सवार होंगे भवसे पार ॥ अनमिट ही...

करुणा दया उदारता अनुराग और त्याग
उपकार सत्यधर्म का हमको पढ़ाया पाठ ॥ अनमिट ही...

खुद पीके घूँट ज़हर के हमको दिया अमृत
ऋषि ऋण को हम चुकाने के काबिल होते काश ॥ अनमिट ही...

ऐ धर्म के दीवाने दयानन्द है तू अमर
दीवानगी पे तेरी ज़माने को रहा नाज़ ॥ अनमिट ही...

[31]

तर्ज : चलो इक बार फिर से

चलो जयकार ऋषि की प्रेम से मिलकर सभी बोलें,
जो मार्ग सत्य का ऋषि ने बताया ना कभी भूलें ॥
जगाया था जमाने को ऋषि ने वेदविद्या से
उठाया दलित गौ नारी को ऋषि ने निज प्रतिज्ञा से,
सकल संसार रह जाएगा सोया आर्य गर सो लें ॥ चलो जयकार...

धर्म के कई मतों को लाए पाखण्डी बाजारों में
उठाया वेद विद्या से, जो थे अविद्या के गारों में
शुरु है सिलसिला, ऋषि की तरह हम वेद को खोलें ॥ चलो जयकार...

सहीं जो विपदा हमने सदियों से इस गुलामी की
मिला स्वराज्य कृपा महर्षि दयानन्द स्वामी की
दशा है आज भी बदतर फटें बम और उठें शोले ॥ चलो जयकार...

खिलाया था चमन को सत्य अहिंसा के फूलों से
बचाया था ऋषि ने घोर अविद्या जैसे शूलोंसे
बहारें इस चमन को लहलहाकर ही सदा झूलें ॥ चलो जयकार...

बदल दी जग की काया चारों वेदों की विद्या से
बचाया जग को भ्रम के जाल से तम से अविद्या से
सरस वेदों का अमृत आओ मिलकर जग में हम घोलें ॥ चलो जयकार...

धर्म के वास्ते ऋषि ने लगाई दाव अपनी जाँ
अभय थे वीर ऋषि असत्य के आगे झुकी ना शान,
तराजू ज्ञान को लेकर सदा तुम सत्य को तोलो ॥ चलो जयकार...

दया करुणा अहिंसा त्याग सेवा थी दयानन्द में
हज़ारों कष्ट आए फिर भी ऋषि को पाया आनन्द में
ये सत्कर्मों की शिक्षा पा के हम भरें ज्ञान से झोले ॥ चलो जयकार...

[32]

तर्ज : *मैं नजर से पी रहा हूँ*

कितने महान ऋषिवर, तुझको ना जान पाए
तुम दे गए थे अमृत, हमने ज़हर पिलाए ॥
मानव के हित की ख़ातिर, वैभव तमाम छोड़े
मारे जिन्होंने पत्थर, उन पर रतन लुटाए ॥ तुम दे गए थे...
मानव के हित की ख़ातिर, वैभव तमाम छोड़े
मारे जिन्होंने पत्थर, उन पर रतन लुटाए ॥ तुम दे गए थे...
तप त्याग और संयम, थे अब ऋषि को प्यारे
काँटो की चोट खाके, ऋषि फूल चुन के लाए ॥ तुम दे गए थे...
भटके हुए थे इन्साँ, बँटते दिए दिखाई
उनके लिए दयानन्द, बन रहनुमा थे आए ॥ तुम दे गए थे...
जिनके दिलों को रोशन, तुम कर रहे थे हरदम
हँसे प्राण लेके पहले, फिर रोए पछताए ॥ तुम दे गए थे...

[33]

तर्ज़ : *सुनो छोटी सी गुड़िया की...*

सुनो ऋषिवर दयानन्द की अमर कहानी
ना ये गाथा किसी युग में होगी पुरानी ॥ सुनो ऋषिवर...
टँकारा पे प्रकाश दीप जगमगा उठा
सूर्य गगन का मानों धरती पे आ बसा
घर भी सानन्द मानो छाया वसन्त था (2)
मूलशंकर जन्मा हर्ष की आई दिवाली ॥ सुनो ऋषिवर...
अरमान था पिता का पुत्र शिवभक्त हो
शिव की प्रतिमा पूजा में ही अभ्यस्त हो
प्रश्न उठे मन में कई मूर्ति से श्रद्धा गई
मूर्ति पूजा ना करने की बात ही ठानी ॥ सुनो ऋषिवर...
पिता कहे नास्किता पुत्र में समाई
वर्षो की शिव भक्ति धूल में मिलाई
लानत दुत्कार मिली चाटें फटकार मिली
माँ की ममता कहती माफ कर दो नादानी ॥ सुनो ऋषिवर...

बहन चाचा जब गुज़रे अचरज में डूबे
सोच लिया मृत्युभय से कैसे हम जूझें
आत्मा वैरागी था शिव का अनुरागी था
सच्चे शिव कीथी निजमन में ज्योत जलानी ॥ सुनो ऋषिवर...
माता पिता ने देखी पुत्र की विरक्ति
पुत्र के लिए कर दी वधु की नियुक्ति
मन का तूफ़ान उठा बेचेनियों में ढला
बाल पंछी उड़ा, कर गया सूनी अटारी ॥ सुनो ऋषिवर...
गायब था पुत्र घर से सारे घबराए
चारों ओर बेतहाशा सेवक दौड़ाए
शोक था बेचेनी थी आँखे अश्रुभीनी थी
घर के कोने कोने में थी छाई विरानी ॥ सुनो ऋषिवर...
लुकते छिपते बालक ठहरा सरायों में
जो कुछ था पास ठगों ने ठगा ने राहों में
राह बड़ी दुर्गम थी काटों सी निर्मम थी
अपने बल पे बालक को थी मंजिल पानी ॥ सुनो ऋषिवर...
मुक्ति की चाहत में भटका वर्षों तक
लहुलुहान जख्मों से झुलसे कदमों तक
बन पर्वत खाई थी जान पे बन आई थी
कभी काँटों ने घेरा, कभी पाया ना पानी ॥ सुनो ऋषिवर...
मुक्ति की राह ज्ञान पाके भी मिली ना
ज्ञान की अधूरी कली बाग में खिली ना
दूर तो मंजिल थी पर आस तो प्रतिपल थी
धर्म वीरों को धीरज में होती आसानी ॥ सुनो ऋषिवर...
डाल हो संकल्प की तो ज्ञानपुष्प मिलता है
जिसका माली ईश्वर हो उसका चमन खिलता है
अग्नि श्रद्धा थी और आत्मा समिधा थी
बड़भागी ऋषि को मिले विराजानन्द स्वामी ॥ सुनो ऋषिवर...
द्वार खटखटाया ये पहला अवसर था
अन्दर गुरूवर बैठे चेला यहाँ तत्पर था
शिष्य में प्रतिभा थी, संकल्प नम्रता थी
नेत्र बिन शिष्य की गुरू ने प्रतिभा जानी ॥ सुनो ऋषिवर...

जो भी ग्रन्थ लाए हो, गंगा में बहाओ
ये गुरू का आदेश पहले तुम निभाओ
आज्ञा का पालन से गुरु भक्ति धारण कर
पूर्व ज्ञान समेट गया गंगा का पानी ॥ सुनो ऋषिवर...
मेधावी गुरू का मेधावी चेला था
जो भी सबक पढ़ा सुना ना कभी भूला था
गुरू दृष्टि गहरी थी शिष्य पे ठहरी थी
जाना गुरूवर ने होगा दयानन्द ही नामी ॥ सुनो ऋषिवर...
गुरूवर ने अष्टाध्यायी की शिक्षा दी
वेदों के व्याकरण की गुरू ने विद्या दी
मेधावी बुद्धि से शिक्षा पूरी की
विरजानन्द की कृपा से दयानन्द हुए ज्ञानी ॥ सुनो ऋषिवर...
लौंग दक्षिणा में दयानन्द ले के आए
जानते थे लौंग गुरू को सदा से ही भाए
पर गुरू को जग के अन्धकार की चिन्ता थी
शिष्य से गुरु ने यज्ञरूप दक्षिणा माँगी ॥ सुनो ऋषिवर...
सही गुरू दक्षिणा दो कहा विराजानन्द ने
वेद ज्योति को जला दो जग के आँगन में
निज सुखों की आहुति दो जग को दो जागृति
वेद के प्रकाश हेतु माँगी सारी जवानी ॥ सुनो ऋषिवर...
आए ऋषि प्रथम वहाँ कुम्भ का मेला था
ओ३म् ध्वज था कर में पर ऋषि अकेला था
देख ऋषि ने पाखण्ड वेदकी छेड़ी जंग
आओ ओ३म् के झंडे तले विश्व के प्राणी ॥ सुनो ऋषिवर...
भिन्न-भिन्न मतवादियों का बोलबाला था
नासमझ थे लोग लगा बुद्धि पे ताला था
एकजूट समाज न था, ना ही ज्ञानाभास था
धर्म के ठेकेदार बने लोभी अज्ञानी ॥ सुनो ऋषिवर...
ढोंगी फरेबीयों को ऋषि ने ललकारा
टगते हो मासुमों को, कहके फटकारा
बड़े शास्त्रार्थ हुए सत्य ज्ञान तर्क हुए
मुँह की खानी पड़ी जीती वेदों की वाणी ॥ सुनो ऋषिवर...

मनमानी जब फरेबीयों की चल सकी ना
नियत ऋषिवर के प्रति उनकी थी भली ना
वार किए पत्थरों के दिए प्याले ज़हरों के
स्वार्थीयों ने चाही ऋषि की हस्ती मिटानी ॥ सुनो ऋषिवर...
ऋषि सत्य संग्रामी वैदिक धर्मी थे
सोमी मनायु सुप्रावी सुक्रत कर्मी थे
अद्‌भुत शक्ति ऋषि की दया में सनी थी
ना था वैर द्वेष और ना थे वो अभिमानी ॥ सुनो ऋषिवर...
हिन्दु सिक्ख जैनी मुसलमान ईसाई थे
समदृष्टि थी ऋषि की सब उनके भाई थे
सत्य बात कहनी थी मित्रता भी रहनी थी
दया करुणा और प्रेम भरी दिव्य थी वाणी ॥ सुनो ऋषिवर...
गौ हत्या देख दयानन्द व्यथित हुए
मूक प्राणियों के प्रति हृदय से द्रवित हुए
हत्या विरोध किया पालन पे जोर दिया
गौ करुणा निधी में थी हृदय की वाणी ॥ सुनो ऋषिवर...
वेद के प्रचार में सदा ही रहे अनुरत
ग्राम ग्राम नगर नगर जले वेद दीपक
ज्ञान के प्रकाशक समाज सुधारक थे
सारे विश्व में फैला दी वेद की वाणी ॥ सुनो ऋषिवर...
विधवा नारी को जब देखा सती होते
दयाकंद स्वामी कैसे चैन से यूँ सोते
नारियों को मान दिया उनका उत्थान किया
वेद विद्या उनको जरूरी समझी पढ़ानी ॥ सुनो ऋषिवर...
दिल में अरमान था स्वतन्त्र होवे भारत
देश की आजादी के थे प्रथम विचारक
देश की स्वायत्ता के दयानन्द नायक थे
कैसे ऋषिवर ने बात भविष्य की जानी ॥ सुनो ऋषिवर...
ऋषि दयानन्द ब्रह्मचर्य का शोला था
शेर सी दहाड़ में भी शिशु सा भोला था
वीरों की खूबी थी पर दया में डूबी थी
सत्य दृढ़ता अभय में थे अभिरामी की निशानी ॥ सुनो ऋषिवर...

छोड़ी न कसर वेद के प्रचार में
वेद के आदेश रूप ऋषि के व्यवहार थे
चाहते थे ऋषि धर्म आर्य संस्कृति
'वसुदेव कुटुम्बकम' हों जग के सुजानी ॥ सुनो ऋषिवर...
तोड़ दिए कुप्रथाओं के ऋषि ने घेरे
दूर किए छूआछूत के विकट अन्धेरे
लोक कल्याण के हित त्याग दिए निज सुख
दीन दुःखियों के कष्ट दूर करने की ठानी ॥ सुनो ऋषिवर...
डट के अभय खड़ा विरोधियों से वो अड़ा
अन्याय पाखण्ड ढोंग से लड़ना पड़ा
हाथ में न खंग न ही रक्षा को ढाल थी
आत्मशक्ति थी ढाल तलवार थी ज्ञानी ॥ सुनो ऋषिवर...
सत्य राह पर ऋषि अग्रसर कर्मठ थे
मिटे सत्यार्थ प्रकाश से सब भ्रम थे
जन्म से मुक्ति तक के शाश्वत नियम थे
पढ़ा ग्रन्थ, अज्ञानी भी हो गए ज्ञानी ॥ सुनो ऋषिवर...
लोभियों ने दुर्मन से ऋषि पर उपहास किए
दुराचारियों ने तो हिंसा के प्रयास किए
खन्जरों से वार किए ज़हर पे ज़हर दिए
फिर भी स्वामी दयानन्द रहे सत्य के हामी ॥ सुनो ऋषिवर...
प्याला अन्तिम ज़हरका उन्हें अमर कर गया
एक बुझा दीप तो क्या लाखों जला कर गया
घातक पे की कृपा, दया फूट रो पड़ी
दयानन्द से दया ने अनन्तता जानी ॥ सुनो ऋषिवर...
साधकों में थे निराले और महर्षियों में
दयावानों में निराले और व्रतियों में
योगियों में थे निराले और त्यागीयों में
सन्तों शिष्यों गुरूओं में निराले थे स्वामी ॥ सुनो ऋषिवर...
तपस्वियों में निराले वैरागीयों में
समाज सुधारकों में ब्रह्मचारियों में
वेद भाष्यकारों में वेद प्रचारकों में
युगप्रवर्तकों में उनका ना कोई भी सानी ॥ सुनो ऋषिवर...

अगणित उपकार किये अनगिन उपहार दिये
अगणित अधिकार दिये अनगिन सुविचार दिये
अगणित आचार दिये अनगिन व्यवहार दिये
लिखते लिखते जाएगा हार 'ललित सहानी' ॥ सुनो ऋषिवर...

(सोमी) जिसके पास कोई पदार्थ हो वह न उसका उपयोग करे ना उपभोग। सोम रखता हुआ सोम बाँटे। स्वयंशान्त हो दूसरों को शान्त कर सके वही सोमी है (मनायु) भगवान का निरन्तर मनन करनेवाला (सुप्रावी) श्रवण मनन से जानकर कि भगवान सबकी रक्षा करता है वैसा रक्षक (सुकृत) उत्तम कर्म करने वाला ऋतगामी

[34]

तर्ज़ : *भोली सूरतवाले तूने*

लाखों कष्ट उठाए ऋषि ने कष्टों से संग्राम किया
तपकर चमका कुन्दर जैसा सकल जगत में नाम किया ॥

सहरा खार और खाई पर्वत ढूँढ़ते ढूँढ़ते सच्चे शिव को
सहा वेदनाओं को, ऋषिवर ने धीरज से ही काम लिया ॥

आखिर मंजिल मिली ऋषि को विरजानन्द के चरणों में
ग्राम ग्राम और नगर वेद प्रचार का काम किया ॥

भूले भटके गुमराहों को अन्धकार में देख ऋषि
अपने ज्ञान विवेक से ऋषि ने गिरतों का उत्थान किया ॥

ढोंगी और मक्कार फरेबी अपना पन्थ चलाते रहे
डरा नहीं वो शेर दिल स्वामी हर खंडन सरेआम किया ॥

मातृशक्ति को वेद की शिक्षा का अधिकार दिलाया था
विधवा सति और गौ अनाथ को नया ही जीवन दान दिया ॥

दैनिक यज्ञ की प्रथा चलाई वेदों के उपदेश दिए
किया यज्ञ नित बने यज्ञमय, सकल कर्म निष्काम किया ॥

स्वामी दयानन्द ने जो चाहा सत्य ज्ञान प्रकाश करो
करो स्वप्न साकार ऋषि का जिसके लिए बलिदान दिया ॥

पल पल जीवन जाए

[1]

तर्ज़ : *हाय घबराए रे बिन तेरे मेरा मन*

पल पल जीवन जाए रे करले प्रभु का भजन
शरण प्रभु की आजा रे
बारम्बार मिले ना ये मानुष जनम
शरण प्रभु की आजा रे ॥
तज दे क्रोध मद मोह निर्मल कर ले तू मन.......मन अनमोल रे
बोल मधुर वचन हर ले सबका तू मन.......मधु रस घोल रे
करले सन्तों का संग तज मन मिथ्या कुसंग.......शरण प्रभु की
तेरे अपने करम जाएँ तेरे ही संग.......कर्म का मोल रे
तेरे कर्म अधम पाप में जाए न रम.......मन को तोल रे
माटी देखे ये तन देखें प्रभु उजला मन.......शरण प्रभु की
वेदवाणी पूरन, करले वेद पठन.......प्रभु का होले रे
इसका हर इक वचन है अनमोल रतन.......ऋषि मुनि बोलें रे
पाले प्रभु प्रीतम छूटे जनम मरण.......शरण प्रभु की
.......पल पल जीवन.......
तेरी करनी कथन संग चलें हरदम...सत्य बोल रे
मन का होगा मंथन राह होगी सुगम...प्रभुपथ खोल रे
जब उठेगी तरंग प्रभु से होगा मिलन...शरण प्रभु की...

(मिथ्या) अनुचित प्रकार से, असत्य (अधम) सबसे खराब, निज (सुगम) आसान, सरल (तरंग) लहर

[2]

तर्ज़ : *छुपा लूँ यूँ दिल में प्यार तेरा*

बसा लूँ प्रभु प्यार मन में तेरा
बसी है खुशबू जैसे सुमन की
यूँ बन के साथी रहूँ मैं तेरा
है मीन जैसे नदी के जल की ॥ बसा लूँ प्रभु...
है भाग्य मेरा मिला है नरतन
लगाया इसमें ये मन का दर्पण
रखूँ अगर साफ मैं जतन से
तो देखूँ ज्योति प्रभु किरण की ॥ बसा लूँ प्रभु...

सुमन=फूल-पुष्प

है साँसों में प्रभुजी तेरी ही धड़कन
जो गाती रहती तेरी ही सरगम
तुझे बना लूँ मैं अपना प्रीतम
है आस मुझको तेरे मिलने की ॥ बसा लूँ प्रभु...
शरण भी तेरी तेरे ही चरनन
दया में तेरी जिऊँगा हरदम
मैं वारुँ तुझपे मेरा ये तन मन
है भक्ति जागी तेरे भजन की ॥ बसा लूँ प्रभु...
जो कुछ है मेरा करूँ समर्पण
केवल मैं पाऊँ तेरा रतन धन
बिना तेरे क्या है मेरा जीवन
है प्रीत तुझसे जनम जनम की ॥ बसा लूँ प्रभु...

[3]

तर्ज़ : *तुम....पुकार लो*

जीवन सँवार लो,
इक ओ३म् नाम ही जीवन का आधार है ॥ जीवन सँवार लो...
क्यों जगत में आया ना तुझको ख़बर
जो मिला है जीवन ना उसकी क़दर
रेत के महल बनाता तू मन ही मन
क्यूँ खा रहा है ठोकर तू बार-बार हैं ॥ जीवन सँवार लो...
अहंकार है तेरा, निराधार है
लोभ से रहा तुझको सदा प्यार है
चुन रहा है काँटे ही काँटे दिन ब दिन
क्यूँ ना चमन सी तेरे जीवन में बहार हैं ॥ जीवन सँवार लो...
कर सका न तू इन्द्रियों का दमन
माया के फेर में ही खो दिया अमन
जा रहा है राह उलटी फिर भी ना शरम
तू जान बूझकर बना क्यूँ लाचार है ॥ जीवन सँवार लो...
जो तू जान लेगा क्या है जीवन
क्यों न फिर तू आएगा प्रभु की शरण
जाएँगे तेरे सत्कर्मों में कदम
तू कर ले भजन, जो तुझको प्रभु से प्यार है ॥ जीवन सँवार लो...

(चमन) फुलवारी (शरम) लज्जा (बहार) फुलों के खिलने का समय, वसन्तऋतु
(दमन) वश में रखना (लाचार) विवश (कदम) डग

[4]

तर्ज़ : *वैष्णवजन तो तेने कहिए*

जो तू माँगे सच्चे मन से ईश्वर तुझको देता है
देने को भण्डार भरे पर बदले में ना कुछ लेता है ॥ जो तू माँगे...
क्या करने तू जग में आया सोच ले बन्दे निज मन से
जीवन भर करता मनमानी, देर हुई तब चेता है ॥ जो तू माँगे...
जो तू माँगे धन दौलत, पुरुषार्थ करे प्रभु से पाए
पर कितनी है तुझको, ज़रूरत, कितना जमा कर लेता है ॥ जो तू माँगे...
जो तू हर ले पीर पराई, तेरी पीर हरे हरिहर
सबसे प्रीत करे जो मन से, ज़िन्दा दिल वो होता है ॥ जो तू माँगे...
तेरी करनी को ना रोके जो चाहे करना कर ले
लेकिन फल ना तेरे वश, प्रभु नाप तोल के देता है ॥ जो तू माँगे...
करले साधु सन्तों की संगत, रंगत ज्ञान की पाले तू
ज्ञानी धर्म को जान समझकर जीवन नैया खेता है ॥ जो तू माँगे...
चरण शरण प्रभु चित्त जो लाए रतन अमोलक प्रभु से पाए
भक्ति में जो रम जाए तनमन, भव सागर तर लेता है ॥ जो तू माँगे...

(अमोलक) बहुमूल्य (पीर) पीड़ा, दुःख वेदना (खेता) पार लगाना (रंगत) आनन्द

[5]

तर्ज़ : *मेरी तकदीर के मालिक*

तेरे दर्शन की आशा लेके आया हूँ चरणों में तेरे
हे अन्तर्यामी! प्रभु प्यारे, तुम आओ मन मन्दिर मेरे ॥

भजन

मेरी रसना में हे दाता सुधारस ओ३म् का भर दे
तेरी भक्ति में लागे मन दया ऐसी प्रभु कर दे ॥ मेरी रसना ॥
मुझे लगता है सच्चा कोई भी साथी नहीं अपना
मुझे तो आसरा तेरा हितैषी तू सदा मेरा
मेरे विश्वास श्रद्धा भक्ति में शक्ति प्रभु भर दे ॥ मेरी रसना ॥
मेरा मन दुर्गुणों से दूर प्रभुजी तुम सदा रखना
जो मेरा मन भटक जाए तो मार्ग सही दिखा देना
कुछ ऐसा करके तेरा प्रेम मेरे मन में घर कर ले ॥ मेरी रसना ॥

मेरे निष्काम कर्मों से जो होता हो भला मुझसे
तो लेनी होगी परहित की कठिन शिक्षा प्रभु तुमसे
मेरे मन वचन कर्मों को प्रभु जी सार्थक कर दे ॥ मेरी रसना ॥
मेरे बढ़ते हुए कदमों को प्रभुजी सही दिशा देना
तेरे चरणों में ले आए वो अमृत पथ दिखा देना
सुधा सागर न भर गागर, भले इक बूँद ही दे दे ॥ मेरी रसना ॥

(सार्थक) सफल, सिन्द्ध, गुणकारी (गागर) छोटा घड़ा, गगरी (अमृत पथ) अमरता का रास्ता (सुधारस) अमृतरस (परहित) दूसरे का कल्याण

[6]

तर्ज : मैं तो जन्म जन्म की प्यासी रे

प्रभु जनम जनम के साथी रे
तेरे दीपक की जलती मैं बाती रे ॥ प्रभु जनम...
मेरे मन में तेरा ही ओ३म् नाम है
मेरे जीवन का यही वरदान है
तेरे ही कारण मिला ये नरतन
मन भावन अविनाशी ॥ प्रभु जनम...
मेरे होठों पे प्रभु तेरे गीत हैं
इन्हीं गीतों में तेरा संगीत है
मन के तार बजे तो रसना
गीत तेरे ही गाती ॥ प्रभु जनम...
मेरी नैया खिवैया संग जा रही
और जीवन लक्ष्य को पा रही
दूर किनारा फिर भी ना चिन्ता
क्योंकि प्रभु हैं माँझी ॥ प्रभु जनम...
तेरे चरणों की प्रभु मैं धूल हूँ
खिलने को जो तरसे वो फूल हूँ
फूल तो मैं तेरी बगीया का
जीवन मेरा माटी ॥ प्रभु जनम...

(रसना) जिह्वा, जीभ, ज़बान (खिवैया) नाव को पार लगानेवाला

[7]

तर्ज़ : लुटी जिन्दगी और ग़म मुस्कराए

विशाल नभ में तेरे लाखों चिराग़ जलते हैं
तेरी ही ज्योति को पा के प्रकाश करते हैं ॥

भजन

कभी धूप आए कभी छाँव आए
जीवन भी ऐसे चलता ही जाए ॥ कभी धूप...
कभी है ये जीवन काँटों के बस में
कभी फूल बनके घुले रंग रस में
प्रभु ने ही कर्मों के खेल खिलाए ॥ जीवन भी...
जो बाँटे उसे झोली भर भर के देता
जो संचित करे खुद को दुःखी कर लेता
कर्म ही हँसाये कर्म ही रुलाये ॥ जीवन भी...
जनम चक्र में जीव चलता ही रहता
कई योनियों में भटकता ही रहता
जनम मरण से छूट ना पाए
दयालु कृपालु तू अन्तर्यामी,
पाएँ तुझे साधु सन्त और ज्ञानी
जो तुझमें समाए वही तुझको पाए
जीवन के जाल से तभी छूट पाए ॥ कभी धूप...

[8]

तर्ज़ : सूना है मेरे दिल का जहाँ

न कर्म किया न धर्म, जिन्दगी यूँ व्यर्थ गई
दिया बुझा ही रहा रोशनी न हुई ॥

भजन

सूना क्यूँ मन का मन्दिर हुआ
ना मन में प्रभु का दीप जला
दीदार प्रभु का क्यूँ ना हुआ (2) ॥ सूना क्यूँ...
प्रभु से बिछड़ कर ये जिन्दगी
पतझड़ के जैसे बेमौसमी

अपना पता ना तुझको रहा
हस्ती रही ना कोई निशाँ (2) ॥ सूना क्यूँ...
सत्कर्म से क्यूँ तू दूर है
दुष्कर्म से क्यूँ मजबूर है
स्वार्थ में जीवनभर डूबा हुआ
अपने विनाश का कारण बना (2) ॥ सूना क्यूँ...
जिस दिल में प्रभु का दीदार था
दर्शन का तुझको भी अधिकार था
रहबर था राह थी क्यूँ ना गया
बेरंग जीवन से क्या है मिला? (2) ॥ सूना क्यूँ...
आजा तू बन्दे प्रभु की शरण
कर पश्चताप न छोड़ चरण
माँग क्षमा वो दयालु बड़ा
देगा वही तुझको सही रास्ता (2) ॥ सूना क्यूँ...

(दीदार) दर्शन (पश्चाताप) पछतावा

[9]

तर्ज़ : *ये रात ये तन्हाईयाँ*

श्रद्धा सुमन लाए प्रभु तेरे चरणों में हम
उज्जवल करो जीवन प्रभु निष्पाप हो अन्तर्मन ॥ श्रद्धा सुमन...
हम जब भी माया में फँसने लगे
और लोभ मोह में धँसने लगे
सौ सौ दफा रोके कदम, तूने प्रभु हरदम (2) ॥ श्रद्धा सुमन...
सन्मार्ग में जब आने लगे, तेरी दया हम पाने लगे
मन में हुआ विश्वास के, प्रभु राह करेंगे सुगम ॥ श्रद्धा सुमन...
ओ३म् नाम मुख से जपने लगे, प्रीतम प्रभु तुम अपने लगे
चाहत यूँ ही मन में रहे, पाएँ प्रभुके चरनन ॥ श्रद्धा सुमन...
अर्पण कर दें सर्वस्व प्रभु, छोड़ें तृष्णा वैमनस्य प्रभु
रसना भी भक्तिभाव से, गाए तेरी सरगम ॥ श्रद्धा सुमन...

(रसना) जीह्वा, जीभ, ज़बान (निष्पाप) पाप रहित, निर्दोष (सन्मार्ग) सत्यमार्ग (वैमनस्य) शत्रुता, ईर्ष्या, (सुगम) सरल, आसान

[10]

तर्ज़ : नैनों में बदरा छाए

मन में जो ओ३म् समाए जीवन नैया तर जाए
ऐसे में प्रभु तेरे दर्शन इक रंग रँगाए ॥ मन में जो...

तेरी दया से भगवन् तर गए अनेकों मुनिजन
तेरे ही ध्यान में प्रभुजी सुध विसार भूले तनमन
तेरी लगन प्रभुजी अपने दिल में लगा लूँ ॥ मन में जो...

बल बुद्धि विद्या दे दो, वेदों की शिक्षा दे दो
धर्म पे चलने की प्रभुजी परिपूर्ण इच्छा दे दो
निष्काम कर्म से अपना जीवन सजा लूँ ॥ मन में जो...

दर्शन के प्यासे नैया तुझ बिन ना पाएँ चैना
ऐ मन ये तुझसे कहना प्रभु आस में ही रहना
आसन बिछा मन मन्दिर में तुझको बिठा लूँ ॥ मन में जो...

ओ३म् गुणों की है खान आनन्दरूप सुख धाम
वेदों ने गाया गुणगान ओ३म् ही जीवन कल्याण
ओ३म् की ज्योति अपने मन में जगा लूँ ॥ मन में जो...

रसना तू जपले ओ३म् नाम, भज मन तू प्रातः और शाम
भक्ति का पा ले वरदान चरणों में देंगे प्रभु स्थान
घट श्वास रोम रोम में प्रभु को रमा लूँ ॥ मन में जो...

तेरे समर्पण हूँ मैं बलिहार तुझपर हूँ मैं
तेरी ही महिमा गाऊँ अपरम्पार तू है
सब तेरा, तू मेरा तुझको मैं पा लूँ ॥ मन में जो...

(घट) हृदय (अपरम्पार) जिसका पार न पाया जा सके

[11]

तर्ज़ : *तुम हो साथ रात भी*

दिन कहीं पे है तो कहीं रात है, अन्धकार है कहीं प्रकाश है ॥
पेड़ फूल फल ज़मीं पे हैं खिले, झूमझूम नदी सागर से मिले
जहाँ देखों वही पर बहार है,
हर शै का रंग कहीं भी कम नहीं है ॥ दिन कहीं...
सूर्य चन्द्र तारों के दीप जले, पवन बहे संग मधुर गीत चले
धरती गगन दोनों गले मिलें, जो स्वर्ग है कुदरत का वो यहीं है
कितना खुशनसीब ये जहान है, वो रहा सदा प्रकाशमान है
ऐसा कारीगर के सब हैरान हैं
ये सृष्टि काव्य जिसका वो कवि है ॥ दिन कहीं...
जहाँ देखो प्रभु का दीदार है, उसके कर्म में परोपकार है
सच्चे भक्त का वो तारनहार है
अपने भक्त की सदा सुनी है ॥ दिन कहीं...

(काव्य) कविता (कुदरत) प्रकृति

[12]

तर्ज़ : *जारे जारे उड़ जारे पंछी*

प्यारे आजा प्रभु के चरणों में, जीवन ना व्यर्थ गँवारे
मद में पड़ा है क्या रे, क्यूँ ना ये जीवन तेरे वश में ॥ प्यारे आजा...
क्यूँ वाणी मधुर ना हुई, तूने दिल दुखाए कई
ढली प्रीत दुःख की आहों में ॥ प्यारे आजा...
स्वार्थ में खो गई मति, रह गया तू होकर दुःखी
काँटे बिछाए राहों में ॥ प्यारे आजा...
आलस में डूबा रहा, किस्मत से जूझा रहा
बँधी जंजीर पाँवों में ॥ प्यारे आजा...
हीरा जनम ना रहा, कौड़ी के बदले गया
हारी बाज़ी मन के दावों में ॥ प्यारे आजा...
तू करले प्रभुका स्मरण, साफ करले मन का दर्पण
खोज प्रभु को मन के भावों में ॥ प्यारे आजा...
कर ईश चिन्तन मनन, कर उसका अनुकरण
गुण कर्म और स्वभावों में ॥ प्यारे आजा...

(आह) शोक, आर पीड़ा, दुःखकी साँस (मति) बुद्धि

[13]

तर्ज़ : ज़िन्दगी का अजब फ़साना है

प्रभु मन में मेरे समाना है, यही वरदान तुझसे पाना है ॥
तेरे दरबार में रहूँ हरदम, ओ३म् के नाम की गाऊँ सरगम
तेरे गीतों से मन सजाना है ॥ प्रभु मन...
तुझसे पाऊँ मैं फूल या काँटे, दान तेरा समझ लगाऊँ माथे
तेरी आज्ञा को मैंने माना है ॥ प्रभु मन...
तुझ को देखूँ प्रभु मैं हर रंग में, हर समय पाऊँ मैं तुझे संग में
तेरे चरणों की धूल पाना है ॥ प्रभु मन...
होवे बुद्धि पवित्र मन निर्मल, मन हो ना कभी मेरा दुर्बल
मुझे सन्मार्ग में ले जाना है ॥ प्रभु मन...
हाथ को जोड़ मैं करूँ वन्दन, जिन्दगी मेरी तू बना कुन्दन
तेरे मप में इसे तपाना है ॥ प्रभु मन...
तेरी मूरत है मन के मन्दिर में, प्रेम दीपक जलाए अन्तर ने
अब तो तेरा प्रकाश पाना है ॥ प्रभु मन...

(कुन्दन) स्वर्ण, सोना

[14]

तर्ज़ : *मेरी आँखों से कोई नींद लिए जाता है*

कई जन्मों से कृपा तू ही किए जाता है
मैं सदा तुझसे ही माँगू तू मेरा दाता है ॥ मैं सदा ॥
गीत तेरे गाएँगे हम बैठे चरणों में भगवन्
तेरी छाया में रहें और करें खुद को अर्पण
मन तेरे प्रेम का अनुभाव लिए जाता है ॥ मै सदा ॥
प्रीत जो प्रभु से लगी जा के अन्तर में जगी
ध्यान जब उसमें लगा मन में एक लौ सी जली
ये हृदय तेरा ही उपजाप किए जाता है ॥ मै सदा ॥
ज्ञान से जागे ये मन ध्यान से होवे चिन्तन
मन चित्त वश में होवे क्यों न होवें प्रभु के दर्शन
तेरा अनुभाव ही मतिमाह किए जाता है ॥ मै सदा ॥
साँस और धड़कन मेरी ओ३म् नाम बोल रही
ओ३म् के रंग में रंगी घट घट डोल रही
ओ३म् का ध्यान ही उमाह दिए जाता है ॥ मै सदा ॥

(अनुभव) प्रभाव, संकेत, तेज, महात्म्य (उपजाप) मौन जाप (मतिमाह) मतिवान, बुद्धिमान (उमाह) तरंग, लहर

[15]

तर्ज़ : देखो जी मेरा जीया चुराए लिए जाए

प्रभुजी मोरा भक्ति में मन रम जाए
भक्ति में मन रम जाए प्रभुजी (2) ॥ प्रभु जी...
चाँदी न माँगूँ सोना ना माँगूँ, दौलत का अम्बार न माँगूँ
ओ३म् रतन मिल जाए ॥ प्रभु जी...
तेरी कृपा से नरतन पाया, ज्ञान का इसने दीप जलाया
मन उजियारा छाए ॥ प्रभु जी...
ना मैं साधू ना सन्यासी, फिर भी दरस का मैं अभिलाषी
बैठा आस लगाएं ॥ प्रभु जी...
ना मैं जानूँ मथुरा काशी, मेरा ईश्वर घट घट वासी
घट में दरस दिखाए ॥ प्रभु जी...
मन को मैं साधूँ प्रीत डोर बाँधू, लोभ मोह से दूर मैं भागूँ
ओ३म् में चित्त रम जाए ॥ प्रभु जी...

(नरतन) मनुष्यजन (अभिलाषी) इच्छुक (दरस) दर्शन (घटा) हृदय

[16]

तर्ज़ : चल दिया दिल मेरा तोड़के

नाता प्रभु से बन्दे जोड़ ले, मन को विषयों से तू मोड़ ले
याद रखना प्रभु को सदा,
दुख मिटाएगा दाता तेरा ॥ नाता प्रभु से...
कर ना देना किसी का बुरा, दीन दुःखियों की लेना दुआ
तेरे कर्मों का होगा हिसाब, देना होगा प्रभु को जवाब
करते रहना तू सबका भला (2)
याद रखना प्रभु को सदा,
दुःख मिटाएगा दाता तेरा ॥ नाता प्रभु से...
जब भी भक्तों पे विपदा पड़े, भक्तवत्सल ही पीर रहे
दयावान है ईश्वर बड़ा, उसको सबके ग़मो का पता
तू ना समझा प्रभु की कृपा(2)
याद रखना प्रभु को सदा
दुःख मिटाएगा दाता तेरा ॥ नाता प्रभु से...

कर प्रभु की सदा बन्दगी, सँवर जाए तेरी ज़िन्दगी
क्यों न होंगे प्रभु मेहरबाँ, सत्कर्मों पे गर तू चला
अपना प्यार प्रभु पर लूटा (2)
याद रखना प्रभु को सदा
दुख मिटाएगा दाता तेरा ॥ नाता प्रभु से...

(पीर) दुःख, कष्टे (बंदगी)ईश्वर की आराधना, ईश्वर की भक्तिपूर्वक वन्दना, (मेहरबाँ) कृपालु
(विषय) लौकिक पदार्थ, वासनात्मक पदार्थ

[17]

तर्ज़ : *क्या साथ मेरा दोगे*

आधार प्रभु तेरा हर काल दिशाओं में
आया तेरे चरणों में तेरी प्रीत की छाँवो में ॥ आधार प्रभु...
जीवन में बढ़ूँ आगे, खुद अपने इरादों से
सच्चाई हो जीवन में, रहूँ दूर मैं पापों से
हर एक कदम रखूँ, सत्कर्मों की राहों में ॥ आया तेरे...
स्वार्थ को तजूँ मन से, परहित में लगे तनमन
बढ़े त्याग की ओर कदम, हों दूर विकारों से
हर पल हो रहम और प्यार, दिल और निगाहों में ॥ आया तेरे...
चरणों का पुजारी हूँ, तेरे दर का भिखारी हूँ
प्रभु तू है महादानी, तुझपर बलिहारी हूँ
हारुँ ना प्रभु बाज़ी, जीवन के दावों में ॥ आया तेरे...

(विकार) विकृत रूप, प्रलोभन, दोष, अवगुण
(बलिहारी) श्रद्धा भक्ति प्रेम आदि के कारण अपने को न्यौछावर करना

[18]

तर्ज़ : *दो दिन की मुहब्बत में हमने*

दो दिन के मिले इस नरतन में, कुछ खोया है कुछ पाया है
किसने ईश्वर को समझा है, किसने जीवन ही गँवाया है ॥
दो दिन....
किसने माया को थाम लिया और स्वार्थ से ही काम लिया।
किसने जाना प्रभु को मन से और कर्म सदा निष्काम किया ॥
कोई विषयों में उलझा ही रहा कोई शरण प्रभु की आया है ॥
दो दिन..

कोई दुःख देकर आघात करे और दुखती रग पर हाथ धरे।
कोई परहित की चिन्ता ही करे दुःखियों के दर्द में पीर हरे।
कोई रो रो जीवन काट रहा, कोई हँसा है जग को हँसाया है ॥
दो दिन....

कोई क्रोध द्वेष में ढलता रहा सबकी नजरों में खलता रहा
कोई प्रेम दया में पलता रहा और सबके दिलों में रमता रहा
किसने निज मन को जलाया है और किसने मान बढ़ाया है ॥
दो दिन....

जिसने दुर्गुण को छोड़ दिया सद्गुण से नाता जोड़ लिया
मन उत्तम कर्म में मोड़ लिया और ज्ञान से धर्म की ओर गया
जिसने निज लक्ष की खोज लिया उसने ये जन्म बचाया है ॥
दो दिन....

संसार को जिसने जान लिया वर्चस्व प्रभु का मान लिया
जीवन में त्याग को स्थान दिया सर्वस्व प्रभुका जान लिया
प्रभु का प्रभु को अर्पण कर दे उसने प्रभु प्रीतम पाया है ॥
दो दिन....

(रग) शरीर की नस (वर्चस्व) महत्ता, शक्ति

[19]

तर्ज़ : *जमीं से हमें आसमाँ तक*

ज़मी से प्रभु आसमाँ तक, ख़ज़ाने लुटाते रहोगे
दयालु है दाता तू दानी,
तो भक्तों की सुध क्यूँ न लोंगे ॥ ज़मीं से...
ये चाँद और सूरज ये नदियाँ ये पर्वत,
कैसे हैं सुन्दर नज़ारे
ये धरती ये अम्बर जज़ीरे समन्दर
जगमग चमकते तारे
अनोख़ी अजब तेरी कुदरत
कब तक दिखाते रहोगे? ॥ दयालु है...
ये जीवन जो पाया प्रसाद तेरा,
सुख आए दुःख चाहे आए

न तन भी किसी का, न धन भी किसी का
तो अधिकार क्यूँ हम जताएँ
बड़ी होगी दाता कृपा जो
ये बन्धन छुड़ाते रहोगे ॥ दयालु है...
लगी आस तेरी कि तुझको ही पाएँ,
जीवन को उन्नत बनाएँ
जो आज्ञा है तेरी उसी को ही मानें
मन सद्गुणों से सजाएँ
तेरे ओ३म् नाम का अमृत,
जो माँगे तो क्या तुम ना दोगे? ॥ दयालु है...

[20]

तर्ज : चन्दा रे जा रे जा रे

हम आए तेरे द्वारे, तेरे दरस की प्यास मन में जगा
तू ही माता पिता तू ही बन्धु सखा,
तारे तो तू ही तारे ॥ हम आए तेरे...
ना मानी प्रभु आज्ञा तेरी, की मनमानी बिना विचारे
पल पल छिन छिन घिरघिर, आए दुःख के बादर कारे कारे
तेरी महाशक्ति के आगे शीश झुकाए रह गए सारे
तेरी दया ने इतने तारे जितने न होगे नभ में तारे ॥ हम आए तेरे...
जब जब प्रेम के दीप जलाए क्रोध द्वेष के तूफाँ आए
लोभ ने अपने जाल बिछाए मोह से पग पग हम भरमाए
आत्मिक धृत दिया ज्ञान दीप को बुझे दीप अब पुनः जलाए
दीप-शिखा सम बिछे हुए हैं तव मारग में नैन हमारे ॥ हम आए तेरे...
कैसे स्वामिन् तुम्हें रिझाऊँ कैसे मन की व्यथा बताऊँ
वाणी में निरसता मेरी किसविध तेरे गीत मैं गाऊँ
तू अनन्त अपार है भगवन् कैसे तेरी थाह मैं पाऊँ
पार उतारो नैया खिवैया अब तो डोल रही मँझधारे ॥ हम आए तेरे...

(निरसता) भावनाहीन (थाह) हद, परिमिती

[21]

तर्ज : *हाय रे वा दिन क्यूँ ना आए*

जब से प्रभु मेरे मन आए
तू तू तू ही तू मन गाए ॥

जब से मैं तेरे चरणों में आया
दुःख दूर हुए सुख पाए ॥ जब से प्रभु...

मन रहा प्यासा दरस को तेरे
प्यास बुझाऊँ बढ़ जाए ॥ जब से प्रभु...

विनय अब यही मेरी, भक्ति में तेरी
मेरा तन मन रंग जाए ॥ जब से प्रभु...

[22]

तर्ज : *सजन संग काहे नेहा लगाए*

मगन मन मोरा, प्रभु गीत गाए
सुर को सजाए ॥ मगन मन...
भोर गई के रैना पक्षीगण गाएँ महिमा
तरुबाँही शीश झुकाए नदिया भी चाहे बहना....हो जी हो
धरती संग गाए बरखा पर्वत संग पवन ॥ मगन मन...
सागर से व्योम मण्डल तक नादब्रह्म का है गुञ्जन
योगी ऋषि मुनि हैं पाते दिव्यरूप तेरा दर्शन....हो जी हो
जल,वायु, अग्नि, पृथ्वी गाए दूरगगन ॥ मगन मन...
मंगलमय प्रेम स्वरों से जागे मेरा अन्तर्मन
शाश्वत स्वरों की मधुमय पाऊँ हृदय में कम्पन....हो जी हो
नित तेरा करता रहूँ मैं चिन्तन और मनन ॥ मगन मन...

(तरुबाँही) वृक्ष की शाखाएँ या डाल (शाश्वत) नित्य, स्थाई (नादब्रह्म) ब्रह्मस्वरूप घोष (व्योममण्डल) आकाश का घेरा

[23]

तर्ज़ : *ओ मुड़ के जानेवाले ज़रा*

भक्तों में तेरे भगवन् मुझको भी बिठाना
अज्ञान के अन्धकार में तू ज्योत जलाना ॥ भक्तों में तेरे...
तंग आ चुका हूँ पाप के भारी बोझ से
इन पाप कर्मों ये प्रभु तू दूर हटाना ॥ भक्तों में तेरे...
मंजिल ही नहीं पास मेरे राही दूर का
गर भूल जाऊँ राह तो तू राह दिखाना ॥ भक्तों में तेरे...
आशा लिए पाने तुझे आया तेरी शरण
शरणागत को मँझधार से तू पार लगाना ॥ भक्तों में तेरे...

[24]

तर्ज़ : *दिल ही तो है तड़प गया*

जीने को तो तू जी रहा विषयों में मन लगाए क्यूँ
मन तो तेरा भटक रहा मन को तू व्यर्थ सताए क्यूँ? ॥ जीने को तो...
मुख से कहे कड़े वचन, बदले में ना हुए सहन
हमदर्द ना कभी हुआ, मन में दया न आए क्यूँ ॥ जीने को तो...
पापों से मन हटा नहीं, सत्‌कर्म में लगा नहीं
काँटों की राह पे जिन्दगी चोट पे चोट खाए क्यूँ ॥ जीने को तो...
आबाद खुद भी न हुआ, बरबाद औरों को किया
दुखियों को तू सताए क्यूँ लेता रहा तू हाय क्यूँ ॥ जीने को तो...
धर्म पे ना तेरा चलन ऋषियों का ना सुना कथन
बन्दे ये तेरी भूल है धरम से निजात पाए क्यूँ ॥ जीने को तो...
मन से हटा मद मोह को लोभ काम क्रोध को
बाकी जन्म सँवार के प्रभु की शरण न आए क्यूँ ॥ जीने को तो...

(निजात) = छुटकारा

[25]

तर्ज़ : *अपनी तस्वीर को आँखों से लगाता क्या है*

अपने दुःख दर्द तू दुनियाँ को सुनाता क्या है
मन को समझा के धरे धीर तेरा जाता क्या है ॥ अपने...
जिसको अपना कहे जग में बता वो क्या है
जो तू करता है जमा साथ ले जाता क्या है? ॥ अपने...
जा के मन्दिर में न स्वार्थ के सिवा कुछ माँगा
माँगते माँगते क्यूँ अन्तर में थक जाता क्या है ॥ अपने...
मन सजाता नहीं तू तन को सजा लेता है
तन को फिर छोड़ के दुनियाँ से ले जाता क्या है ॥ अपने...
ये अहंकार ना झुकने दे प्रभु चरणों में
सर झुकाने में भला हाथ से जाता क्या है? ॥ अपने...
ज्ञान बहता है मगर तेरा घड़ा खाली है
बिन कमाई का घड़ा प्रभु को दिखाता क्या है? ॥ अपने...
है तेरी माँग तो तू माँग ले प्रभु को प्रभु से
तू 'ललित' जान ले प्रभु से तेरा नाता क्या है? ॥ अपने...

[26]

तर्ज़ : *बैरन नींद ना आए*

मन क्यूँ तेरा भरमाए....बन्दे
शरण प्रभु की ना आए.... ॥ मन क्यों...
सूना पड़ा तेरा मन का मन्दिर
घोर अन्धेरा मन के अन्दर
उलझन सुलझ न पाए....(2) तेरी ॥ शरण प्रभु की...
लोभ व्यसन में मन क्यूँ लागा
राग-द्वेष से दूर ना भाग
इत उत चित्त रम जाए....(2) तेरा ॥ शरण प्रभु की...
ना जाने तू प्रीत की भाषा
फिर भी लगाए प्रभु से आशा
दर्शन किस विध पाए....(2) बन्दे ॥ शरण प्रभु की...
ना कर पाया ओ३म् का सिमरन

पापी रूप देख तड़पा मन
करनी पर पछताए....(2) बन्दे ॥ शरण प्रभु की...
क्या लेगा दुनियाँदारी से
प्रीत लगा प्रभु हितकारी से
जो सिमरे सुख पाए....(2) बन्दे ॥ शरण प्रभु की...
आस जो तुझको ईश-मिलन की
पाले रंगत आनन्दघन की
प्रेम रंग रंगाए....(2) बन्दे ॥ शरण प्रभु की...

(व्यसन) विषय, वासना (हितकारी) लाभक, पक, हित करनेवाला

[27]

तर्ज़ : *चली रे चली रे मैं तो देस पराए*

लागी रे लगन मुझको प्रभु के मिलन की
प्रभु की कृपा बिन न मुक्ति जीवन की ॥ लागी रे...
न देना प्रभु मोह-माया में फँसने
भटकने लगूँ तो मुझे करना बस में
न जानूँ प्रभु रीत मन के दमन की ॥ लागी रे...
ना पापों से मन जाए कभी अनुपतन में
हो मन 'सुमना' जाए धर्माचरण में
रहे मन में वृत्ति तेरे अनुसरण की ॥ लागी रे...
जहाँ तू रखे दाता खुश हूँ जीवन में
ख़िज़ा खार निर्जन सहर या चमन में
जहाँ भी रहूँ बनके धूल चरण की ॥ लागी रे...
जनम चक्र में घूमता ही रहा हूँ
समझ ना सका दाता मैं कब कहाँ हूँ
न इच्छा प्रभु मुझको आवागमन की ॥ लागी रे...
रहे याद तेरी प्रभु दुःख या सुख में
न मैं मैं रहूँ और समाऊँ मैं तुझमें
न तन की रहे सुध, रहे सुध न मन की ॥ लागी रे...
जो होवें विदा प्राण जब मेरे तन से
प्रभु नाम निकले मेरे मुख से मन से
है मुझको प्रभु आस तेरी शरण की ॥ लागी रे...

(खिज़ाँ) पतझड़ (सुमना) अच्छे मनवाला (अनुसरण) पीछे जानेवाला (धर्माचरण) धार्मिक, धर्म का आचारण (सदुप्रदेश) सत्य का उपदेश

[28]

तर्ज़ : सपने में सजन से दो बातें

उठ प्रातः समय मन मन्दिर में, क्यूँ दीप जलाना भूल गए
जिस दाता ने भण्डार भरे, ऋण उसका चुकाना भूल गए ॥
उठ प्रातः...

मन में तृष्णाएँ जागीं थीं, जीवन की दौड़ में आगे थी
भटकाया उलझी राहों ने, सत्कर्म कमाना भूल गए ॥
जिस दाता ने...

तेरी याद तो दुःख में आई थी, और सुख में याद भुलाई थी
सुख ने उलझाया पापों में, और पुण्य कमाना भूल गए ॥
जिस दाता ने...

सारा जीवन तो खो बैठे, दुःख दर्द रोग सब ले बैठे
क्या लाभ है अब पछताने से, जब वक्त की क़ीमत भूल गए ॥
जिस दाता ने...

(तृष्णा) प्यास, अभिलापा, लिप्सा, लोभ, लालच

[29]

तर्ज़ : मेरे पिया गए रंगून

कहीं सागर कहीं पहाड़, जहाँ जीवन की बहती धार
प्रभु तेरी याद दिलाती है, तेरी महिमा समझाती है ॥ प्रभु तेरी...
नभ में रवि शशि तारे बहुत चमकाए (2)
सब एक स्वर से महिमा तेरी प्रभु गाए(2)
तेरे दान का खुला है द्वार, तू देता बिन माँगे हरबार ॥ प्रभु तेरी...
तू सर्वकाल और सबके मनों का ज्ञाता (2)
तू शरणागत के कष्ट दुःखों का त्राता (2)
तू सर्वेश्वर सर्वान्तयामी, तू ही सर्वाधार ॥ प्रभु तेरी...
तेरे गुण गौरव के गीत प्रभु मैं गाऊँ (2)
इतनी शक्ति दो मार्ग तेरे चल पाऊँ (2)
नैया के तुम पतवार लगाते पार, हो जब मँझधार ॥ प्रभु तेरी...

(सर्वकाल) तीनों काल (ज्ञाता) जाननेवाला (त्राता) दूर करनेवाला (सर्वान्तरयामी) सबके हृदयों को जाननेवाला

[30]

तर्ज़ : *यूँ हसरतों के दाग़*

आया हूँ तेरे दर पे भक्तिपाव को लिए
दस्तक मैं दे रहा हूँ प्रभु द्वार खोलिए ॥
जीवन में कितने कर्म भले और बुरे हुए
अन्जाने में कुछ और जानबूझ के किए
है आपकी खुशी प्रभु कैसे भी तोलिए ॥ दस्तक मैं...
होठों पे ओउम नाम है वो मन में भी रहे
चातक के जैसी प्यास वही हूबहू रहे
धागा है ध्यान ओ३म् के मोती पिरो लिए। ॥ दस्तक मैं...
जागा हूँ मैं जीवन में चाहे देर से भले
आशा के दीप कुछ तो मेरे मन में भी जले
अज्ञान वश जीवन में बहुत देर सो लिए ॥ दस्तक मैं...

[31]

तर्ज़ : *अमर है राम भरत का प्यार*

हृदय से करो प्रभु को प्यार, पालन पोषण रक्षण करता
वो ही तारनहार ॥ हृदय से करो...
उस ईश्वर से अलग ना होना। जिसके हम अनुयायी॥
पृथ्वी से आकाश तलक। हर तत्व परम सुखदाई॥
गतिमान ये विश्व है सारा।
जिसका प्रभु आधार ॥ हृदय से करो...
ना छुपकर कोई पाप कर सके, पाप बड़ा दुःखदाई।
ये ब्रह्माण्ड ही देह प्रभु का॥
कण कण उससे प्रभावी। क्यों न करे शुभ कर्म ये मनवा॥
पुण्य ही सुख का सार ॥ हृदय से करो...
ना कर कोई भरम प्रभु पर, कर विश्वास सदा ही
उसकी भक्ति से जाने मन, उसकी ही प्रभुताई
साधक तो आनन्द विभोर हो
छेड़े मन के तार ॥ हृदय से ॥

(अनुयायी) अनुसरण करनेवाला (प्रभुताई) बड़प्पन

[32]

तर्ज़ : जो तो आप पर येथे कुणीना आधार...

दाता कर्म फल देते, कर्म अनुसार
पाप करें दुर्गति पुण्य सुखकर
पाप करें दुर्गति पुण्य सदा सुखकर ॥ दाता कर्म...

देह की अन्धेरी कुटिया, इन्द्रियाँ बनी हैं दास
करे आत्मा जो संयत, इन्द्रियाँ करे ना पाप
कर्म इन्द्रियों का संयम, सिद्धि का आधार ॥ पाप करे...

देह जल से होवे शुद्ध मन हो सत्य से समृद्ध
सदा विद्या और तप से, होवे आत्मा प्रबुद्ध
ज्ञान से सदा ही बुद्धि होती शुद्धसार ॥ पाप करे...

सारथि के अश्व नियम में, इन्द्रियाँ भी आत्म संयम में
जब तलक ना ज्ञान संयम का अनुष्ठान असम्भव सा
विषयों की आसक्ति ही, आत्मा का विकार ॥ पाप करे...

पूर्वकृत कर्मों से अर्जित, भोग के साधन जीवन के
सुकर्मी को देता ईश्वर सुख सारे गिन गिन के
वासना विषय का फिर क्यूँ करे मन विचार ॥ पाप करे...

प्रकृति से जितना हो संग, ज्ञान का प्रकाश हो मंद
पाए जो प्रभु का संग पाप ना रहे ना दम्भ
कर्म फल विधान प्रभु का कर्म जीवनसार ॥ पाप करे...

(पूर्वकृत) पहले किए हुए (संयत) व्यवस्थित (संयम) मन वश में रखना (समृद्ध) उन्नत, प्रबुद्ध (दम्भ) अकड, अहंकार (सिद्धि) प्राप्ति (अनुष्ठान) नियमपूर्वक कार्य करना (विधान) व्यवस्था

[33]

तर्ज़ : *विसरशील खास मला दृष्टि आड होता*

तू ही मात तू पिता रक्षक सुखदाता
मन लगा दे तेरी ओर है यही अभिलाषा ॥ मन लगा दे...
संसारी हैं मात-पिता कब तलक ये नाता
मित्र बन्धु बान्धव का साथ छूट जाता
हर जनम में हर किसी का साथ तू निभाता ॥ तू ही मात...
तेरे हर सम्बन्ध तेरा भक्त जान पाता
सारे नाते स्थापित कर और क्या रह जाता
भक्त को तेरी ही आस तेरा संग सुहाता ॥ तू ही मात...
ऐसा गुण किसी में नहीं जैसा तुझमें दाता
प्राणियों को उन्नति के साधन तू दिलाता
पाप नाशक दिव्य तेज मस्तिष्क में दिखाता ॥ तू ही मात...
परमात्मग्नि का जीवनदायी तेज भाता
ईश्वर का अग्निरूप शुद्ध करे आत्मा
ढूँढ़ता कहाँ, प्रभु का आत्मा से नाता ॥ तू ही मात...

[34]

तर्ज़ : *गोड तुझा त्या स्वप्ना मधुनी*

त्याग सके ना प्रभु को कोई आत्मा का परमात्मा वो ही
आँखों को पुतली ना दिखे पास है फिर भी आँखों ही के
आत्मा के सन्निकट है ईश्वर, दर्शन दे तत्काल....दयानिधे ॥
त्याग सके ना ॥
देखना चाहे सदि परमेश्वर गहन उतर जा काव्य के भीतर
प्रभु से गुणी कौन है बेहतर महिमा उसकी विशाल....दयानिधे ॥
त्याग सके ना ॥
दृष्यकाव्य का जग है द्योतक, ज्ञानी जन उसके अनुमोदक
महाकाव्य की वेद है पुस्तक, कवि प्रभु हैं कृपाल...दयानिधे ॥
त्याग सके ना ॥
देख सृष्टि प्रभु के दर्शन कर आत्मा को विश्वात्मा में धर
आत्मविभोर करे प्रभु दर्शन हृदय जगे स्वर ताल.....दयानिधे ॥
त्याग सके ना ॥

(काव्य) कवि के गुणों से युक्त (सन्निकट) अत्यन्त पास (अनुमोदक) समर्थक (दृष्यमान) दिखनेवाला

[35]

तर्ज़ : *आपकी बातें करें*

स्व-प्रकाश स्वरूप ईश्वर तेरा अभिनन्दन करें
ज्ञान स्वरूप जगत के स्वामी कर्म उत्तम हम करें ॥
हों सदाचारी, हृदय में प्रेम भाव सदा भरें
प्राणीमात्र से प्रेम करके तेरे चरणों में रहें
बुद्धि हो पावन हमारी मन को निर्मल हम करें ॥
ज्ञान और विज्ञान से ऐश्वर्यवान सम्पन्न रहें
जो मिला ऐश्वर्य धर्म के हित सदा अर्पण करें
त्याग के कल्याण पथ पर अग्रसर जीवन करें ॥
कुटिल कर्मों से प्रभुजी दूर हमको किया करें
वासना विषयों के जाल से छूटें ऐसी दया करें
कमल के पत्ते पड़ी उस बूँद सा जीवन करें ॥
प्रार्थना स्तुति और उपासना तेरी भक्ति हम करें
आत्मर्शन करके आनन्द में सदा प्रभु हम रहें
भाव सात्विक उपजे मन में, ऐसा तन्मय मन करें ॥

(स्वप्रकाश) स्वयं प्रकाशित (कुटिल) बुरा, टेढ़ा (तन्मय) दत्तचित्त

[36]

तर्ज़ : *चले जा रहे हैं*

जग जन के नायक दयानन्द हमारे
सदा ही रहेंगे ऋणी हम तुम्हारे ॥ जग जन के...
तुम्हारे बिना नारी होती बेचारी
इक इक करके गौअें कट जाती सारी
दलित दीन विधवाओं के कष्ट निवारे ॥ सदा ही...
न कष्टों की परवाह, ना मृत्यु का डर था,
न जुल्मों का शिकवा, ये सच का असर था
तपस्वी ऋषि सा मिलेगा कहाँ से? ॥ सदा ही...
टिके ना पाखण्डी ना धूर्त ना मूरख,
थे शास्त्रार्थ ऋषि के सत्य के पूरक,
वो ज्ञानी से चमके जैसे सितारे ॥ सदा ही...
जहाँ से मिले कष्ट, संयम से झेले,
अजय थे खिलाड़ी अकेले ही खेले,
खेल खेला ऐसा ना कोई खेला रे ॥ सदा ही...

जो वेदों की विद्या दी अमृतमयी थी,
ऋषि से पढ़ाई सुनाई गई थी,
प्रकाशित हुए नगर गलियाँ चौबारे ॥ सदा ही...
बहाई थी करूणा दिखाई दया थी,
विद्या सिखाई, अविद्या हटी थी
जन जाति धर्म में किए उजियारे ॥ सदा ही...
ज़हर के कहर से दयानन्द अभय था
क्षमा के लिए ऋषि का दिव्य हृदय था
इस लोक को बना परलोक सिधारे ॥ सदा ही...
जग से गए ऋषि दिल से ना जाएँ,
पल दिन सदियाँ युग बीतें चाहे,
स्वामी ऋषि योगी प्राणों से प्यारे ॥ सदा ही...

[37]

तर्ज़ : *हमसफ़र साथ अपना छोड़ चले।*

महर्षि सत्य द्वार खोल गए जग को वैदिक धर्म से जोड़ गए
महर्षि सत्य....
धर्म का जब प्रकाश ही न रहा, ना अटल वेदों पे विश्वास रहा,
रत्न वेदों के अनमोल दिये, लोग हुए ॥ जग को....
आर्य जाति का ना था नामोनिशाँ, फैला अज्ञान ज्ञानदीप बुझा
हमको वेदों की ओर मोड़ गए, लोग हुए ॥ जग को....
पाप पाखण्ड उखाड़े थे जड़ से, थे सुधारक वो पाँव तक सर से
धर्म आया अधर्मी दौड़ गए ॥ जग को....
करके मंथन रचा सत्यार्थ प्रकाश, सत्य के प्यासों की बुझा दी
ऋषि भ्रमजाल सारे तोड़ गए ॥ जग को...
राह वेदों की ऋषि चलते रहे, थे कुपथ पर उन्हें बदलते रहे
गढ़ पाखडियों के तोड़ गए ॥ जग को...
कष्ट आए, धीरज से सहते रहे, राह काँटो की थी गुज़रते रहे
दुःख में ऋषि सुख का साथ छोड़ गए ॥ जग को....
जो भी थे कर्म ऋषि के थे निष्काम, समझो प्रभु से मिला महावरदान
धन्य हैं हम, जो देव लोग दिए ॥ जग को....
त्याग तप धर्म और सत्य दया, शब्दों में कर सके ना हम तो बयाँ
ईश-धन के ख़ज़ाने खोल गए ॥ जग को...

पी के विष बाँटते रहे अमृत, ना किया दुष्टों का कभी भी अहित
न्याय दण्ड सब प्रभु पे छोड़ गए ॥ जग को...
ऐसे विरले ही लोग जग से गए, कोई जाता नहीं यूँ हँसते हुए
इस महात्मा को प्रभु थे खोज रहे ॥ जग को......
जब थे ऋषि साथ हम संभलते रहे, उनके आदर्शों पे हम चलते रहे
आज क्या बात मुँह को मोड़ चले ॥ जग को...
हम ऋषि तुझको नमन करते रहें, सार्थक तेरे सपन करते रहें
जग में जलती वेदों की ज्योत रहे ॥ जग को....

[38]

तर्ज़ : *जो हमने दासताँ अपनी सुनाई*

अन्धेरा तो जगत का था ऋषिवर आप क्यूँ रोए?
थे आँसू दीन दुःखियों के ऋषिवर आप क्यूँ रोए? ॥
धर्म के नाम पर मनमनीयाँ करते फरेबी थे
जहाँ भटका दिया लोगों को बिन कारण भटकते थे
थे दुःख तो भ्रमितों के ऋषिवर आप क्यूँ राए? ॥
ये मूरख कह रहे थे नारीयों को पैर की जूती
सति विधवाएँ बेबस थीं, थीं उनकी किस्मतें फूटीं
दशा तो बिगड़ी नारी की ऋषि वर आप क्यूँ रोए? ॥
कहाँ इक देश ऋषियों का, कहाँ ये वहशियों का था?
कहाँ वो वेदों का सत्पथ, कहाँ ये सम्प्रदायाओं का?
था भाई भाई में आपस का झगड़ा आप क्यूँ रोए? ॥
हुई थी दुर्दशा दलितों की आँहे भरती साँसों में
दया भी दफन थी गौओं की बेबस भीगी आँखों में
कटी तो गर्दनें उनकी ऋषिवर आप क्यूँ रोए? ॥
स्वदेशी राज्य ही बेहतर कहें दयानन्द स्वामीजी
कोई कितना करे अच्छा, न इच्छा है गुलामी की
गुलामी में तड़पना तो हमें था आप क्यूँ रोए? ॥
सच्चाई की थी ये अग्नि परीक्षा ज़हर खाने की
न ख़्वाहिश थी कभी असत्य पथ पर जिन्दगानी की
समय था जब विदाई का ऋषिवर आप ना रोए? ॥
दयानन्द सा दयालु क्या कभी किसी युग में होता है
कहाँ इच्छा प्रभु की लेके हँसनेवाला होता है
जिन्हें विष देके हँसना था वो छाती पीट क्यूँ रोए? ॥

[39]

तर्ज : *जिन्दगी देनेवाले सुन*

दयानन्द गाऊँ तेरे गुण
कैसा उपकार तू कर गया
तेरा प्यार दिलों में भर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
तू ना आता तो ये जग सँभलता नहीं
वेद के ज्ञान का दीप जलता नहीं,
धर्म बचता नहीं, आर्य जगता नहीं, युग बदलता नही,
तू जो आया समाँ बदल गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
तू ना आया तो गौएँ भी कटती रहीं
विधवा नारी अँगारों पे जलती रहीं
ज्ञान विरान था, फैला अज्ञान था, देश निष्प्राण था,
कुप्रथाओं से मुक्त कर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
दासता में पड़ा था हमारा वतन
खुद की भूलों से उजड़ा था प्यारा चमन
ऋषि का इक वाक्य था, नारा स्वराज्य का, देश के भाग्य का,
रुख़ आजादी की ओर कर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
पापी दुष्टों पे भी थी दया की नज़र,
दी नसीहत सभी को, सही वक्त पर,
शुद्ध आचार था, शुद्ध व्यवहार था, प्यार उपकार था
प्रेम महर्षि का जादू कर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
था समन्दर सा दिल दयानन्द तेरा
कर सका ना ऋषि तेरा कोई बुरा
घातक नादान था, उसको ना भान था, तू दयावान था
क्षमा विषदाता को कर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...
तेरे गुण तो ये वाणी कह सकती नहीं,
बिने कहे भी ये चुप रह सकती नहीं,
ईश-वरदान था, प्रतिभावान था, धर्म का प्राण था,
नाम अपना अमर कर गया ॥ दयानन्द गाऊँ...

[40]

तर्ज़ : *बैयाँ ना धरो*

दयानन्द तुम थे दयावान्
गुणों के थे भंडार ॥ दयानन्द तुम...
निकले थे अपने घर से, मिलना था सच्चे शिव से
तो आए गुरुद्वार ॥ दयानन्द तुम...
तुमने बजाई बंसी, वेदों के स्वर से ॥ 2 ॥
जगाया संसार ॥ दयानन्द तुम...
दुःखियों के आँसू, बहते, ऋषि कैसे ये सब सहते
हुए थे दिलेज़ार ॥ दयानन्द तुम...
मतवादी पंथी बहके, अज्ञान में रहके (2)
मिटाया अन्धकार ॥ दयानन्द तुम...
नफरत के शोले भड़के, मानव था दानव स्तर पे
सिखाया सत्याचार ॥ दयानन्द तुम...
कपटी थे गाली बकते, ऋषि अनसुनी करते
थे संयमी अपार ॥ दयानन्द तुम...
कुन्दन बने ऋषि तप से, नहीं एक के थे सबके
दिलों में भरा प्यार ॥ दयानन्द तुम...
सत्य था जीवन से बढ़के, डरे ना वो विष खंजर से
मृत्यु भी गई हार ॥ दयानन्द तुम...
गए हँसते हँसते जग से, ईश आज्ञा, धर ली सर पे
खुला था मोक्ष द्वार ॥ दयानन्द तुम...

[41]

तर्ज़ : *सीने में सुलगते हैं अरमाँ*

दयानन्द तेरे अनुपम उपकार
हृदय के भाव जगाते हैं
दया प्रेम त्याग परहित मिलकर
इक स्वर तेरी गाथा गाते हैं ॥ दयानन्द तेरे...
कैसी दुर्दशा थी भारत की, विद्या वेदों की नादारत थी
तेरे जैसे ऋषि ज्ञानी ही, आकर अज्ञान मिटाते हैं ॥ दया प्रेम...

फैले थे कितने मत पाखण्ड, वेदों का बजाया अमर शंख
उपनिषद् वेद के हर पन्ने, अब तेरी छबि दिखाते है ॥ दया प्रेम...
नारी पे विपदा भारी थी, कटती गौएँ हितकारी थी
तेरे जैसे उपकारक ही, गौ अबलाओं को बचाते हैं ॥ दया प्रेम...
हर कौम को ऋषि तुम प्यारे थे, जग-प्रेम के भाव तुम्हारे थे
तेरे जैसे ही मित्र सखा संसार को कुटुम्ब बनाते हैं ॥ दया प्रेम...
ऋत सत्य हृदय के द्वारे थे जिसने किए तर्क वो हारे थे
ऋषि सबके हृदय की बगियाँ में सत्यार्थ प्रकाश उगाते हैं ॥ दया प्रेम...
आँखे सुख वैभव से मोड़ी सबको सुख पहुँचाने दौड़ी
तेरे जैसे अनुपम माली वेदों में बहारें लाते हैं ॥ दया प्रेम...
तुम धर्म के खातिर विष चखते, पर हित के लिए अमृत रखते
तेरे जैसे दयावान ऋषि संसार में विरले आते हैं ॥ दया प्रेम...
तेरी आत्मज्योति को ऋषि प्यारे, महसूस आज भी करते हैं
क्या तेरे जैसे पूर्ण पुरुष हृदयों से भुलाए जाते हैं? ॥ दया प्रेम...

[42]

तर्ज़ : *सांग तू माझाच ना*

आर्य क्यों सोया पड़ा खुद जाग तू जग को जगा
अपने संकल्पों से ऋषि दयानन्द के ऋण को चुका ॥ आर्य...
तुम तनिक सोचो असत्य से महर्षि कैसे लड़ा
कष्ट ने किए आक्रमण पर कष्ट को झुकना पड़ा
दे गए मघवन् ऋषिवर वेद ज्ञान की सम्पदा ॥ आर्य...
जागृति का सूर्य बनकर छा गया संसार पर,
वेद ज्ञान को कर उजागर चल दिया उपकार पर,
ऋषि के सत्यार्थ प्रकाश से सत्य की जागी प्रभा ॥ आर्य...
धर्म की खातिर वो जान से जान के अन्जान था
ध्यान था गुरु वचन का जिसमें निहित सन्मान था
आर्य शिष्य ऋषि के तुम दायित्व तुम पर है बड़ा ॥ आर्य...
लोग जागें, इससे पहले, तू 'ललित' खुद को जगा
कदम लाख चले ऋषि तू इक कदम चलके दिखा
प्राण बाती बुझे तो क्या, कुछ वेद दीप जला के जा ॥ आर्य...

[43]

तर्ज़ : *है इसी में प्यार की आबरू*

ऋषिवर हृदयस्पर्शी हो तुम, दिल से तुझे ना जुदा करें
जो सुझाया वेदों का ज्ञान पथ, निशदिन उसी पे चला करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

न तजा कभी सत्य मार्ग को, ठुकरा दिया निज स्वार्थ को (2)
परमार्थ का जो दिखाया पथ, चलो हम भी सबका भला करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

जो पराए आँसू थे खुद पिए, चले काँटो पे हँस के जिए(2)
संयम हो धैर्य हो शांत चित्त, मृदु-भाव दिल में बहा करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

तेरे तर्कों से श्रद्धा जगी, अन्धश्रद्धा सर पग धर भगी (2)
जो दिखाया सत्य का अमर पथ, बन आर्य उसी पे चला करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

ऋषि मृत्यु से बेफिक्र थे, ईश्वर अमृत पुत्र थे (2)
मृत्यु में जीवन की कला, ऋषिवर से हम सीखा करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

जो कमा के दे दी सम्पदा, वो बढ़ेगी कब कैसे भला (2)
ऋषि ऋण को जो ना चुका सके, कहो आर्यों किससे गिला करें ॥
ऋषिवर हृदयस्पर्शी...

[44]

ये दिल तो दयानन्द को ही चाहता है
ऋषि गीत गाने को जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...
तड़प थी ऋषिवर को वैदिक धर्म की
रगों में बहाने के जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...
हुई एक मुद्दत बुझा एक दीपक
चन्द आँसू बहाने को जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...
निगाहों से ओझल हुए हैं दयानन्द
तसव्वुर में लाने को जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...
जिये भी मरे भी वो दुनियाँ की ख़ातिर
हक़ीकत बताने को जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...
क्षमा त्याग सेवा दया का वो जज़्बा
ज़माने में लाने को जी चाहता है ॥ ऋषि गीत...

1. सिन्धु की लहरों का झूला

परिप्रासिष्यदत् कविः सिन्ध्योरूर्मावधि श्रितः।
कारूं बिभ्रत पुरुस्पृहम् ॥

ऋ ९.१४.१, साम. ४८६

तर्जः दूर किनारा राहिला (सू.सू.मा।)

आनन्द सिन्धु बह रहा, लहरों पे क्रीड़ा कर रहा है
माँझी रे, ओ ऽऽ माझी रे (2)
इधर मैं न जाने, कब से खड़ा हूँ, नाव-सवारी को तरसा हूँ
शीघ्रता से जाके, प्रभु संग बैठूँ, स्तोता मैं बन के खड़ा हूँ
ये जलधारा, जीवनधारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
सोम की महत्ता, यहाँ क्षुद्र मैं हूँ, पाँव आगे बढ़ते नहीं हैं
ध्यान है स्थिति पर, साहस नहीं है, नज़रे प्रभु पे टिकी हैं
ये जलधारा, जीवन धारा ॥ 2 ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
ललक है हृदय की, बनें प्रभु माँझी, प्यास भी तो कब से लगी है
प्रभु और मेरे बीच की दूरी, मन को ना सहन हुई है
ये जलधारा, जीवन धारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
चिरकाल से ही प्यास भरी दृटि, सोम प्रभु की ओर भागे
सोम प्रभु कहते छोड़ दे चिन्ता, कुछ तू बढ़, कुछ मैं बढ़ता हूँ आगे
ये जलधारा, जीवनधारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
सोम सच्चिदानन्द दयासिन्धु दानी, पवमान अनुपम कवि हैं
सत्काव्य को भी वही आँकते हैं, प्रेरणा की शक्ति अग्रणी है
ये जलधारा, जीवनधारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
प्रभु-प्रेरणा से बढ़ रहा हूँ आगे प्रार्थी प्रभु का बन गया हूँ
स्तोत्र गान करके समर्पित हृदय से, सत्काव्य को समझ रहा हूँ
ये जलधरा जीवन धारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
अब तो लग रहा है, बने प्रभु माँझी नाव मेरी आगे कर रहे हैं
अधिक मुझसे शायद प्रसन्न वो हुए हैं, दोष मेरे सारे रहे हैं
ये जलधारा जीवन धारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...
मुझे मेरे माँझी पवित कर रहे हैं, हाथ आशीस के सर पे हैं
आनन्द-सिन्धु में झुला करके मुझमें, लहरों की मस्ती भर रहे हैं ॥
ये जल धारा, जीवनधारा ॥ हो माँझी रे...आनन्द सिन्धु...

क्रीड़ा=खेल, लीला, सोम=अमृत, ललक=उत्कृष्ट इच्छा, बहुत चाह, पवमान=अत्यन्त पवित्र दूसरों को भी पवित्र करने वाला, स्तोत्र=स्तव स्तुति, स्तुतिगीत, पवित=शुद्ध, पवित्र, विमल, सत्काव्य=संसार रूपी शिक्षा प्रद ज्ञानवर्धक काव्य

2. भगवान के ज्ञान से मृत्यु-भय-नाश

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चनो नः
तमेव विद्वान न विभाय मृत्युरात्मानं धीरमजरं युवानाम्
अथः १०/८/४४ ॥

तर्ज़ : ***कन्मानिक्कली इन्द कोटिले, कोनी उड़किले नीयो अन्वया***

TVFL 151 B2

ज्ञानी-मूर्ख पर मृत्यु का है डर, योग से आत्मा होता है अमर
कामना-असर से है मृत्यु-डर, उपासना प्रभु की नित्यकर
प्रभु प्रेरणा देते हर समय, ध्यान प्रेरणाओं पे धर ॥
ज्ञानी-मूर्ख पर...

ईश्वर प्यारा कामना रहित है, धीर अभय है और अमृत है
आनन्द-धन है ईश्वर, रस से वो तृप्त है
रस चूसता है आत्मा, रहता अतृप है
प्रभु के रस तो पा, साधक पाए प्रभा
ओइम्-रस को पीके भक्त, पाता है आनन्द का असर ॥
ज्ञानी-मूर्ख पर...

माता शिशु को दूध पिलाती, इक स्तन से दूजे पर लाती
रोता अधीर बालक लालसा है मन में
जीवभोग हेतु लगा इस देह-स्तन से
स्नेह से भरी जगदम्बा, एक देह से हटा के
दूजे देह में जनाती है सत्वर ॥
ज्ञानी-मूर्ख पर...

सुख सामग्री नाना तरह की, दे अनुभूति दुःख या भय की
मन में यदि भय हो, मिलता न आनन्द
तेरे उपासक तो रहते हैं सानन्द
न्यूनता नहीं, ईश में कभी
आत्मा जो कामना रहित है, उसे मृत्यु का नहीं है भय ॥
ज्ञानी-मूर्ख पर...

३. सुरीली झाँकी

तर्ज़ : *वार मुगिले मड्यम*

प्र. सोमदेववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्

साम. ५१४, ७६७, ऋ.९.१०७.१२

प्यार मुझे तुमसे, चितचोर प्रभु मेरे
ओ मेरे मित्र प्यारे, दर्श दे।
तरसीं आँखें तुझको झाँके
मधुर तान तेरी सुना दे, कान तरसें ॥ प्यार...
सा नी पमनी प ग ऽ आ ऽऽ
मूर्ति हो सुरमय रस की, स्नेहस्वरूप तुम हो मेरे
मिलती है तृप्ति हृदय को, संग रह के प्रभु तेरे
हर रंग में दीखे तेरा रंग
हर लय आलाप में झूमे मन, झूमे हरख से ॥
वाह! वाह! वाह! वाह! ॥ प्यार मुझे...
अंग अंग मेरा पुलकित, करे महत्ता तेरी स्वीकृत
मन भी आश्चर्य चकित हो, गाए महिमा के गीत
तेरी लीला न्यारी प्रियतम, अब नाच उठा मेरा मन
तेरे प्रणय में ॥ वाह! वाह! वाह! वाह! प्यार...
तनू बनी-बारह दरी-सी, उसकी हर एक सी खिड़की
तेरे दर्शन की पिपासु, आँखें तरसी दर्शक की
मैं कहता हूँ प्रभु विनय से, तू बस जा प्रीतम हृदय के
इन नैनों में, वाह! वाह! वाह! वाह! ॥ प्यार...
मेघ बन बरसे चहुँ ओर, नाच उठा मन का मोर
नृत्य की सुन्दर थिरकन, देह बना नृत्य विनोद
हुई तृप्ति, मिल गया वर विशेष
सींचा हृदय मेरा हृदयेश, निजवारिद से। (पर्जन्य से)
वाह! वाह! वाह! वाह! प्यार...
नाद था कितना मनोहर, प्रभु प्रथित ललित मोहन
धर्म ने शब्द का रूप, दे दिया, कर लिया धारण
उपदेश अनुत्तम जब सुना
उन्मेश हृदय का हुआ दूना, श्रुति श्रवण से ॥
वाह! वाह! वाह! वाह! ॥ प्यारा...

मैं तो चुप्पी साधे था, तुम केवल बोल रहे थे
तृप्त हुए कनरस कर्ण, नैनों के सम्मुख तुम थे
अन्धकार में सूर्य दिखाई दिया
विचित्र प्रभात समुदित हुआ तव दर्श से ॥
वाह! वाह! वाह! वाह! ॥ प्यार...
दे रहा गान सुनाई, दर्श मिला नैन-भी हरखे
आँखों की पुतली में अब, सूर्य बनके तुम चमके
कहाँ जाऊँ–तुमको ढूँढ़ने
बसे नख शिख हृद अङ्ग अङ्ग में, सुर सुभग के
वाह! वाह! वाह! वाह! ॥ प्यारा...

4. कर्तव्य की भावना

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः महि द्युक्षतमो मदः ॥

साम. ५७८, ६१२

तर्ज : *कुञ्जनेरम्, कुञ्जनेरम् कुञ्जपेत कोड़ादा*

मन मेरे मस्ताना बन, छाए दीवानापन
अतितीव्र कर ले तू, कर्तव्य की भावना
डिगना नहीं पथिक तू, अपने कर्तव्य पथ से
कर्तव्य पालन का छा जाए तुझको नशा ॥ मन मेरे...
दुःख दर्द उठा कष्ट कर सहन, मेरे मन रसीले,
आत्मत्याग से पालन कर ले तू कर्तव्य अकेले
पहले तो धन का था लोभ, अब धन लुटाने का शौक
पहले तो यश का था जोश, अब सत्य हेतु लगी दौड़
अब हमारा तो परमेश्वर ही धन-धाम है सच्चा ॥ मन मेरे...
ईश्वर की दृष्टि में जो यश मिले सच्चा यश है वही
प्रभु ओर आत्मा का प्रस्थान सफलता है सही
मन जा तू ईश की ओर उसके बिना ना कोई ठोर
जब बाँधी प्रभु से डोर, मस्ती में झूमा मनमोर
इक मस्ती है, नित आनन्द है, बस बेखबर हो चला ॥ मन मेरे...
मेरे प्यारे मन मस्ताना तू बन प्रभु में ही खोजा
ये दीवानापन करता है मिलन आनन्द क्यों ना होगा
मस्ती कर्तव्य की लेले, सदाचार में क्यों ना खेले
मस्ती की बनाने मूरत प्रभु पहुँचा मुझसे पहले
आनन्दमय है रसमय तू, दोनों ही दे सदा ॥ मन मेरे...

5. कामधेनु

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद्देवेषु हरयः
विचिदश्नानां इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः

ऋ. ९.७९.१ साम. ५५५

तर्जः *साधो देखो जग बौराना (कबीर)*

प्रभुजी! धन्य हुआ यहाँ आना,
युग युगान्तरों तक बौराए, अब कहाँ हमें समझाना?

बहिर्मुखी, अन्तर्मुख हो गईं सु प्रवृत्तियाँ सारी
आत्म-अनात्म का भेद भी समझा मिल सिद्धियाँ प्यारी
दौड़ धूप भी छूटी अनात्म की निज स्वरूप जब जाना ॥ प्रभुजी...
फँसे थे हम कितने प्रकृति में ज्ञान न था आत्मा का
ज्ञेय वस्तुएँ जानते-जानते ज्ञान हुआ ज्ञाता का
जन्मो-जन्म से चक्कर खाए अब निस्तार है पाना ॥ प्रभुजी...
यज्ञरूप हो गई क्रियाएँ बना शरीर वेदी सा
इन्द्रियाँ बन गई देव हमारी, अणु अणु देव ही दीखा
ज्योतिर्मय की ज्योति पाके आत्मा को है प्रगटाना ॥ प्रभुजी...
ग्रह-उपग्रह गति कर रहे, दौड़ती वायु सरपट
कल कल नदियाँ बही जा रही अणु-अणु घूमे सर्वत
यही तो है मनोवृत्ति यज्ञ की, यज्ञ को ही अपनाना ॥ प्रभुजी...
दान-द्युति दाता की पाकर बने लोक भी द्युलोक
समाँ बँध गया अजब अपूर्व सा खिले हैं ज्ञान व ज्योत
किरणें बनी तन्त्री के तार सी और गुञ्जिन हुआ गाना ॥ प्रभुजी...
छूमन्तर हो गई कृपणता, परोपकारी मन जागा
परोपकार की यज्ञशाला से स्वार्थ निकल कर भागा
लिप्सा भोग आलस्य ईर्ष्या का टूटा ताना बाना ॥ प्रभुजी...
परोपकार, निष्काम कर्म, और यज्ञरूप है ये लोक
करे प्रेरणा किसको, यहाँ पर ना है प्रमाद ना शोक
सन्तुष्टि समृद्धि सिद्धि का, भर गया ख्यात-खज़ाना ॥ प्रभुजी...
स्वयं कामधेनु है इच्छा शुभसंकल्प में सिद्धि
किए कर्म अपना फल लाते, त्वायें सुकर्म समृद्धि
सही प्रार्थना करो प्रभु से, फल प्राओ मनमाना ॥ प्रभुजी...

6. अनन्त फाग

एष स्य ते मधुना इन्द्र सोमो। वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः ॥
सहस्त्र दाः शतदा भूरिदावा। शश्वत्तम बर्हिरावाज्यस्थात्

साम. ५३१, ऋ. ६.८६.४

तर्ज : हवा में मन डोले

फागुन मन डोले मचलकर बोले
होली है सोमरस की आनन्द क्यों ना घोले
हवाएँ और नदी नाले खड़े पिचकारियाँ भर के(2)
पेड़ फल फूल पौधे पत्ते खेलें फाग और हरखें
घटाएँ काली काली बरसने वाली
धरा पे हौले हौले ॥ होली है...
जो आना है तो आ जाओ भरी पिचकारियाँ लेकर(2)
बहारें बन के बरसेंगी ये बून्दनियाँ आनन्द देकर
है लम्बी पिचकारी तो खेलेंगे खिलाड़ी
तू साथियों का हो ले ॥ फागुन ॥
सांसारिक खेल तो सम्पत्ति वाले खेल सकते हैं
खुले हाथों से अन्न बल ज्ञान दे के दानी बनते हैं
दे दान की होली ना देके कभी तोली
हृदय को रखें खोले ॥ फागुन ॥
तू नन्दन वन में होगा जब हृदय सूखा खिलेगा तब
अनन्त वसन्त ही वसन्त रहेगी हरियाली अनवरत
भला जो करे दानी दे तृप्ति कल्याणी
स्वयं भी तृप्त हो लें ॥ फागुन ॥
मिली इक यज्ञ की कौड़ी, न अरबों रुपयों से थोड़ी
सांसारिक यज्ञ है विस्तृत, है जैसे विस्तृत अम्बोधि
बना ले दिल दरिया न व्यर्थ बीते घड़ियाँ
हे इन्द्रः याज्ञिक हो ले ॥ होली है ॥

7. सूखे काठ

अर्षा सोम द्युत्तमोऽडमि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्यौनौ वनेष्वा ॥

साम. ५०३, ७७४ ऋ. ७.६५.१९

तर्ज : *काली काली रात–भू.बि.न*

सूखा काठ सा हर इक अङ्ग सताए (2)
क्यों न रस टपकाए (2)
कभी काठ के कलशों में सरस रस भरा था
मधुर ध्वनि उठती जीवन रस में रसा था
अब गूँज ना सुनाए, ॥ सूखा काठ...
मेरी देह की अर्घट में लोटे लगे हैं
पर वे तो चुप्पी साधे औधें पड़े हैं।
ना अमृत छलकाए ॥ सूखा काठ...
मैने जगाया है पर जागा नहीं ये मन
ऊंजड़ अन्धेरी रातें और हुईं दुर्गम
तो कैसे चैन पाएँ ॥ सूखा काठ...
सूखा काठ सा हर अङ्ग सूखा काठ सातनमन
सूखा काठ सा जीवन जिसमें ना समर्पण
प्रभु कैसे नज़र आए ॥ सूखा काठ...
सूखे काठ में दुरित के दीपक लगे हैं
तिलतिल करके काठ को खाए जा रहे हैं
है अन्त हाय! हाय। सूखा काठ...
आसवारी सी मीठी तान हृदय में
स्तोत्र भक्तिरस का जागे भक्त के प्रणय में
भक्त को भक्ति भाए? सूखा काठ...
मेरी आँखों के तारे प्यारे परमेश्वर
दुरित हरके लहर जगा दो मेरे मन के भीतर
रसीला रस रसाए ॥ सूखा काठ...

8. बाज घोंसले में

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी। राजेव दस्मो अभिगा यचिक्रदत् ॥
पुनानो वारमत्येष्यक्यय थ्धं। श्येनो न योनि धृतवन्तमासवत् ॥

साम. ५६२, १६१६, ऋ. ७.७२.१

तर्ज : यमुनायम सरयम पुरमी संगमम्

अरूणिभा का आँचल, ओढ़ रहा धरणि तल
पत्ते हरित हुए रक्त सम, हर्षित हो रहा पक्षी-दल
हल्की गुलाबी हुई बदरिया, श्वेत थी या वो श्यामल ॥
अरूणिमा...

बिछ गई जल पे लाल से चादर सी, हुई देख उषा को प्रकृति प्रसन्न
कौन सा ऐसा भावुक हृदय है, मुग्ध ना होगा देख के प्रबन्ध
तेज बरस रहा हितु हृदयहारी, कैसे मनहर स्नेहित पल ॥ अरूणिमा...
गोद में उषा की, लिया सूर्य ने जन्म, अरुण वर्ण से छाया ये दिग्दिगन्त
सूर्य-शिशु कह रहा है वाचाल होकर, उद्बुद्ध प्रजाओं का हुआ हूँ मैं सुम्न
रस पूर्ण भाषा में दिवस्पति ईश्वर कहते हैं सूर्यात्मा हूँ मैं प्रबल ॥
अरूणिमा...

हो रही रोमाञ्चित सारी ही सृष्टि वृक्ष पौधे तिनके घास हो रहे, प्रसन्न
प्रेम-प्रवाह निरन्तर बहता जगत में सूर्य चन्द्र तारे नियमों में बन्ध
चलती हवाएँ बहती हैं लहरें फैलती है तीर जैसी किरणें विमल ॥
अरूणिमा...

स्वास्थ्य सुख पाया किरणों की माया थाम लिया किरणों का सबने दामन
रवि की किरणों से छाई हरियाली जंगल में मंगल क्या होता है कम
वनस्पति औषधियाँ खिलते सुमन खड़े वृक्ष लहलहाते लाद फल ॥
अरूणिमा...

ये किस राजन् का विस्तृत नियम है, इसमें आदित्य प्रभु के होते दर्शन
छाई अरुणाई उसके आदेश से चुपके-चुपके व्याप्त हुआ करता भरण
सारी शक्तियों को सम्य बना के करता है राजन् विश्व मङ्गल ॥
अरूणिमा...

दिवस्पति=सूर्य, उद्बुद्ध-चेतना युक्त, वाचाल=बोलने में चतुर, अरुणिमा=उषा, धरणी=धरती, सुम्न-प्रसाद, बन्ध=सम्पूर्ण, भरण=पालन

9. तू धर्म से प्रकट हो

जातः परेण धर्मणा यत् सवृद्भिः सहाभुवः।
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धामाता मनुः कवि ॥

साम. ८०

तर्जः तामर नूलिन पिलैन मेडिन तुट्ट विलिक्युम-

जाकर देखा वेद-सुपथ पर जागा अन्तर्मन
लग गया धारणा ध्यान समाधि में ही मेरा मन
मैने से जाना कि तू ही धर्माधार है
तेरे शासन में चलता ये संसार है
इसलिए पाते तेरी शरण
और करते हैं जीवन में धर्मा-चरण ॥ जाकर देखा...
वाणियाँ उसकी तो वेद बोले
आत्माओं के अन्तर्पट वो खोले
सत्य अहिंसा संयम तप के
वेदों ने सारे रहस्य खोले
वेद-श्रुति-रस में मदमस्त होके
क्यों ना तू हो जाए सम्पन्न ॥ हो ऽऽऽ जाकर देखा...
ईश्वर की चाहत से राहत मिली
श्रावक बना खिल गई हृदय-कली
चिन्तन मनन निदिध्यासन से
सूक्ष्मदर्शी साधक बन गए कवि
दृष्टा मैं हूँ किन्तु दृष्टि है ईश्वर
कण कणमें हैं उसके दर्शन ॥ हो ऽऽ जाकर देखा...
ज्ञान ज्योति से करो अग्रणी
करते संरक्षण पिता हो तुम्हीं
श्रद्धा बनी माता ममतामयी
सत्य के पथ पर वो लेके चली
'ना वेदविन्मनुते तं बृहन्तम्'
ऐसा ही मानूँ मैं भगवन् ॥ हो ऽऽ जाकर देखा...

ना वेद विन्मनुते तं बृहन्तम्=जो वेदज्ञ नहीं वो उसे जानता नहीं, श्रावक=श्रोता, छात्र, वेदश्रुति=वेद का सुनना या ज्ञान होना, कवि=विचारवान, प्रतिभाशाली, अग्रणी=आगे ले जाने वाला, संरक्षण=पूर्ण रक्षा

10. अन्न का छकड़ा

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो, रथो न वाज ᳲ संनिषन्नयासीत्।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा स ᳲ शिशानो विश्वा वसु हस्तयो रादधानः ॥

साम. ५३६ ऋग. ७.७०.१

तर्जः ये हौसला कैसे झुके, ये आरज़ू...

ये वीर तो कैसे झुकें, युद्ध-स्थली में वो तो डटें,
वीरता भर आएगी, मुश्किल टल जाएगी
हिम्मत बढ़ जाएगी ॥ हो ऽऽऽ
व्याकुल भूख से दीन रहते, अन्न छकड़ों पे वो टूट पड़ते
सुस्तों को पृथ्वी पे भोग दिखे, पर वीर संग्राम इससे लड़ें
बाँटें जीवन सामग्री, बन सैनिक अग्रणी
जीवन करते विजयी ॥ हो ऽऽऽ
उनके हथियारों में पूर्ण विवेक, सत्य अहिंसा पे चलना ही है
संयम-दया का लगा अभिषेक, वीरों का माथा चमकना ही है
भावना जग जाएगी, मेहनत रंग लाएगी
ज्योतियाँ बढ़ जाएँगी ॥ हो ऽऽऽ
पृथ्वी आकाश को देखें अगर, नक्शे-कदम उनके चलना ही है
युद्ध से मेघ-बिजुरियाँ भरें, फेनिल लहर को उमड़ना ही है
नदियाँ चट्टानों से युद्धकर आगे बढ़े, युद्धकर आगे बढ़े
साँय साँय पवन करे ॥ हो ऽऽऽ
वीर को संयम सदाचार से, भार भोगों का दलना ही है
जर्जित-जवान क्या रक्षा करें?
खुद वो निहत्था कंगला ही है
जीने का तब मज़ा, जीवन भर युद्ध लड़ा
विजयी सेहरा बँधा ॥ हो ऽऽऽ
वीर वो सच्चा जाए जिधर, स्फूर्ती सबों में भरना ही है
निर्बल दीन दुःखी है अगर, दुःख कष्ट उनके हरना ही है
करुणा रंग लाएगी, ग्लानियाँ ढ़ल जाएँगी
सुबहा फिर आएगी ॥ हो ऽऽऽ

11. चितचोर का चमत्कार

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥

साम ५६६, ५७४ ऋ.७.१०६.१ (७.१०६.१)

तर्जः निला विंडी तूखल तुडुन्न बोले

प्रभु की कृपाएँ आनन्द घोलें
हैं ज्योतियाँ उसकी जो साथ होलें (2) हे हे ऽऽऽ
अनुभूतियाँ रस की निःशब्द बनकर के
आत्मा को अमृत पिला के डोले
ना जाने काया पलट कब होले? ॥ प्रभु की...
मानो अचानक स्वर्ग आध्यात्मिक
मिल गया इस शुष्क जीवन में
आनन्द अलौकिक आत्मा की तृप्ति का
देता है शान्ति ही भीतर से
इस सोम रस के आगे सब रस हैं फीके
ऐसे सरस रस को काहे छोड़े? ॥ प्रभु की...
बालक को थकते हुए देख माताही
छाती से उसको लगाए स्वयं
ऐसे ही बल लगता भक्तों के सवनों में
ईश-कृपा का होता है वर्षण
ये सोम का सोता बह उठने का होता
ये सोम ही अन्तर्पट को खोले ॥ प्रभु की...
इन्द्र के पास था ऐश्वर्य अज्ञात
और थी विभूति जो थी तिरोहित
अभ्यास, वैराग्य से, लगे उठने
आत्मा के आवरण अनवस्थित
ये धर्म स्वरूप 'वृषा' बना आत्मा
बदली दिशाएँ अब हौले हौले ॥ प्रभु की...

पहले तो आत्मा का पात्र था कच्चा, यज्ञ की आग में पकता रहा
झोली युगों से जो खाली थी अब तक, ईश-कृपा उसमें भरता रहा
रत्न ही रत्न हुए दृष्टिगोचर, भर दिए प्रभु ने रत्नों से झोले

सवन=यज्ञस्थान, तिरोहित=छिपा हुआ, अन्तर्हित, वृषा=बरसने वाला, अनवस्थित=चञ्चल, अशांत

12. सूर्य का जन्म

अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः।
हिन्वानो मानुषीरपः ॥

साम. ४७३, १२१६ ऋ.७.६२.७

तर्जः *सखी री नहीं आए–*

आती है नित नई सुनहरी भोर,
डाल पे कोयल कुहु कुहु गाए
और पपीहरा शोर मचाए, घर आँगन उजियारा छाए
नाच उठे मन की लहरी, बनी भोर बड़ी चित्तचोर
आती है...

ऋषियों ने भी पूर्व सृष्टि में, सूर्य का, किया था शुभदर्शन
बजी हृदय की तार तरंगे, सुनी किरणों की सरगम
भरा रहा संजीवन रस का, हृदय का हर इक कोर
आती है...

कहाँ गया संजीवन रस, लगता था जो सुहाना
हरसू देखी शान्त प्रकृति, क्यूँ है अशान्त ज़माना?
क्यों मानव के मन में जागे, ईर्ष्या द्वेष और क्रोध?
आती है...

ऐ सूरज की किरणों, तुमसे, क्यों वंञ्चित तेरे अपने?
जग में आके भूल गए, सब उजियारी रस्में
आया ना तो चारु चुम्बन, हृदय कली की ओर
आती है...

उदित हुआ है आज तो फिरसे, सुरज नया सुहाना
किरणें छाई छिड़ गया मानो, सुर संगीत-तराना
हरियाली बिछ गई धरा पे, गई लहर सी दौड़ ॥ आती है...
मानो सोम का जन्म हुआ है, खुला रसों का ख़ज़ाना
बरसा पावन धर्म मेघ-रस, जग हुआ प्रेम-दीवाना
प्रजा मानवीय भक्ति-रस में हो गई आत्म विभोर ॥ आती है...

रस्में=रीति रिवाज, चारु=मनोहर, सुन्दर

13. विद्वान भगवान के सख्य हेतु संयम करता है

विभ्राज्जयोतिषा स्वष! रगच्छो रोचनं दिवः।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥

ऋ. ७.७८.३ साम. १०२७

तर्जः काटू चिम्बग चोटनिन्न काटी रिन्न पो

चारु चिन्तन, मनस्विन मन, निदिध्यासन दे
मुझे स्वस्ति संयम दे, आनन्दमय कर दे
प्रभु दिव्य दर्शन दे ॥ चारु चिन्तन...
ज्ञान की किरणों से हृदय भर दे
स्वप्रकाश है तू, ज्योतिर्मय कर दे
है आनन्दधन संयमी तू, जिससे तू दाता बना
पूजता हूँ इसलिए तुझ दाता को
मुझ को तू कर काबिल
मुझे स्वस्ति संयम दे ॥ चारु चिन्तन...
मुझे स्वस्ति संयम दे आनन्दमय कर दे ॥
प्रभु दिव्य दर्शन...
वेद उपदेशक, पूर्ण संयम के
पाया ना आनन्द भोग परायण ने
मनसा वाचा कर्मणा से
पराङ्मुख रहूँ भोग से
रहूँ उत्तुङ्ग, पालूँ संयम को
रहे शुद्ध चिन्तन
मुझे स्वस्ति संयम दे
आनन्दमय कर दे
चारु चिन्त, मनस्विन मन, निदिध्यासन दे
मुझे स्वस्ति संयम दे आनन्दमय कर दे
प्रभु दिव्य दर्शन दे ॥
आऽऽऽ

चारु=सुन्दर, मनमोहक, मनस्विन=उच्च विचारवाला, सुधी, निदिध्यासन=बारम्बार ईश्वर का ध्यान, स्वस्तिं=कल्याणकारी, पराङ्मुख=विमुख, निवृत्त, उत्तुङ्ग=अत्यन्त ऊँचा

14. ज्ञानी ही यज्ञ के मुख्य धाम को जानते हैं

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं मदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्ता ॥

अथर्व. २०.७१.२

तर्ज : गान्द माडुन्या, कार्य मोड्यु, मारवीय मरमो, कम्पोले

झूठ छोड़ दे, सत्य बोल रे
ऋत में वास कर ले, ओ भोले!
ज्ञान-कर्म में, यज्ञ घोल ले और उपासना के, झूल-झूले
अध-रिपु क्षारण कर ही ले, पाप तो सुख ना दे
मधुरस आनन्द ले ही ले, सुचरित जीवन जी ले
कल्याण सब का मन में तू चाहे
क्यों ना यज्ञ की राह अपनाए
है यज्ञ ही उत्तम, परमात्मा जिसका धाम है
जो पाप हटाता, यज्ञात्मा निष्काम है
पल पल नियम, प्रभु पालता, सृष्टि को उसमें ढालता
हितकर मिली, धित धरा, उर्वरा
पाप कुटिलता गाठें लगाए
भावना यज्ञ की सरलता लाए
ऋतज्ञानी बन जा, ऋतगामी सदा महान है
आचार सरलता व्यवहार कुशलता प्राण है
ऋत का मनन सत्याचरण
ज्ञानी-सुधी, करते यजन
तम को हटा, ऐ युवा! आत्मा!
अङ्गिरा, फिर आत्मा बन जाए
आनन्दधन प्रभु से रस पाएँ
अङ्ग अङ्ग में जिसके परमेश्वर विद्यमान है
मेधावी वही है मधुरस ही जिसका खान है
यज बनो, प्रभु रस चखो
जीवन मिला, सार्थक करो
गाओ ऋचा, पाओ प्रभा, ऐ मना!

धित=स्थापित, उर्वरा=उपजाऊ, ऋत=सृष्टि के नियम, अघरिपु=पाप के शत्रु, यज्ञात्मा=यज्ञ की आत्मा, परमेश्वर, ऋत=सृष्टि नियम, कुटिलता=टेढ़ापन, अङ्गिरा=अंग अंग में रस भरने वाला, सुधी=बुद्धिमान, यजन=यज्ञ करना, खान=भोजन, क्षारण=भस्म करना

15. हरियाली की घोड़ी पर सवार

सोम उष्वाणा:सोतृभिर धिष्णु भिरवीनाम्
अवश्येन् हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारिया सा.
डोलोमेरे जियरा, (2)
गाओ गीतों से, प्रभु की महिमा डोलो मेरे....
डोलो, मेरे जियरा (2)
परम गवैए, तेरे मुख के (2)
दो शब्दों में बहार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
मेरी लय में, लय प्रीतम की (2)
सुनता हूँ कई बार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
सूखे होठों, पे आई तरावट (2)
तुझसे स्नेहागार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
चेतना-भावना के ऊँचे शिखर पर(2)
यजमानों के साथ ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
प्रेम की हरी भरी, धार बहाई(2)
झूला तू हरबार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
झूमती-झामती धार मस्तानी (2)
इक नहीं धार हज़ार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...
डोलो मेरे जियरा (2)
बहते जीवन की, हरी भरी घोड़ी (2)
बाँकुरा उसपे सवार ॥ वाह प्रीतम डोलो मेरे...

जियरा=जीव, आत्मा, स्नेहगार=स्नेह का भंडार, यजमान=यज्ञ में भाग लेने वाला, बाँकुरा=चतुर,

16. पवित्र फाग

अस्मभ्यम त्वा वसुविदमभिवाणी रनूषत।
गोभिष्ट्रे वर्णमभितासयामसि ॥

साम. ५६५ ऋ.७.१०४.४

Juke Box lata Ki/2,5/2

तर्जः चन्दा जा चन्दा जा रे जा रे

ला ला ला ला ला ला.....
मनवा जा मनवा जा रे जा रे (2)
काहे आया है अकेला
कहाँ गायक है अलबेला
आ गवैए को भी संग ले के आ

मनवा जा...

आ तुझको पहचान बता दूँ तो वो लगता है कैसा?
सच्चे धन का देने वाला। वो प्रभु एक ही ऐसा!
ऐसे याज्ञिक को हृदय में बसा लूँ
खुद को यज्ञ का भागी बना लूँ
उसकी सारी विभूतियाँ हैं ज्योति प्रदा ॥

मनवा जा...

भाव भरे हैं तेरे ही रंग के, आ 'प्रभु' खेलें होली
रग रग में ऐसे बस जाए, बोलूँ तेरी बोली
धर्म पालूँ तो देना गवाही
प्रार्थना भक्ति स्तुति का हूँ राही
अमृत धर्म प्रचार का खूब पिला ॥

मनवा जा...

अलबेला=अनुपम, अनोखा, अनूठा, बेजोड़, छैला, सुन्दर, याज्ञिक=यज्ञ करने वाला (ईश्वर), विभूतियाँ=अलौकिक शक्तियाँ, प्रभुत्व, ज्योति प्रदा=ज्योति फैलाने वाली, 'वसु'=सच्चे धन धान्य देनेवाला, गवाही=साक्षी प्रमाण, गवैया=गानेवाला, गायक

17. युवराज

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तम छं हविः।
दधन्वान यो नयो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥

ऋ. ७.१०७.१ साम. ५१२, १३१३

तर्जः मेरी बीना तुम बिन रो ये

मेरी देवपुरी को सजाओ (2)
देवो! देवो! देवो!
मेरी देवपुरी को सजाओ ॥
विश्व के राजा इन्द्र-नगरिया,
राजकुमार पधारे,
तुम अभिषेक अनूप रसों से,
कर दो मिलकर सारे,
और ताज उसे पहनाओ ॥
देवो! देवो! देवो!
मेरी देवपुरी को सजाओ
सोम रसों के बादल जैसे,पर्वत को नहलाए
सोम की बरखा हृदय पे बरसे, ध्यान की डुबकी लगाए
हाय! कैसा आनन्द छाए।
देवो! देवो! देवो
मेरी देव पुरी को सजाओ ॥
भोग विलास की ना ये पदवी, आत्म-त्याग की वेदी
यज्ञिय राजकुमार ने इसको राष्ट्र हितों में दे दी
हवि उत्तम इसे बनाओ।
देवो! देवो! देवो!
मेरी देवपुरी को सजाओ ॥

18. आओ हे आत्मन् आओ–

क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः
अलर्षि युध्म खजकृत पुरन्दर प्रगायत्रा अगासिषुः ॥

साम. २७१, ऋ ८.१०.१

तर्ज़ : सांझ भई अब आजा

देर भई धर आजा रे राजा (2)
दिन तो डूबा डूब ना जाए
आस का सूरज आजा रे ॥ देर भई...

राह रोकती है ना समझी जूझें हम किन किन से
राग द्वेष दम्भ लग गए पीछे पाप जुड़े तन मन से
मति भरमाई क्या बतलाएँ, तू ही ये बतला जा रे ॥ देर भई...

सुनना चाहूँ आहट तेरी दुर्दशा सुनेपन की
प्राण इन्दियाँ मन बुद्धि को, ढूँढ़े है तुझ साजन की
काँपती पलकें बाट निहारें (2) आ इस राष्ट्र के राजा रे ॥
देर भई...

इन असुरों को मार भगाओ लोहा लो चुन-चुन के
देह-राज्य का करो नियन्त्रण कष्ट व्यथा सुन सुन के
छोड़ ना जाना यूँ अन्जाना हे आत्मन्। करो बादारे ॥ ॥ देर भई...

यूँ तो हम आशावादी हैं और महत्वाकांक्षी
किन्तु तुम बिन हम सुध बिन हैं बात है बिल्कुल साँची
सुन उद्बोधक गीत हमारे सुन सुन के अब आजा रे ॥ देर भई...

दम्भ=घमंड, साजन=प्यारा (आत्मा), आशावादी=इच्छुक, महत्वाकांक्षी=ऊँची अभिलाषा, अन्जाना अपरिचित, सुधबिन=चेतना रहित, अचेतन, उद्बोधक=जागृत करने वाले

19. लचकीला शिष्य

उपोषु जातमप्तुरं गोमिर्मङ्ग परिष्कृतम्।
इन्दुं देवा अयासिषुः ऋ ७.६१.१३ साम. ४१६, १६२

तर्ज: काट्रिल मुड़ी उलियाउसया

अप्रतिम! शिष्टजन आओ, बैठे संग
शालीन! तुमसे यूँ विनय पाएँ हम
छोड़ें मद ईर्ष्या द्वेष और क्रोध
आए ना जीवन में अवरोध
होवे मन स्वभाव में मिठास
रहे मन में ईश्वर का वास
मिले आदेशों से ही प्रकाश
होंवे मनभाव विनीत भी साथ ॥
अप्रतिम! शिष्टजन...

इस विनय के बिन विद्या भी रूखी रसहीन है
दूर है जीवन अमृत से, समझ लो वो दीन है
चरणों में शिष्ट जनों के, शिष्य तो विनीत हैं
बार-बार गुरु की सेवा में वो अनुनीत है
तृप्त नहीं होता फिर भी, करता वो कर्तव्य-वर्धन
जी चाहता है उसका और भी करे कुछ अर्पण
त्यागता क्रोध द्वेष अभिमान और विनय बनता प्रेम-प्रमाण
सौम्यता का बनता प्रतिमान, मिलता जो भी देता प्रतिदान
अप्रतिम! शिष्टजन...

है नहीं वो विद्या जो के, इस विनय से दूर है
संग जो शिष्टों का करते, उन सब में नूर है
उपदेशामृत से उनके शिष्य सुघड़ बनते हैं
उनके ही शिष्यों में भरती, कुलीनता प्रचूर है
सूखा काठ झुक नहीं सकता, लचक के अभाव से
यूँ घमण्ड दूर ना होता, हठ के प्रभाव से
किन्तु जल में कोमलता है, हर पात्र में ढलता है
जीवन का नाम लचक है, घट में जो सरसता है

अप्रतिम=अनुपम, अनोखा, शिष्टजन=शिष्टाचार वाले लोग, शालीन=अच्छे आचार-विचार वाला, सभ्य, विनय=नम्रता, अवरोध=रूकावट, वाधा, विनीत=विन्रम, लचक=झुकाव, कोमलता, सरसना=रस में उमड़ना, प्रतिमान=समानता प्रतिबिम्बि, अनुनीत=विनय प्राप्त प्रतिदान=प्राप्त हुआ, सौम्यता=सलता, नूर=प्रभा, चमक, सुघड़=कुशल, प्रवीण, प्रचूर=अत्याधक।

20. वायु के घोड़े पर सवार

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः वायुमारोह धर्मणा ॥
सा.४८३, ऋ.१२३५

तर्ज : चा जाड़ी आड़ी यू रंग दी

आत्मा हमारी तू रंग दे, हरपल समय में तू संग दे
मस्ती में ये मन झूम उठे, थिरकन उठे अङ्ग अङ्ग से ॥ आत्मा हमारी...
ईश कृपा का ये अमृत है जिसमें सांसारिक रस की तो उपमा नहीं
ईश की महिमा का दर्शन ही सचमुच अनुभूतियाँ हैं अलौकिक सही
बह निकला एक बार ये रस रुकता नहीं
करता हूँ कोई काम स्रोत बहता वहीं
जीवन रंगा प्रभु तूने ऋजु रंग में ॥ आत्मा हमारी...
खाना पीना खेलना कूदना भी हो गया है सब उपासना रूप
हर काम में मस्ती सर पे सवार है जाप हृदय में है छाया अटूट
बिन बाधा चिन्तन प्रभु का होता अपने आप
खाते पीते उठते बैठते मन करता प्रभु-जाप
छा गया है नशा प्राण अङ्ग अङ्ग में ॥ आत्मा हमारी...
ये तेरा धर्म है अब तू हवा के घोड़े पे चढ़के प्रभु-प्रेम धर
ये जो नशा तेरी आत्मेन्द्रियों में है धर्मयात्रा को अपरिमित तू कर
निज आत्माह्लाद को सब हृदयों में भर,
अपनी मस्ती से अब सबको मस्ताना कर
नभ धरणी पे गीतों का रंग भर दे ॥ आत्मा हमारी...

21. प्रेरक शक्ति

ॐ ओ३म् भुर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य, भर्गो देवस्य धीमहि-
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ऋ. ३.६२.१०

तर्जः अल्ला तेरो नाम ईश्वर तेरो नाम

सच्चिदानन्द करो कल्याण, सद्बुद्धि प्रेरक भगवान ॥
सकल जगत के पालन हारे, दुःख सागर से तारन हारे
दे सुख, ले चल आनन्द धाम ॥ सद्बुद्धि...
ईर्ष्या द्वेष से दूर तू कर दे, प्रेम अमोल हृदय में भर दे
हर ले काम क्रोध अभिमान ॥ सद्बुद्धि...
कर्म से पहले कर्ज है तेरा, धर्म धरूँ पर ध्यान हो तेरा
दिव्य मनोरथ का दे दान ॥ सद्बुद्धि...
प्रेरणा शक्ति आपकी अद्भुत, वाणी-हृदय में फैले सर्वत
ओ३म् नाम से भर दो प्राण ॥ सद्बुद्धि...

22. मेरे भजन मेरे दूत हैं

वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः।
हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥

ऋ. १०.४७.७

तर्ज़—राकिली तन मली मरयुम

भक्ति भरे, दूत-भजन, भेजे तुझको भगवन्
स्तुति समूह के सुमत-सुमन रख दिए तेरे चरनन
संदेश के रथ पर बैठे, ये दूत कर रहे प्रसरण,
दे दो चरणों में आयतन ॥
कृत और करिष्माण कर्मों के दूत बना दो ज्ञानी
धर्म युक्त मनमोहक धन से उन्हें बना दो नामी
प्रणत प्रार्थना प्रार्थी की सुन अपना बना लो भाजन
अतिशय भक्ति भाव संजोये, दूत कर रहे याचन ॥ भक्ति भरे...
आर्य बना के 'इन्द्र' को कर दो, परोपकार परायण
हृदयासन पर आके विराजो भाव भरित सुनो भजन
मनसा वाचा कर्मणा से प्रभु होवे बुद्धि उत्तम
अलख जगा दो हृदय में अपनी हे, प्रभु अलख निरंजन ॥ भक्ति भरे...

स्तुति-समूह=अत्यधिक स्तुतियाँ, सुमत=ज्ञानवान, बुद्धिमान, प्रसरण=आगे बढ़ना, आयतन=आश्रय, सहारा, कृत=किया हुआ, सम्पादित, करिष्माण=करने के लिए उद्यत (तैयार), नामी=प्रसिद्ध, प्रणत=विनय युक्त, भाजन=पात्र, याचन=प्रार्थना, परायण=प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ, भाव भरित=भावों से भरे, अलख जगाना=ईश्वर के नाम की भीख माँगना, इन्द्र=आत्मा

□□□

उनका भजन गायन तथा शास्त्रीय संगीत सुनने का शौक रहा। उनका अधिकतम समय पं. रविशंकर (सितार), उस्ताद अल्ला रक्खा ख़ाँ, अली अकबर ख़ाँ, ग़ज़ल गायिका बेग़म अख़्तर, पं. राम नारायण (सारंगी), थिरकवा महाराज, सामताप्रसाद (तबला), शिवकुमार शर्मा (संतूर), पन्नालाल घोष (बांसुरी) इत्यादि संगीतविज्ञ गुणीजनों को सतत् सुनने में लगा रहा जो आगे चलकर भजन रचना में सहायक बना। मेरी जानकारी के अनुसार वह अभी तक 1000 से भी अधिक वेद मंत्रों के आधार पर 1020 भजन लिख चुके हैं तथा उनकी अधिकतर धुनें भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं।

आर्य समाज के भजनों को सुनकर उनमें भी आध्यात्मिक भजन लिखने का जुनून अंकुरित हुआ। उनके 1000 से अधिक वैदिक ऋचाओं के भावार्थों पर आधारित भजनों को सुनकर उनके गहन स्वाध्याय का पता चलता है। उनके व्यवहार में मैंने उनका 'समर्पण' भाव देखा है। वे अपने बचपन के अनेक मित्रों को नहीं भूलते।

मैं उन्हें अपना मित्र मानता हूँ क्योंकि वे सबकी निष्काम भावना से सहायता करते रहते हैं। उन्होंने वैदिक प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज गांधीधाम (गुजरात) द्वारा संचालित 'जीवन प्रभात' के बच्चों को प्रति वर्ष निःशुल्क शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देने के लिए लगातार 'एक माह' का समय प्रदान करने का संकल्प लिया है। इसी प्रकार वे वैदिक मंत्रों के भावों को संगीत के माध्यम से जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' तथा देश के अन्य गुरुकुलों से सम्पर्क बनाए हुए हैं। उनके कार्यों को अनेक लोगों ने सराहा है। मैं उनकी इस भजनों, **'समर्पण'** की पुस्तक की प्रशंसा किए बग़ैर नहीं रह सकता और आशा करता हूँ कि वेदमंत्रों पर आधारित इस पुस्तक का आर्य जगत पूरा लाभ उठायेगा।

—मदन रहेजा
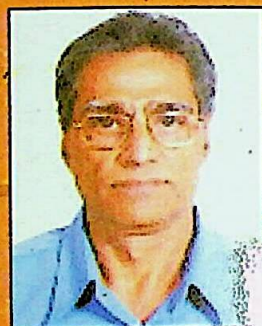
अपने प्रिय मित्र श्री ललित साहनी जैसे व्यक्तित्व का परिचय देते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है क्योंकि वे मेरे पड़ोसी तथा आर्य समाज के ऐसे सदस्य हैं जो अन्याय तथा असत्य के साथ कभी समझौता नहीं करते।

मैं उनकी स्व. माताश्री श्रीमती सुशीला देवी तथा उनके स्व. पिताश्री श्री दीवानचन्द साहनी जी से अनेक वर्षों से परिचित हूँ जो मुम्बई में गोरेगांव में रहते थे। माताजी आर्य समाज के सत्संगों में बड़ी तन्मयता से भजन बोला करती थीं। वे दोनों पक्के आर्य समाजी थे। 'आर्य समाज गोरेगाँव' उनकी ही देन है जिसके भवन का शिलान्यास स्व. लाला ओंकारनाथ आर्य जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था।

श्री ललित साहनी का जन्म 16 मई, 1942 में नासिक शहर में हुआ। उनके कथनानुसार उनकी पढ़ाई में अधिक रुचि नहीं थी किन्तु संगीत में उनका मन लगता था। आध्यात्मिक जीवन में श्री ललित साहनी की धर्मपत्नी श्रीमती सविता का विशेष स्थान है। उनकी दो सुपुत्रियाँ 'नम्रता' और 'अदिति' हैं, दोनों विवाहित हैं। 'अदिति' की सुरीली आवाज़ ललित जी के भजनों को चार चाँद लगा देती हैं जिसे सुनने के लिए 'आर्य जगत्' के लोग उत्सुक रहते हैं। पुत्री 'अदिति' के रंगारंग कार्यक्रमों को सुनने व देखने के लिए देश-विदेश में उनको आमंत्रित किया जाता है जिनका [illegible] उनकी माता श्रीमती सविता साहनी ही करती हैं।

ललित जी की इंटर कॉमर्स तक ही पढ़ाई हुई। बचपन से